

·html , <http://www.geocities.com/ggajendra>
२००४ :
<http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> :

<http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> :
of https://web.archive.org/web/*/videha 258
capture(s) from 2004 to 2016- <http://videha.com/>

२००८ : '२००८'
२००८ : '२००८'
२००८ : '२००८'

<http://www.videha.co.in/> :
" :
- :
: :
: :
: :

(c)२०००-२०२३ :
(since 2000) ISSN 2229-547X
VIDEHA (since 2004) :
Editor: Gajendra Thakur : In respect of

वैदेहाः एजर्नल / : # वैदेहाः एजर्नल
वैदेहाः एजर्नल वैदेहाः एजर्नल वैदेहाः एजर्नल
वैदेहाः एजर्नल वैदेहाः एजर्नल वैदेहाः एजर्नल ०३
३५ वैदेहाः एजर्नल . www::videha::co::in वैदेहाः
वैदेहाः एजर्नल वैदेहाः एजर्नल वैदेहाः एजर्नल

Videha eJournal (link www::videha::co::in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture:: It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture::

The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture:: The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages:: It also features translations of literary works from other languages into Maithili:: It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication::

Font/ Keyboard Source:

<https://fonts::google::com/> ,
<https://github::com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts> , <https://keyman::com/>

These are print-on-demand books, send your queries to editorial::staff::videha@gmail::com:: The eBooks of some of these are available for sale

वि

विदेह ३७६ म अंक १५ अगस्त २०२३ (वर्ष १६ मास १८८ अंक ३७६)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.vidaha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha
e-Learning

Gajendra Thakur



ऐ पौथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पौथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनःप्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , <http://www.geocities.com/ggajendra> आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाई २००४ क पोस्ट <http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> केर रूपमे इंटरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि (किछु दिन लेल <http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*//videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- <http://videha.com/> भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़ल। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे <http://www.videha.co.in/> पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब “भालसरिक गाछ” जालवृत्त 'विदेह'-ई-पत्रिकाक प्रवक्तक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c) २०००- २०२३. विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटेचमेण्टक रूपमें पठा सकैत छथि, संगे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह-ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्ता विदेहसँ नै जुडथु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: <https://fonts.google.com/> ,
<https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts> , <https://keyman.com/>

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are

periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.vidaha@gmail.com)

Vidaha e-Journal: Issue No. 376 at www.vidaha.co.in



समानान्तर परम्पराक विद्यापति- चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)

तिहुअन खेतहि काजि तसु कित्तिवलि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ (कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर (गद्य-पद्य रूपी) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

ॐ ह्यैः शान्तिरन्तरिक्षं ग्वंग शान्तिः

ॐ ह्यैः आदित्यवृद्धिश्च W आदित्यः

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछिः-

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७५ पर टिप्पणी

२.गद्य खण्ड

२.१.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.२.आचार्य रामानंद मंडल- हाल मियां/ जयंत (कौआ)के कथा

२.३.लालदेव कामत-साहित्य अकादमी परेखलनि - पेन ड्राइवमे पृथ्वी केँ/
मखानाक गुण बुझू/ मिथिला में माछ, रोजगारके सर्वसुलभ साधन भय
सकैत अछि/ पानक बड़ेब/ औषधीय गुण मौधमे/ रंगपुरमे जगूक परियास
: एक विश्लेषण

२.४.लालदेव कामत-आर्थिक विपन्नता/ मुंस'क दान

२.५.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-२५)

२.६.नन्द विलास राय-मास्क

२.७.जगदीश प्रसाद मण्डल-घरदेखी

२.८.रबीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)-
धारावाहिक

३.पद्य खण्ड

३.१.बद्रीनाथ राय-तीन टा गीत

३.२.प्रमोद झा 'गोकुल'-छूटल ठाम हेरायल गाम

३.३.राज किशोर मिश्र-सांस्कृतिक क्षरण



१

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं ग्वंशान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिं वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः
शान्तिर्ब्रह्म

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं W शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिं
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्यूलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे,
वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आपः-
जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्यूलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे,
औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति
हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच,
आपः-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

१

ॐ, सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

ॐ, सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिं ग्वंग विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

ए लूमिं W रि श्रुजा रू झा। श्रुजा ठिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने
अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्रशीर्षां पुरुषः सहस्राक्षं
सहस्रपात् ॥ सभूमिं सर्व्वतस्पृत्वा
त्त्वतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्याग्ँ शूद्रो अजायत॥

पद्भ्याग्ँ शूद्रो अजायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❁ (White Florette- innocence and purity)

❁ (Wheel of Dharma)

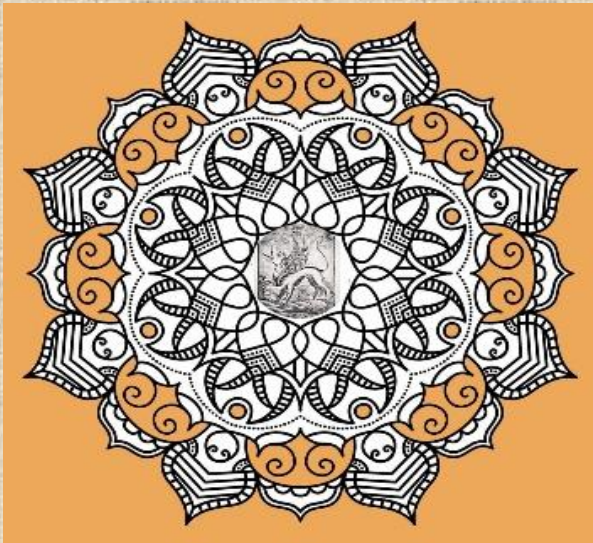
卐 (Swastik)

ॐ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम प्रिश्चिबुध, प्रिश्चम Devanagari Anji)

ॐ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

ॐ (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

ॐ



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥)

Type: Print Book

4 | | <http://www.videha.co.in/> ISSN 2229-547X VIDEHA

Genre: Reference

Language: Maithili

Price: ₹349 + shipping

ISBN: 9789359679884

Publisher: A Videha eJournal Imprint

Number of Pages: 302

Dimensions: 5"x8"

Interior Pages: B&W

Binding: Hard Cover (Case Binding)

Availability: In Stock (Print on Demand)

Preview at;

<https://publish.pothi.com/preview/?sku=SKU21330>

Purchase at;

|| Pohti.com |

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-editor-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B9-%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%9A%E0%A4%A8-%E0%A4%A0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B0-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%95/>

• ❦❦

editorial::staff::videha@gmail::com

❦❦❦❦❦❦

❦❦❦❦❦❦

❦❦

१०२००० :: ३७५ ❦❦ ❦❦❦❦❦❦❦❦❦❦

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

• ॐ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
editorial::staff::videha@gmail::com ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ

• ११

editorial::staff::videha@gmail::com

• ११.११

११

११.११.११

२०२३.११.११ ११ ११.११.११ ११ ११.११.११ - ११.११ ११.११.११ /
११.११ (११.११): ११.११.११

११.११.११ ११ ११.११.११ ११ ११.११.११ - ११.११ ११.११.११ / ११.११.११
(११.११): ११.११.११

१

११.११ ११.११.११ :

११.११.११ ११.११ ११.११ ११.११ ११.११ ११.११ ११.११ ११.११.११ :

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

... ..

... ..

... ..
.....

... ..
... ..!

... ..

... ..

०.०. ०.०. ०.०. ०.०. ०.०.

०.०.०. ०.०.०.

०.०.०. ०.०.०. ०.०.०.

०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०.०.०.०.०.०.०.

०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०.
०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०.
०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०.
०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०.
०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०.
०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०. ०.०.०.

२

०.०.०.०.०. ०.०.०.०.०. ०.०.०.०.

॥ १ ॥

॥ २ ॥

॥ ३ ॥

॥ ४ ॥

॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

॥ ७ ॥

॥ ८ ॥

॥ ९ ॥

१२- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय १३- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

१०० ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ५० ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

२१ २२८० १४ ६ ३ १६ २ ४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

10-16
...
... 3-6
... 150
... 250 . 500
... 38 5-5
...

• • • • •

... ..

: ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :

: ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :

: ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :

: ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ ?

: ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :

: ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :
 : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ : ३३ :

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २१ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २२ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३० ॥

... ..,
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... .. " .. "

(१८८७ .०)
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... .. (..)
... ..
... ..
... ..
... ..
... .. ३५०
... .. १०७

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

... ..
... .. S
... .. S
... ..
... .. S
... ..
... ..
... .. S
... ..
... .. S
... ..
... .. S

... .. S
... ..
... ..
... ..
... ..

... ..
... .. -

"... .."
... .. "

"... , ?"
... ..
... ..
... ..

"... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... .."

... ..

... ..

editorial:: taff::vidaha@gmail::com

::::

:::::..:

२५६:३३ * ३.०: ३: ३:३-३:३ *

३३ * ३.०: ३: ३:३

३:३ *

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

... ..

"... .."
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
editorial::staff::videha@gmail::com
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

"... ..
... ..?"

... ..
... ..
... ..

"... ..!
... ..!"

... ..-

"... ..?"

... ..-

क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।

क्या तुम जानती हो?

"क्या मैं भी जानूँ?"

क्या तुम जानती हो कि मैं कौन हूँ?

"क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।" मैंने कहा।
"क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।" मैंने कहा।
"क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।" मैंने कहा।
"क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।" मैंने कहा।
"क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।" मैंने कहा।

क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।
क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।
क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।

"क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो?"

क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।
क्या मैं भी जानूँ कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानती।

"... .., :...
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... .."

... ..
... ..
... ..

"... ..
... .."

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... .."

... ..
... ..

• ❦❦

editorial::staff::videha@gmail::com

❦❦❦❦❦

❦ ❦❦❦ ❦❦

❦❦

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।"

"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।"

"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ?
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ?"

"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।"

"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ?"

... ..
... ..
... ..
... ..

"... ..?"

"... ..
... ..
... ..
... .."

"... ..?
... ..?"

... ..
... ..
... ..
... ..

... ..-

"... ..
... ..
... .."

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

"... .."

"... ?
... ?"

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ?
... ?"

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..

"... ..
... ..
... ..
... ..
... .."

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

"... ..
... .."

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..

-... ..
... ..
... .. ६९
... ..
... ..

१९७३-७४ (२०२२) १९७३-७४
 २०७३ (२०२२) २१७३-७४
 २२७३ (२०२२) २३७३-७४
 २४७३ (२०२२) २५७३-७४
 २६७३ (२०२२) २७७३-७४

२०२२
 editorial::staff::videha@gmail::com
 २०२२

३०३३ ०३ ०३ ०३

३०१०३ ० ०३०३०३ ३०३३-३०३ ३०३ ३०३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनस्य वचनम् ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनस्य वचनम् ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वैश्वदेवः अग्निः सवितरः सोमः इन्द्रः अश्विनः

वृषभः शक्रः भृगुः अरिष्टनेमिः अश्विनीः

कुम्भः मृगशिरः अश्लेषः ज्येष्ठाः मूलाः

पूर्वाश्र्विणीः पूर्वाफाल्गुनीः पूर्वभाद्रपदाः

पूर्वाषाढाः पूर्वाश्र्विणीः पूर्वाफाल्गुनीः
पूर्वभाद्रपदाः पूर्वाश्र्विणीः पूर्वाफाल्गुनीः

• पृष्ठः
editorial::staff::videha@gmail::com पृष्ठः
पृष्ठः

३०२००० १००००० ०००० १००००० ०००००० ०००००० ०००००० ००००००
०००००००० ००००००

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०
३:३० ३:३०

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०
३:३० ३:३०

३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३० ३:३०
३:३० ३:३०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

••••• ••••• ••••• ••••• ••••• •••••
••••• •••••

-••••• ••••• '•••••', •••••, •••••,
(•••••), •••••-9871779851

••••• ••••• •••••
editorial••staff••videha@gmail••com •••••
•••••

३••••• ••••• ••••• ••••• ••••• •••••

••••• ••••• •••••, ••••• •••••

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (.), ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय),
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय? ॐ नमो भगवते वासुदेवाय?

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय?

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,

३ ३३३ ३३३, ३३३३ ३ ३ ३३३ ३३३,

३३ ३ ३३३ ३३३, ३३३३, ३ ३३३३

३ ३३३, ३ ३३३ ३३ ३३३३ ३ ३ ३३३,

३३३३ ३ ३३३३ ३३ ३३३३ ३ ३३३३,

३३३ ३३ ३ ३३३ ३ ३ ३ ३३३,

३ ३३३३३ ३३३३३ ३, ३ ३३३ ३३३

३३ ३३३ ३३३३ ३३३ ३ ३३ ३ ३३३३ ३ ३,

३ ३३३३ ३३ ३-३३३,

३३३३ ३ ३ ३३३ ३३ ३३ ३३३३३,

• ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३३३ ३३३, ३ ३३३३ ३३ ३३ ३ ३३ ३३ ३३ ३३,

३३ ३३३ ३३३ ३३३, ३३३ ३ ३३३ ३३३

३ ३३३, ३ ३३ ३ ३३३ ३३३ ३३३ ३३३,

३३३३ ३३३३ ३३ ३३, ३३३३-३३३ ३३३

३३ ३३३३ ३३ ३३ ३३-३३ ३३३ ३३३,

३३३ ३३३३ ३ ३३ ३ ३३३ ३३३,

३ ३ ३३ ३३, ३३ ३३३ ३३ ३ ३३३ ३३३,

३ ३३ ३३ ३३ ३३३, ३३ ३३३ ३३३-३३३- ३३३३

“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” ?

“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” ?

“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”,

“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”

“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”,

“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” !

“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”,

“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”

“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”,

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७५ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

"विदेहक जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला-संगीत-रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"
(print-on-demand)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

विदेह राम भरोस कापडि 'भ्रमर' विशेषांक

मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.) विशेषांक

कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

Type: Print Book

Genre: Reference

Language: Maithili

Price: ₹349 + shipping

162 || <http://www.videha.co.in/> ISSN 2229-547X VIDEHA

ISBN: 9789359679884

Publisher: A Videha eJournal Imprint

Number of Pages: 302

Dimensions: 5"x8"

Interior Pages: B&W

Binding: Hard Cover (Case Binding)

Availability: In Stock (Print on Demand)

Preview at;

<https://publish.pothi.com/preview/?sku=SKU21330>

Purchase at;

[विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक | Pothi.com](http://www.pothi.com)

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-editor->

[%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B9-](https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-editor-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B9-)

[%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%9A%E0%A4%A8-](https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-editor-%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%9A%E0%A4%A8-)

[%E0%A4%A0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B0-](https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-editor-%E0%A4%A0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B0-)

[%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%95/](https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-editor-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%95/)

[%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%95/](https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-editor-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%95/)

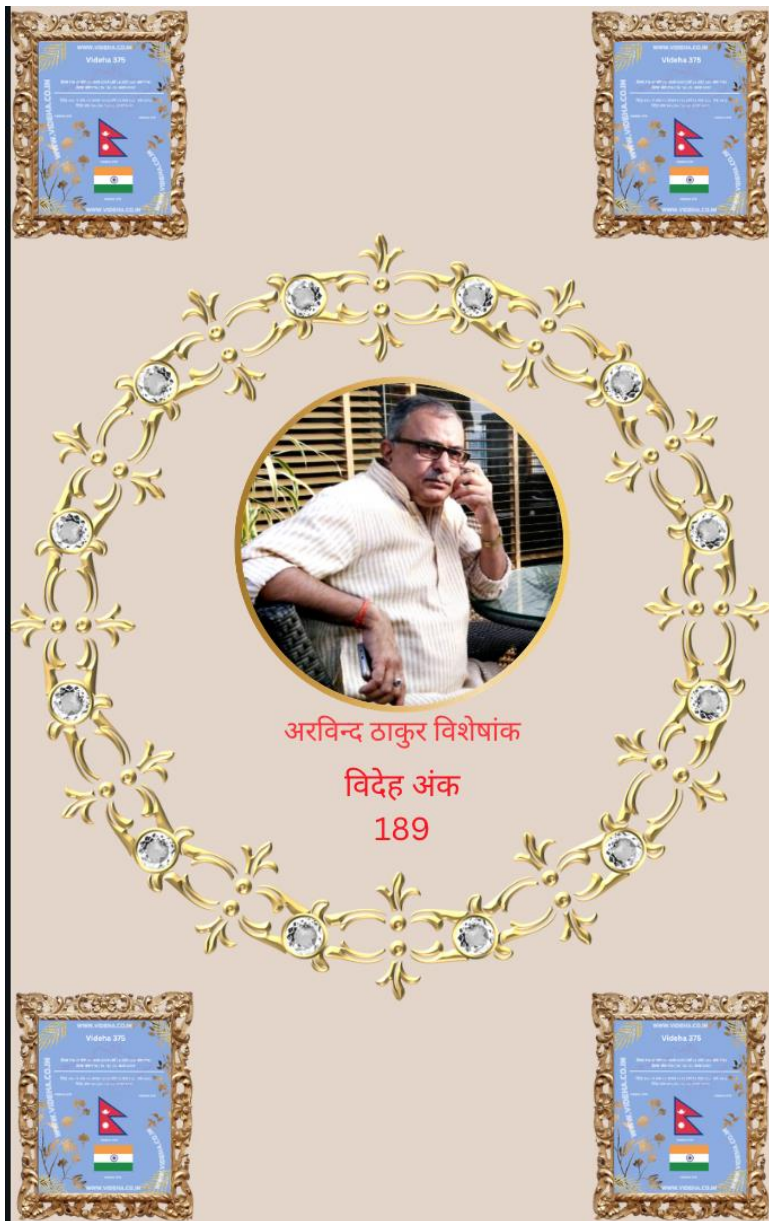
[A4%95/](https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-editor-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%95/)





रामलोचन ठाकुर विशेषांक
विदेह अंक
319







जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक
विदेह अंक
191



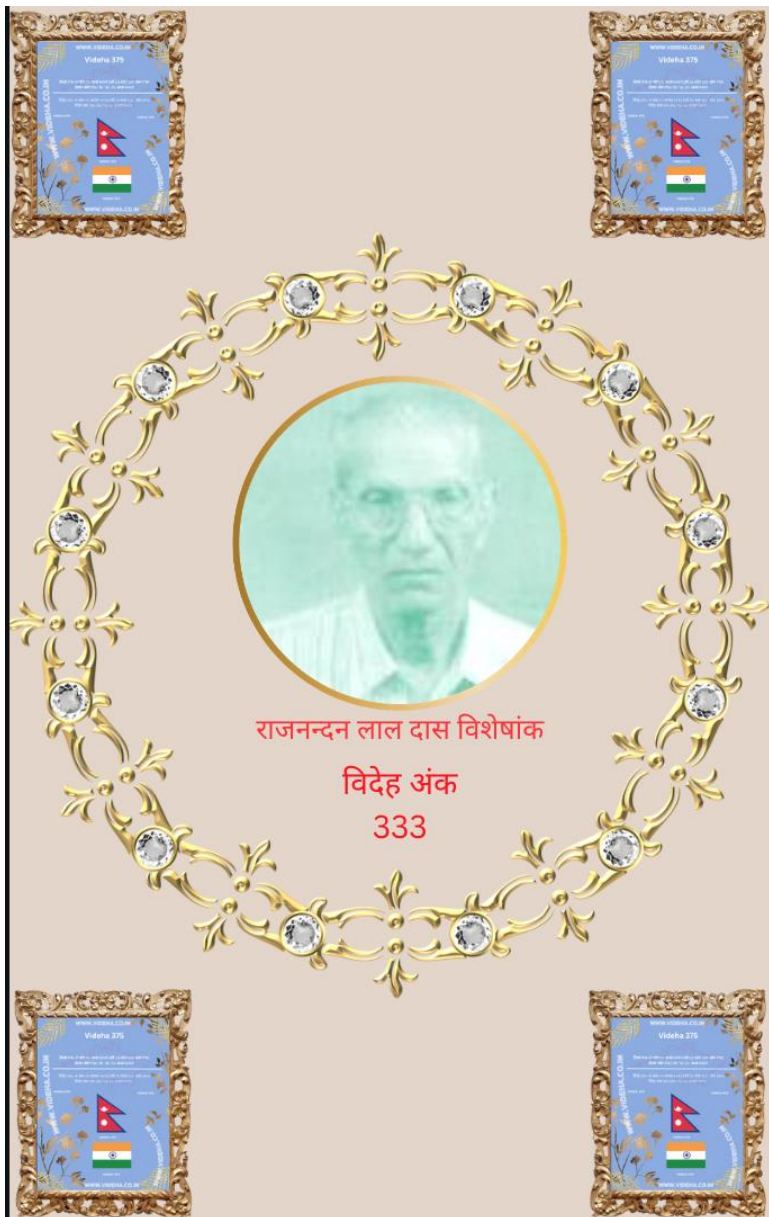


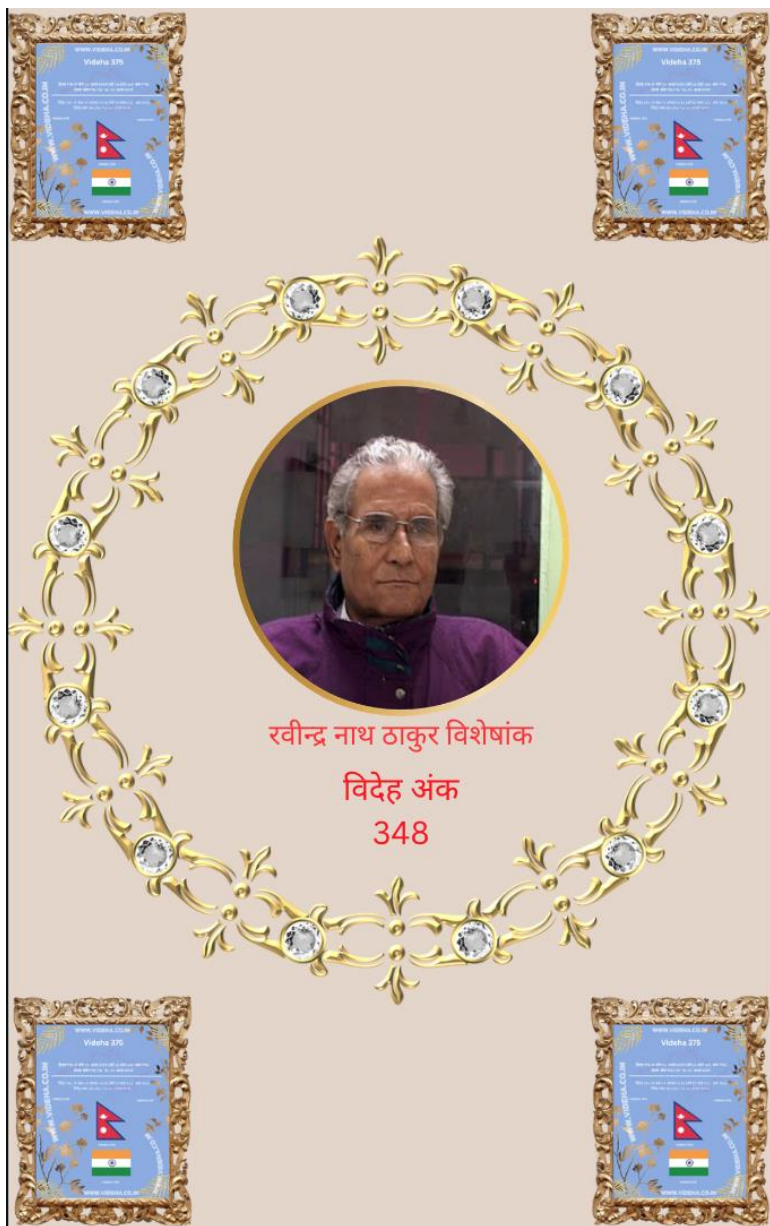
रामलोचन ठाकुर विशेषांक

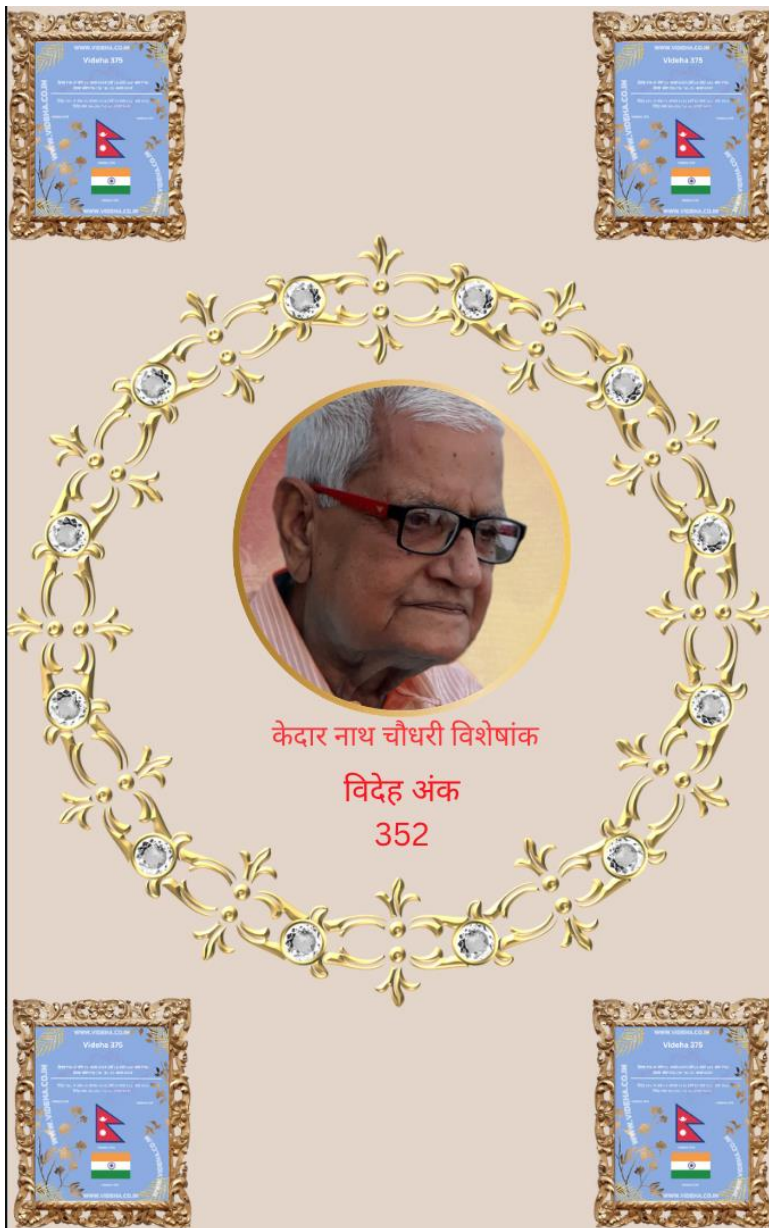
विदेह अंक

319





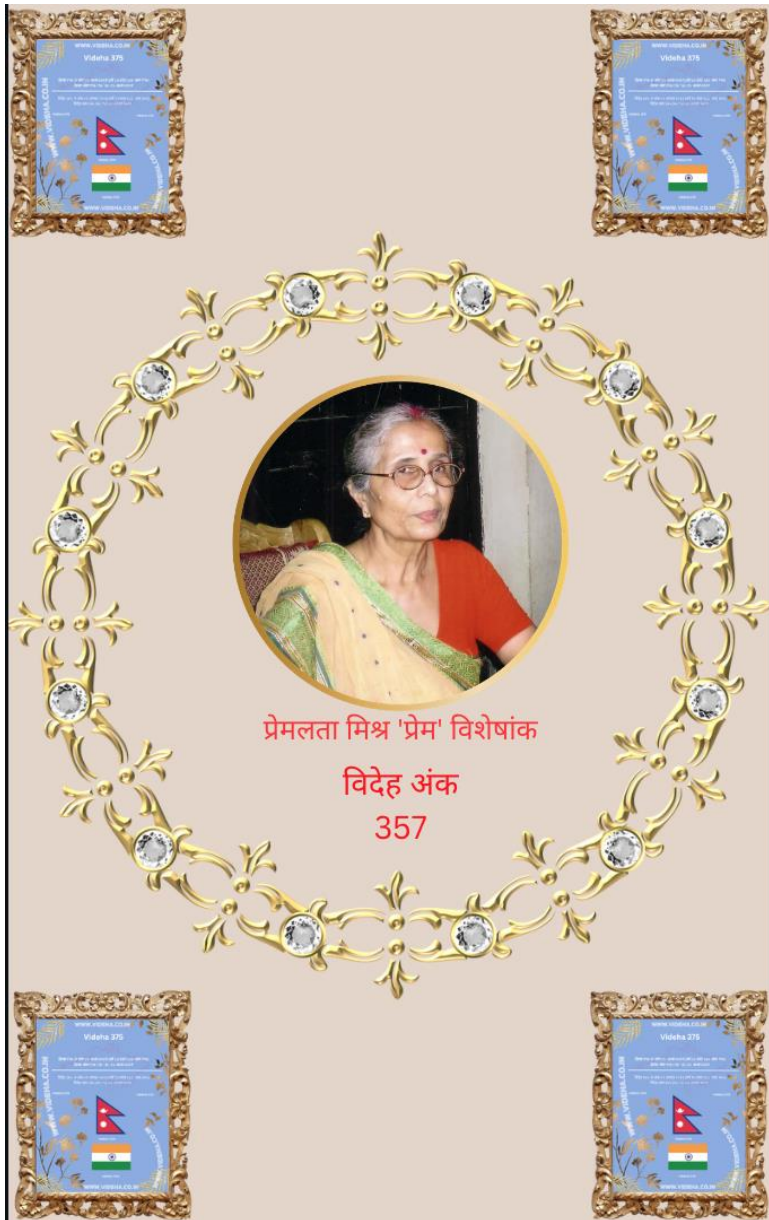


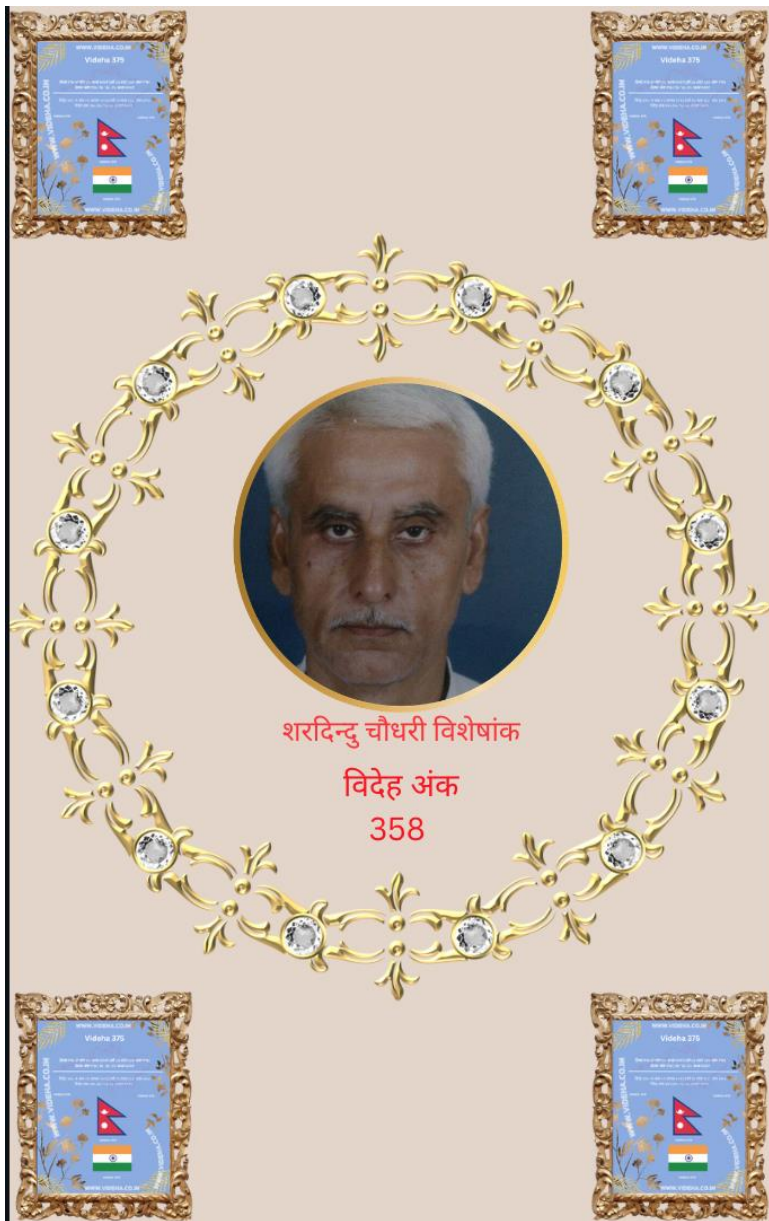


केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह अंक

352





शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

विदेह अंक

358





राम भरोस कापडि 'भ्रमर' विशेषांक

विदेह अंक
370



१.२.अंक ३७५ पर टिप्पणी

लक्ष्मण झा 'सागर'

बहुत अभिनव आ ललितगर अंक। बहुत बहुत बधाइ! आंतरिक अभ्यर्थना!!
नित नवल सुशील एहि अंकक महत्वपूर्ण रचना अछि।सुशीलक संग बर
अन्याय भेल छनि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२. गद्य खण्ड

२.१. परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.२. आचार्य रामानंद मंडल- हाल मियां/ जयंत (कौआ)के कथा

२.३. लालदेव कामत-साहित्य अकादमी परेखलनि - पेन ड्राइवमे पृथ्वी कै/ मखानाक गुण बुझू/ मिथिला में माछ, रोजगारके सर्वसुलभ साधन भय सकैत अछि/ पानक बड़ेब/ औषधीय गुण मौधमे/ रंगपुरमे जगूक परियास : एक विश्लेषण

२.४. लालदेव कामत-आर्थिक विपन्नता/ मुंस'क दान

२.५. निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-२५)

२.६. नन्द विलास राय-मास्क

२.७. जगदीश प्रसाद मण्डल-घरदेखी

२.८. रबीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

২.১. পরমানন্দ লাল কর্ণ- গীতা মাহাত্ম্য (আগাঁ)



(নাম- পরমানন্দ লাল কর্ণ (১৯৩০) বিতা: স্মঃ পরমহংসনাম
কর্ণ, গাৰ- ঘোষসৰ, পোঃ বিদ্বান, দৰভংগা, বিহাৰ-২৪৭২৪
জিমাণ - স্মাডকোডৰ, CAIIB, সৈবানিচি-প্ৰবন্ধক, সৈত্ৰল
বৈক আৰ্য জাতিয়া)

গীতা মাহাত্ম্যে
(পম প্ৰবাল উত্তৰ খণ্ড)

দ্বিতীয় অধ্যায়

ভগৱান জিৱ কহননি- সূন্দৰী, আৰু অৰ্থদ্বয়
অধ্যায়ক মহাত্মক পাবন কথন সূত্র জে সূত্রী কৰী স্বৰ্গ
মে প্ৰবন্ধক নেন সূন্দৰ সোপান আ প্ৰভাৱক চৰম সীমা
খীক । কাঙ্ক্ষীপৰী মে প্ৰীৱদ্ধি নাম সঁ বিখ্যাত একৰ্থ
ট্রাফল চনাত্ জে নন্দী জকাঁ হমৰা মে ভজি বাখত
চনাত্ । ও পাবন কীৰ্তিক প্ৰজ্ঞন মে তপ্ৰেৰ বহঃৱাণা
জ্ঞানুচিঃ আ হিঃস, কঠোৰতা আওৰ স্বঃসাহস সঁ স্ব বঃ
ৱাণা চনথি । জিতেন্দ্ৰিয় ভৈনাক কাৰণে ও নিচুড়িমাৰ্গ
মে বহেত চনাত্ । ও ৱেদকৰী সম্ভ্ৰ কৈ পাব কঃ নেনে চনাত্ ।
ও সমস্ৰ জ্ঞাসুক জাত চনাত্ । ক্ৰনকৰ চিঃ সদিখন হমৰে
প্ৰ্যান মে নগন বহেত চন । ও মন কৈ অন্তৰামো মে নগ
কৈ সদিখন আমেত্বুক সাধ্যকোৰ কবেত চনাত্ । জখন
ও চনঃ নগেত চনাত্ তহন হম প্ৰেমৰজা ক্ৰনকা পাচু দোড়ি
দোড়ি কৈ ক্ৰনকা হাথক সহৰা দৈত বহেত চনত্ ।

জা দেনি হমৰ পাৰ্শ্বদ নংগিৰিখি পৃচ্ছনথি- ভগৱন
খি প্ৰকাৰ ভনা, কে অপনেক দৰ্জন কেনে হোয়ত ? জামহা
কোন তপ, হোম ব তপ কেননি অচি জে অপনে-আপ অৰ্থ
ডেগে-ডেগ হিনকা হাথক সহৰা দৈত চনেত চী ।

জা দেখি হমৰ পায়দ নংগিবিথি পুচুচনথি-ভগন
 এহি প্ৰকাৰ ভনা, কে অ্ৰপনেক দৰ্ছান কেনে হোয়ত ?জামহো
 কোন ভপ, হোম ব জপ কেননি অ্ৰচি জে অ্ৰপনে-আপ অ্ৰহা
 ডেগে-ডেগে হিনকা তথক সহাবা দৈত চনেত ছা।

স্বগিবিথিক জ প্ৰদ্ব স্থনি হম এহি প্ৰকাৰ উত্ৰ দেনাজ
 আৰ্ৰত কেনই। এক সময়ক বাঁত অ্ৰচি, কেনাস পৰিউকপাৰ্ধ
 ভাগ মে প্ৰসাগ বন মে চন্দ্ৰমাক অ্ৰমৃতমথী কিৰণ সঁ
 প্ৰেণঅন জমীন পৰ একৰ্থ বেদীক আশ্ৰয় নঃ কে হম বৈসন
 ছনই। হমৰ অ্ৰণ প্ৰি বৈসনাক বাদ অ্ৰচানক বউ জোৰ সঁ অ্ৰাণী
 আয়ন , ওহি ঠামক গাছক জাঁৰি নীচা উপৰ ভঃ এক-দেগৰ
 মে ঠকৰা কে কডেকো জাঁৰি ঝুঁঠিগেন। পৰিক প্ৰিচন ছায়া
 সেহো ডোনঃ নাগন। তকৰ বাদ ওহি ঠাম প্ৰয়কৰ ঙ্গই
 শ্ৰেণ জাহি সঁ প্ৰহাউক আৰাজ উঠে ছন। তদনুৰ অ্ৰকাথ
 সঁ কোনে প্ৰেঘ চিঠে উত্ৰন জেকৰ কান্তি কাৰী মেঘসন ছন
 ও অ্ৰঃ অ্ৰঃ কাৰী, অ্ৰন্তাবক সমুহ আ কৰ্ঠন পংখ কাৰী পহুচ
 সন ঙ্গমি পড়েত ছন। পাতৰ সঁ পৃথ্বীক সহাবা নঃ কে ওপৰী
 হমৰা প্ৰশাম কেনথি আ নীক নৃতন কমন হমৰা চৰণা
 কঃ অ্ৰপ্ৰঃ বাণী মে সৃতি কণনা জ আৰ্ৰত কেননি।

পয়ী কহনি- হে দেৱ ! অ্ৰপনেক জয় হে। অ্ৰহা
 চিদানন্দমথী স্বপ্নাক সাগৰ আ জগন্ক পাতক ছা। সদি
 খন সদ্ভাৱনা সঁ হুক্ত আ অ্ৰন্যসজিক নহৰ সঁ উল্লসিত
 ছা। অ্ৰপনেক বৈভবক কত্ৰু অ্ৰনু নহি অ্ৰচি। অ্ৰপনেক
 জয় হে। অ্ৰহেতবাসনা সঁ পৰিপূৰ্ণ ঙ্গমি সঁ অ্ৰহা িৱিধমন
 সঁ বহিত ছা। অ্ৰহা জিতেন্দ্ৰিয় ভক্ত নোকনিকক অ্ৰধীনবহে
 ছা আ ধ্যান মে অ্ৰপনেক সূকপক সাঙ্গকোৰ হোয়ত অ্ৰচি।
 অ্ৰহা অ্ৰিচাময় উপাধি সঁ বহিত, নিত্যমুক্ত, নিৰাকার, নিৰাময়
 অ্ৰসীম, অ্ৰইকাৰশূন্য, অ্ৰাৱৰণ বহিত আ নিৰ্ৰূপ ছা অ্ৰপনেক
 চৰণকমন ছাৰণাগত ভক্তক বক্ষা কৰঃ মে প্ৰৰীণ ছা। অ্ৰপনেক

ভয়ংকর নতপর্ষ কপী মহাসর্পক বিষ জ্ঞান সঁ কামদেব কৈলম কেনে ছী। অধনেক জয় হে। অহাঁ প্রত্যক্ষ আদি প্রমাণ সঁ স্ব বহিতকঁ প্রামাণ্যস্বরূপ ছী। অধনেক রৌঁ-রৌঁ নমন অছি। চৈতন্যক স্বামী আ প্রিবরন রূপ ধারী অধনেক নমন অছি। হেম শ্রেষ্ঠ যোগী নোকনি সঁ চুম্বিত অধনেক চরণ কমনক বঁদনা কবেত ছী জাহি মে অধাৱ লৱ পাপক সমুদ্র সঁ পায় উতাবক অদ্ভুত ধ্বজি অছি। মহাদেব! সাংগাল চূহস্পতিস্মে অধনেক সৃতি কবঃ কৈ পুষ্কর্তণ নহি কঃ সকেত ছযি। সহস্র-মুখযজ ন্যাগরাজ ধোব মে সেগে এতক চাতরী নহি চৈন জে অধনেক গুলক বখান কঃ সকাযি। তহন হমবা এহন চোঃ চুম্বি-রানা চিঠে মে কী সামর্থ্য অছি ?

চিঠে সঁ কখন গেন এহি স্মোত্র কৈ স্মনি হম কনকা সঁ পছনকঁ - হে বিহঁগম! অহাঁ কে ছী অণ্ডব কহঁ সঁ অয়ন ছী ? অহাঁক অচতি তঃ হঁস সনক অছি মদ্য বংগ তঃ কোপ্রা রানা অছি। অহাঁ জাহি পুযোজন সঁ এহি ঠাম অণনকঁ অছি সে রতণ্ড।

চিঠে কহননি-দেৱেধা! অহাঁ হমবা চুম্বাকীক হঁসজানু কুর্জার্থে, জাহি কর্ম সঁ হমবা ধারীৰ মে অখন কানিম্য অণবি গেন অছি সে স্মন। প্রভো, ওনা তঃ অহাঁ সর্বি ছী মদ্যকৌ অহাঁ পুচ্ছেত ছী তহন হম রতাবেত ছী। সৌৰাধুঁ নগর নগ একর্ষা নীক সৰোৱৰ অছি জাহি মে কমন নহনহাণে চন। ওহি মে সঁ বাঁনচন্দ্রক হঁকড়া জকাঁ ধ্ৰুত মূল্যান কৈ মূহ মে নঃ কে হম রড় তেজী সঁ অকাধা মে উহি বহন ছনকঁ। উড়ে-উড়ে অচানক ওহি ঠাম সঁ পৃথ্বী পৱ অসি গেনকঁ। জখন হোন্ধা মে অখনকঁ আ অখনা গিবক কাৰণ নহি দেখা স্কনকঁ তঃ মনে মন সোচঃনাগনকঁ-প্রা হমবা পৱ কী আৱি গেন ? অণা হমব প্রতন কোনা লঃ গেন ? পাকন কপূৱ সন হমব

উজ্জ্বল ধাৰীৰ মে জ্ঞাননিমা কোম্পা অৱি গেন । এহি প্ৰকাৰসিষ্টি
 ত্ৰঃ হম অখন বিচাৰ কৰেত চনকি তখনহি ওহি পোখৰক
 কমন মে সঁ হমৰা জ্ঞান-আৰাজ স্মনা দেনক - যৌ হঁস . ৫৬. হম
 অখনেক গিৰক আ কাৰী হোখ কে কাৰণ বতৰেত ছা । তব হম
 ৫৭ কেঁ সৰোৰৰ কে বাঁচ মে গেনকি আ ওহি ঠাম পাঁচ ঠা কমন
 সঁ হজ একঠা কমনিবা দেখনকি । একৰা দেখি প্ৰলাম কঃ হম
 প্ৰদক্ষিণা কেনকি আ অখন পতনক সৰ কাৰণ পৃষ্ঠনকি ।

কমনিবা কহনীহ - কনহঁস . অহা আকাঙ্ক্ষা মাৰ্গ সঁ
 হমৰা নাঁঘি কে গেনকি অচিওহি পাতকক পৰিণামৰূপ
 অহা পৃথী পৰ গিৰনকি অচি আ তকৰে কাৰণ অহাক
 ধাৰীৰ মে কানিমা দেখি পড়ৈত অচি । অহাক গিৰন দেখি
 হমৰা হৃদয় মে দখা লবি আয়ন আ তখন হম এহি মধ্য
 কমন সঁ বোঁনঃ নাগনকি অচি তখন হমৰা মুখ সঁ নিকনন
 স্নগ্ন কেঁ সঁঘি সাৰ্ঠি কোথীলোঁৰা কেঁ স্মৰ্গনোক প্ৰাপ্ত
 লৈ ননি । পক্ষিৰাজ ! জাহি কাৰণ হমৰা মেথতেক বিলৰ
 আ এতেক প্ৰলার আয়ন অচি সে বতৰেত ছা । স্মন এহি
 জন্ম সঁ পূৰ্ব তেসৰ জন্ম মে হম পৃথী পৰ একঠা ঠাফলক
 ক ৰূপ মে জন্ম লৈন চন । তখন হমৰ ন্যম সৰোজব্দনা
 চন । হম এক নোকনিক সেৱা কৰেত সদিখন এক মণ
 পাতিচুলক পানন কৰ মে তপেৰ বহেত চনকি । এক দিনক
 ৰাত অচি হম একঠা মেনা কেঁ পঢ়াৰহন চনকি । জাহি সঁ পতি
 সেৱা মে কিছু বিনমুঁ ত্ৰঃ গেন আ পতিদেৰ লপিত ত্ৰঃ হমৰা
 ধাপ দেননি - 'পাপিনী অহা মেনা ত্ৰঃ জাও । মৰণোপৰান্ত
 যাদপি হম মেনা লৈনকি মূদ্য পাতিচুলক প্ৰসাদ সঁ একঠা
 মূনিক ঘৰ মে হমৰ আশ্ৰয় মিতন । কোনো মূনিকন্যে হমৰ
 পানন পোষণ কেনবি । হম ঘৰ মে চনকি ও ঠাফল সৰদিন
 সৰেৰ সকান বিন্দ্ৰভিযোগ নাম সঁ প্ৰসিদ্ধ গীতক দক্ষামপ্ৰ
 য়ক পাৰ্ঠ কৰেত চনহ আ হম ও পাপাত্যৰী অধ্যায় কে স্মনেত
 চনকি । ব্ৰিহংগ কান এনা পৰ হম মেনাক ধাৰীৰ চোড়ি কেঁ

দধাম অপ্র্যায়ক মাহাম্বে সঁ স্মৰ্গনোক মে অপ্র্যায়ক লেনকঁ। হমৰ
 নাম পম্মাবতী লেন অৰ্হ হম পম্মাক স্মিয়বৰণৰ সম্মীভঃগেনকঁ।
 এক দিন হম বিমান সঁ আকাঙ্ক্ষা বিচৰণ কৰেভে চনকঁ। তখন
 স্মন্দৰ কমন সঁ স্মঞ্জোলিত এহি বম্মণীয় সৰোবৰ পৰ হমবনকৰি
 পড়ন আওহি মে উতৰি কে হম জন্মহি জন্মকীড়া অৰ্হল কেনকঁ
 তখনহি ছৰ্হসি স্মনি এহি ঠাম চৰি এনাহ। ও হমৰা বসুহীন্স
 অৰ্হসু মে দেখি লেনথি। ক্লনকা লয় সঁ হম অপনে মনসঁ গ্ৰা
 কমনিশীক কপ ধাৰণ কঃ নেনকঁ। হমৰ হম্ম পাতৰ দু ঠৰ্হা
 কমন লেন, হম্ম হাথ সোহো দু ঠৰ্হা কমন লেন। দ্ৰেৰ অংগ
 মে হমৰ স্মঁহ সোহো এক ঠৰ্হা কমন লেন। এহি প্ৰকাৰ হমপাট
 ঠৰ্হা কমন সঁ স্মজ লেনকঁ। স্মনিৰ ছৰ্হসি হমৰা দেখনথি।
 ক্লনকৰ অঁমি কোপ্ৰাগ্ৰি সঁ জনিবহন চন। ওকহননি-পাৰ্শ্বী
 অহঁ এহি কপ মে সও বঁৰব ধৰি পড়ন বন্ধ। গ্ৰা ছাপ দঃ কে ও
 ক্লন লবি মে অন্তৰ্হান লঃ গেনাহ। কমনিশী লেনাক বারস্বদ
 বিন্দতি - যোগাঅপ্র্যায়ক মাহাম্বে সঁ হমৰ বাশী নৃপু নহি লেন
 অচি। হমৰা নাঁঘনাক অপ্র্যায়ক সঁ অহঁ পৃথ্বী পৰ জিবনকঁপ্ৰচি।
 হে পক্ষিবাজ! এহি ঠাম ঠাট লেন অহঁক সোক্ষ মে অগ্ৰ হমৰ
 ছাপক নিচুতি লঃ বহন অচি কিংক তঃ অগ্ৰ সও বঁৰব পুৰাভঃ
 গেন। হম জে গাৰেভ চনকঁ তাহি উত্তম অপ্র্যায় কে অহঁ সোহা
 স্মনি নিঅ। ওকৰা স্মননা মাত্ৰ সঁ অহঁ সোহো স্মজ লঃ জায়ৰ।

গ্ৰা কহি পম্মিনী অপ্র্যায়ক অৰ্হ স্মন্দৰ বম্মণী মে দধাম অপ্র্যায়ক
 যক পাঠ কেননি অৰ্হ স্মজ লঃ গেনীহ। ওকৰা স্মননাক বাদ
 ক্লনকৰ দেন গ্ৰা 'উত্তম কমন নারি' হম অপ্র্যায়ক অপ্র্যায়ক
 নকঁ অচি।

এতৰে কথা স্মনা কঃ ও চিহঁ অপ্র্যায়ক কৰীৰ ল্যাগি
 দেনক। গ্ৰা এক ঠৰ্হা অদ্ভুত ঘটনা লেন। ও চিহঁ অৰ্হ দধাম
 অপ্র্যায়ক প্ৰলার সঁ ঠাফ্ৰলন মে জন্ম নেননি অচি। জন্মহি

এতৰ কথা স্মৰণ কৰা ও চিঠিৰে অৰ্পন ধাৰীৰ ব্যাগি
 দেনক । জা একৰ্থা অদ্ভুত ঘৰ্ণনা লৈন। ও চিঠিৰে আৰ দৰ্শ্যম
 অৰ্প্যায়ক প্ৰত্যাহাৰ সঁ চিঠিৰ্ণলন মে জন্ম নেননি অৰ্চি। জন্মি
 সঁ অৰ্ণ্যাস লৈনাক কাৰণে শ্ৰৌধাৰায়সূ সঁ কনকা মৰ্ম সঁ
 সদিম্নন গীতাক দৰ্শ্যম অৰ্প্যায়ক ঠাৰাৰণ হোয়ত অৰ্চি। দৰ্শ্যম
 অৰ্প্যায়ক অৰ্চি চিন্তনক জা পৰিণাম লৈন অৰ্চি জে সমসু স্কৃত
 মে স্থিত ধাঁখ চক্ৰধাৰী ভগবান ঝিধুক ও সদিম্নন দৰ্শ্যনকৰত
 বহেত ছৰ্থি । কনকৰ স্বেহপূৰ্ণ চৰ্চি জন্ম কোণে দেহধাৰীক
 ধাৰীৰ পৰ পৰ্জায়ত অৰ্চি তহন ও মূৰ্ত্ত ভাৰ্জায়ত ছৰ্থি চাহে
 ও ধাৰাৰী ব চ্ৰীক্ৰহল্যৰণ কিষ ন্তি হে । পূৰ্বজন্ম মে অৰ্ণ্য
 কওন গেন দৰ্শ্যম অৰ্প্যায়ক মহাম্যে সঁ কনকা হৰ্ণভ ঙ্ণন প্ৰাধু
 চৈন আ জা কীরন মূৰ্ত্তি সৈনো পাৰি নেনে ছৰ্থি । তেঁ জন্ম
 ও বসসু চনেত ছৰ্থি তহন তম কনকা হায়ক স্তাৰাৰ দৈত চ্ৰী
 হে ন্দিৰিৰিঠে জা সৰ দৰ্শ্যম অৰ্প্যায়ক মহামহিমা অৰ্চি।

পাৰ্ৱতী ! এহি প্ৰকাৰ হম ন্দিৰিৰিঠিক সৈনো মে
 জে কথা কহনক অৰ্চি বহে এহি ঠাম অহাঁ সঁ সৈনো কহনক
 অৰ্চি । অৰ. ন্যৰী অৰ্ণ্য কও কিষ ন হোয়. এহি দৰ্শ্যম অৰ্ণ্য
 যক ধাৰাৰা মৰ্ম সঁ কনকা সৰ অৰ্ণ্যমক পাননক যন মি
 নেত চৈন ।

— o —

গীতা মাহাত্ম্যে
(পেয় পুৰাণ 'উত্তর খণ্ড')
৭গাবহম স্রষ্টায়

মহাদেব কহেনি- গীতা-কৰ্মণি সঁ সমুষ্টিত কথ্য অথ
বিদ্বাকপে অপ্রচ্যয়ক পাবন মাহাত্ম্যেক ধ্বংস কক। সিদ্ধান্ত
নেত্রবানী পার্শ্বতী। ওহি অপ্রচ্যয়ক মাহাত্ম্যেক পুরা-পুৰা
বৰ্ণন নহি কথন তা সকেত অচি। ওহি সমুষ্টি মে কহে
হজাব কথ্য অচি। জাহি মে সঁ একথা কথ্য কহেত ছী প্রণী
নদীক তর্ক পর মেঘকর নাম সঁ বিখ্যাত একথা পেয় বগর
অচি। ওকর প্রকার অথ গোগর রেসী উঁচ অচি। ওহি ঠাম
পেয়-পেয় বিদ্বাক্য ধ্যান অচি। জাহি মে সেনাক খঁলা
ধোলায়মান অচি। ওহি নগর মে ধ্রীমান, সুখী, ধ্যান, সনাক
অথ জিতেন্দ্রিয় নোকনি কে নিরাস অচি। ওহি ঠাম ধ্রীর্গ নাম
সঁ ধ্রুয়ধারী জগদীশ্বর ভগবান বিষ্ণু বিবাজমান ছয়ি। ও
পরচক্রক সাকার স্রুপ ছয়ি। সঁসারক নেত্রক জীবনধ্রুপ
ছয়ি। হনকর নৌবরপূর্ণ ধ্রীবিগ্ৰহ ভগবতী নখমীক নেত্রকর
সঁ পুজিত হোয়ত অচি। ভগবানক ও আঁকিরামন প্রত্যকথীক
মেঘ সন হনক প্রায় রুঁ অথ কোমর অচি। ওহি স্রু পর
ধ্রীর্সেক চিন্ত ধোলায় পাবেত অচি। ওকর প্রাণনমানা সঁ গিভ
মিত ছয়ি। কতক প্রকারক প্রান্তবশ সঁ ধ্রোলাস্তিত ভঃ ভগবান
রামন বলেয়ত সমুষ্টি সন হুঁসি পইত অচি। পীতাম্বর সঁ হনক
প্রায় বিগ্ৰহক কাবু খনা পুজিত হোয়ত অচি জে মন্ব চমকে
রিজনী সঁ ঘোর স্রিক মেঘ ধোলায়মান অচি। ওহি ভগবান
রামনক দর্শন কঃ জীর জন্ম অথ সঁসারক রঁকন সঁ মৃত ভঃ
জায়ত অচি। ওহি নগর মে মেখনা নাম সঁ একথা জীর্
স্রু অচি জাহি মে স্রু কঃ নোক প্রায়ত লৈল-র্গাম চনি
জায়ত ছয়ি। ওহি ঠাম জগৎক দ্বারী কন্যাসাগর ভগবান
নবসিঁহক দর্শন কঃ নোক সাত জন্মক কথন জেত ঘোর পর
সঁ চুর্কাবা পারি জায়ত ছয়ি। জে নোকনি মেখনা মে
গনোদ্বাতীক দর্শন কবেত ছয়ি ও সদিখন হস্র বিষ্ণু কোসৌ
প্রাব কঃ তেত ছয়ি।

ওহি মেঘকব নগৰ মে কোনো প্ৰেৰণিত প্ৰাৰ্থনা বহেত জনহ
 তে চমৰ্চ্যপৰায়ণ, মমতা আ অহঁকাৰ সঁ বাহিত, বেদ শাস্ত্ৰমে
 প্ৰবীণ, কিতেন্দ্ৰিৰ আ ভগৱান বাসুদেৱ কেঁ ধৰণাগত জনহ
 কনকৰ নাম স্মৰন চননি । প্ৰিযে ! ও ধাৰ্গ প্ৰবৰপ্ৰাৰী ভগৱান
 নগ গীতাক খগাবহম প্ৰচাৰ- বিদ্বকল দৰ্শন যোগক পাৰ্শ্বক
 চনহে । ওহি অধ্যাক প্ৰচাৰ সঁ কনকা চক্ৰজানক প্ৰাণি তেত
 চননি । পৰমানন্দ-সন্দেশ সঁ পূৰ্ণ উত্তম জ্ঞানযথা সমাপ্ৰাৰ্ণজন্ম
 কেঁ অৱৰ্থক ভেদাক কাৰণে ও নিচক স্মৃতি মে চনযি আ সাদিখন
 কীৰন্বজ যোগীক স্মৃতি মে বহেত চনহেৎকসময়কখন চহসপতি
 সিহি বাধি পৰ স্মৃত চনযি তহন মহাযোগী স্মৰন গোদাৱৰীতীৰ্
 ক যাত্ৰা প্ৰাৰ্ভ কননি । ওকমজা বিৰজতীৰ্, তাতা তীৰ্কাপ্তিতা
 সগম, অৰ্শতীৰ্ কনিমজাৰ, নৰসিহন, অশ্বিনক ধৰী আ কৰম্ম
 পৰ আদি ছেত্ৰ মে স্মৰন আওৰ দৰ্শন ককত বিৱাহমন্ত প ন্যম সঁ
 একৰ্শ নগৰ মে এনহে । ওহি ঠাম স্মৰক স্ব জ্য কেঁ অৰ্শনে
 চ্বেক স্মৰন মঙ্গলথিন স্বদা কেও স্মৰন নহি দেৱকেনা)অন্ত
 মে গাঁৱক স্মৰিয়া কনকা একৰ্শ পৌষ পূৰ্ণজাতো দেৱা দেৱি
 প্ৰাৰ্থনা সগী সাথী সহিত ওহি ঠাম ৰাশী নিশ্ৰাম কননি ।
 সৰ্বেৰ ভেদ পৰ ও অৰ্শনক প্ৰৰ্শনগৰক ঋতৰ দেৱনযি স্বদ
 সাথী স্ম নহি দেৱ পড়ননি । ও কনকা প্ৰাৰ্শক নেৰ চনহে
 তখনহি স্মৰিয়াৰ্গকনকৰ স্মৰনাকাত শ্ৰেত । স্মৰিয়া কহননি-
 হে স্মৰিমেৰ্শ ! অহঁ সব তৰহে স্মৰিয়া হুঁমি পঠেত ছী। সোভাগ্যক
 আৰ্শনগৰ প্ৰক্ৰ মোকনি মে অৰ্শ স্মৰ্য পঠিত ছী । অহঁ মে কোন
 নোকোয়ৰ প্ৰচাৰ বিচমান অচি। অৰ্শনক সগীকোন ঠাম গৈ ছি।
 অহঁ কোনৰ ওহি শ্ৰৱন সঁ ঋতৰ ভেতনই। একৰ পতন বহুত। হম
 অহঁ কে ওতৰে কহেত ছী তে অহঁ এহন দেৱসৰ তপস্বী হমৰা নহি
 দেৱি পঠেত অচি। বিপ্ৰবৰ ! অহঁক কোন মনুক জ্ঞান অচি। কোন
 ক আৰ্শন মেত ছী আ কোন দেৱতাক দয়া সঁ অহঁ মে অৰ্শকিত
 আৰি গৈ অচি। শ্ৰৱন ! ছপা কঃ অহঁ ওহি গাঁৱ মে বহু। হম অৰ্শ
 সৰ সেৱা প্ৰক্ৰবা কৰব ।

এন্য কহি স্মৰিয়া মনীষুৰ স্মৰন কেঁ অৰ্শন গাঁৱ মে ঠেহা
 নহিন । ও দিন ৰাতি ভক্তি সঁ কনকৰ সেৱা ঋতৰ কৰা মঙ্গলথিন
 জন্ম সাত-প্ৰাৰ্শ দিন ৰীত গৈত তহন এক দিন প্ৰে
 ভোৰ আৰি তুখী শ্ৰ মন্ত্যোক সোম্য মে অৰ্শিকামঃ মঙ্গল
 আ কহননি - যৌ মনি প্ৰাৰ্শ ৰাতি ৰাফস হমৰা এহন প্ৰাৰ্শ
 য়েৰ্শ কেঁ চহ মেনক অচি। হমৰ য়েৰ্শ ৰু প্ৰাৰ্শন আ ভক্তি
 চন স্মৰিয়া কেঁ এন্য কহন পৰ যোগী স্মৰন প্ৰচনথিন-
 ও ৰাফস কোন ঠাম অচি। কোন অৰ্শনক প্ৰক্ৰ
 চ্ৰালাকৈক অচি ?

अग्निश कहनशिन-ऋकन। एहि नगर मे एकठा लेख नवलमी बाधस बहेत अछि। उ सरदिन अगि एहि नगरक लोक केँ बाधस छन। तहन एक दिन समसु नगरबासी मित केँ कनका सँ प्रार्थना केतथि- हे बाधस! अहाँ सर केँ बाधस कर। हम सर अर्धकवेत लेजनेक ऋरसु कः देत छी। एहि ठाम रौतक ले केँ बर्थेही बाति मे अगि सतत कनका अहाँ माँ जायत। एहि प्रकार एहि नगरक लोकनिकक मुखिया सँ एहि धर्मज्ञाना मे लेकन गेल राथी केँ बाधसक अन्तर निश्चित कथन गेल। अपना प्राणक बन्धकन कनका अन्त करः पड़त। अहाँ सेहो दोसब रौथेही संगे एहि घर मे अगि केँ सतत छनई। बाधस सर केँ माँ नेतथि मुदाअहाँ केँ छोड़ि देनेथि। द्विजोदय! अहाँ मे एहन कान प्रुत्तर अछि से अँहि जानेत छी। अथन हमर अर्धकवर्ध दोसु अथन छन मुदा कनका हम नहि चिन्ह सकनई। उ हमर अर्धक रथ विरवभर छनाह। दोसब रौथेहीक संगे कनका हम एहि धर्मज्ञाना मे लेक देनई। हमर अर्ध अथन सनतथि केँ हमर दोसु सेहो धर्मज्ञाना मे गेल छथि तहन उ एहि ठाम सँ नारक नेत उहि धर्मज्ञाना मे गेनाह मुदा बाधस कनका माँ नेतकनि। अज्ञा सरबे हम इथी लः केँ सिद्धाच सँ पछनई- यो इर्थयो। अहाँ हमबा अर्ध केँ माँ नेतई। अहाँक उदर मे पड़त हम अर्ध जाहि सँ जीरित लः सकथि तकर कोनो उपाय लो अछि तहन रजः।

बाधस कहननि- मुखिया जी! धर्मज्ञानाक अन्तर घुसत अर्ध अर्ध केँ नहि जाननाक कारणे हम माँ गेलई अछि। दोसब रौथेहीक संगे अहाँक अर्ध सेहो अनजान मे हमर गुप्त रूनि गेल अछि। उ हमबा उदर मे जाहि सँ जीरित आ रचित बहि सकेत अछि तकर उपाय सूय रिधात कः देने छथि। जे ऋकन सदिन गीतक अगावहम अघ्यायक पाठ करत छथि कनका प्रुत्तर सँ हमर मुजि होयत आ सबन लोकनि येरि जीरित लः जेतत। एहि ठाम कोनो ऋकन बहेत छथिजिना हम एक दिन धर्मज्ञाना सँ रौत कः देने छनई। उ गीतक अगावह अघ्यायक सदिन जप करत छथि। एहि अघ्यायक मनु सँ सतत रैरि अलिमन्त्रित कः लो उ हमबा अर्ध जत छीई देताह तः निःसन्देह हम क्षाभ सँ उदर लः जायत।

एहि प्रकार बाधसक सम्झा पारि हम अहाँ नग अर्धनई अछि।

ঐশ্বৰ্য্য প্ৰচলনখিনি - স্মৃতিয়া জী ! জে বাতিয়ে স্বভৱ
 নোকনি কেঁ খায়ত ছথি ও প্ৰাপি কোন পাপ সঁ বাহুসভে
 অছি । স্মৃতিয়া জী কহননি - হে ঐশ্বৰ্য্য । পহিনে ওহি গাঁৱ য়ে
 কোনো কিসান ঐশ্বৰ্য্য বহেত চনাত । এক দিন ও অগ্ৰহণীক
 স্নেতক কৰাৰীক বধ কৰেত চনাত । ওহি ঠাম সঁ শোভক হব
 পৰ একঠা ঐশ্বৰ গিহু কোনো বঁধোহীকে মৰি খোজত চন।
 তখনহি একঠা তপস্বী কতক, সঁ আৰি ওহি বৰীক ৰচায় কে
 নেন হৰহি সঁ ময় দেখা বহন চনাত । গিহু ওহি বঁধোহীক
 কেঁখাকায়া মে উঠি গেল । তৰ তপস্বী লগিত ভয় ওহি কিসান
 সঁ কহননি - যো বৃষ্টি উননাত ! অহাঁক প্ৰিক্কাৰ অছি । অহাঁক
 অহাঁক
 আ নিদিখী ছা । দেসৰাক বধ সঁ হুইমোটি কেরন পৰতপন
 কেঁ ধূধা মে নাগন ছা । অহাঁক জীবন নৰ্থপ্ৰায় অছি । জে চোব, দাটী
 হাট জীৱ, সাঁপ ছায়া, আঁগি, বিষ্, পানি, গাঁহ, বাহুস, স্তত আ
 ৰেতন
 আদি সঁ হায়ল তেন নোকনি কেঁ জোতি বহিতক, উল্লেখ কৰেত
 ছথি ও জনকৰ বন্ধক যন পায়ত ছথি । জে জাতিজাণী ভয়
 ছথি
 আদি
 ঠায়েত মে মসন ঐশ্বৰ্য্য কেঁ জোজায় কেঁচোৰ্থ নহি কৰেত
 ছথি ও ঘোৰ নৰক মে গিৰেত ছথি আ মেৰি ভেড়িয়ক
 যোনি মে জম নেতি
 ছথি । জে বন মে মাবন জায়ত আওৰ গিহু ৰ
 ঐশ্বৰ্য্য হুগিঠ মে
 পচন ও জীৱ জে বধক নেন ছোছু, চোছুক
 গুণাৰ কৰেত অছি
 ও পৰম গতি কেঁ প্ৰাপ্য কৰেত ছথি । জে নোকনি
 গাছক বধক
 নেন ৰাঘ, স্তীল আ বৃষ্টি কজক হাথ সঁ মাবন
 জায়ত ছথি
 ও ভগৱান বিধুক পৰম পদ কেঁ পাবেত
 ছথি জে যোগী নোকনি
 কক নেন সেহো হৰত অছি । সহস্ৰ
 অশ্ৰমে যও আওৰ সোত
 ৰাজপেয় যতমিত কেঁ জাৰাগতক যন
 সোতহম কনাক
 ৰৱাৰ
 নহি ভয় সৰেত অছি । দিন আ
 ভয়ভীত জীক উল্লেখ
 কোনা সঁ
 ৰাণ
 ৰান পক্ষৰ সেহো সময় খন পৰ
 লক্ষী পাক
 ন্যম সঁ নৰক মে
 পকাৰন
 জায়ত ছথি । অহাঁ বৃষ্টি
 গিহু সঁ খায়ত
 বঁধোহী কেঁ দেহি
 ওকৰ
 ৰচায় মে সমৰ্থ
 বহিতক ওকৰ
 বধ নহি
 কেনক
 তাহি সঁ
 অহাঁ
 নিদিখী
 ঠামি
 পড়েত
 ছা, তে
 অহাঁ
 বাহুস
 ভয়
 জায় ।

হেৰাহা কহননি - হে মহামো ! হম ওহি ঠাম
 উপস্থিত
 প্ৰব্ধ
 চনক
 স্মৃদা
 হমৰ
 নজবি
 স্নেতক
 বধ
 মে
 নাগন
 চন
 ও
 নগ
 মে
 বহিতক
 গিহু
 সঁ
 মাবন
 জায়
 জনকা
 নহি
 জানি
 সকনক
 হমৰ
 দিন
 পৰ
 অধনেক
 অধুগ
 কৰ
 চাহী ।

তপস্বী ঐশ্বৰ্য্য কহননি - জে সব দিন
 গীতক
 গগাহম
 অধ্যায়ক
 জপ
 কৰেত
 ছথি
 জনকা
 সঁ
 অস্তিমিত্ত
 জন
 জখন
 ব্ৰহ্ম
 মস্তুক
 পৰ
 পঠত
 তহন
 অহাঁ
 ছাপ
 সঁ
 হুজ
 ভয়
 জায়ব ।

জ কহি তপস্বী ঐশ্বৰ্য্য চনি
 গেনাত
 আ ও
 হেৰাহা
 বাহুস
 ভয়
 গেন । হে
 দ্বিতাপ্ত
 । অহা
 চৰ
 আ
 গগাহম
 অধ্যায়ক
 অৰ্থক
 জন
 কেঁ
 অস্তিমিত্ত
 কক
 আওৰ
 অধনে
 হাথ
 সঁ
 বাহুস
 মস্তুক
 পৰ
 অস্তিমিত্ত
 জন
 কে
 চিঠ
 দিখুই ।

सुप्रिया जीक ज्ञान प्रार्थना सुविचारक कदम करण सँ छवि आयत । उ रङ्ग ब्रीक कहि इनका संग बाध्यक तज गेलाह । उ प्रार्थना योगी छलाह । उ विश्वकष मन्थन नाम सँ उ गारहमप्रणयक मनु सँ जन अलिमयित कऽ बाध्यक माथ पर जानतथिना गीतक अग्र्यक प्रलाह सँ उ धोषमजु तऽ गेलाह । उ बाध्यक देह लपति छर्चक कष प्रवण कऽ गेननि । ते ह्मणैष र्थैहीह लक्षण केने छत सेतो क्षीय, छसि अगि गदा प्रारण केने छडन कष तऽ गेलाह । उपेक्षा लउसर रिमान पर प्राकट लेलाह । तहन सुप्रिया जी बाध्य सँ कहतनि - निष्ठाचर ! तमर प्रस के छसि से देखाड । इनका एना कला पर दिछ दुकिराना बाध्यस कहतनि - ज्ञा के उमान सन प्रणम, छसि ज्ञकाप्रवी, मानिक मूलस सँ सुशोभित आ दिछ मणि निमित्त लालन सँ अर्तछत, तरप्रहिक ताक कारण जिनकर कंधा मानाते प्रतीत होयत छसि, ते सोनाक लकरद सँ रिन्दषित, कमल सन अर्षि, सिद्ध कर, हाथ ये कमल गेने दिछ रिमान पर देसन देरदु तऽ गेत छसि, जगत्प्रवण प्रव थीक । ज्ञा सुनि सुप्रिया उहि कष मे प्रव के देमतथिन आ इनका अपना घर नऽ जेवा छहतथिन । ज्ञा देसि इनकरप्रव हँसि केँ एना कऽ नग्नतथिन ।

प्रव कहतनि - सुप्रिया जी, कऽक रौंनि अहाँ सेहो ह्ये प्रव लेत छी । पहिले तम अपनेक प्रव छनहुँ, अर तम देरज तऽ गेतहुँ अछि । देहू ज्ञ निष्ठाचर सेहो छर्चक कष तऽ गेतथि । उ गारहम अग्र्यक माहात्म्य सँ ज्ञा सर नोकनि क्षीरिष्ठ प्राम जप बहल छसि । अहाँ सेहो प्रार्थनादर सँ गीतक उगारहम अग्र्यक अग्र्यन कर आ विरनुब जप करब बहल । एहि मे कोषो सँदेह नहि अछि के अपनेक एहिनपठम प्रति मितत । हे तपत । मनुष्यक तेत सपक्ष प्रकषक संग दुर्तत अछि । अग्रन अपनेक सेहो मित गेत अछि । तँ अपन अञ्जीष्ट सिद्ध कर । धन, लोग, दान, सउ, उपसा आ पूरुर्कर सँ की तेरमरुति सिद्धकपाग्र्यक पाठ सँ परम कल्याणक प्राप्ति तऽ जायत । पूर्णानन्दसन्देश सुकष क्षीप्रक नाम सँ उरुक सुख सँलक, जेस मे अपन प्रार्थ अर्जन के प्रति अमृतमय उपदेष्टमिळ छत इवह क्षीरिष्ठक परम जातिक कष थीक । अहाँ इनके चिनुन कर । उ मोक्षक तेत प्रसिद्ध बसायन थीक । संपरज्य सँ उरत नोकनि के प्राप्ति, जाप्रिक विषादक आ कऽकेण जन्मक इष के नग्नक अछि । तम एकर सिध दैसब कोनो एहन सपधन नहि देवेत छी तेँ उकर अलास कर ।

श्री महादेव की कहानी - जो कहि ७ सरहक संग श्रीरिद्धि-
धाम चति गेनाह। तहन मरिया की टाकनाक मन्थ सँ ७ हि प्रथम
के सुननि जेकरा महामो सँ ७ द्वन्द्व नैकनि रिद्धिधाम चविगेल
पारिती। एहि प्रकार अहाँ के एगारहम अष्टायक महामो कथा
सुनेनरु अछि जेकरा धरमपत्र सँ महान पाठकक पाठनरु
सँ जायत अछि।

— ० —

२.२.आचार्य रामानंद मंडल- हाल मियां/ जयंत (कौआ)के कथा



आचार्य रामानंद मंडल- हाल मियां/ जयंत (कौआ)के कथा

१

हाल मियां

मधुवन गांव मे तलेवर राय आ भोला मियां निक किसान रहलन।दूनु दस - दस बिघा के जोतनिया। दूनु गोरे के ट्रैक्टर।दूनु गोरे के दोस्तीयो रहे।

तलेवर राय के दूगो बेटा फुलेश्वर आ पुनेश्वर रहय त भोला मियां के एगो बेटी सलिमा आ एगो बेटा अमजद रहय।

सलिमा आ फुलेश्वर गांव के इस्कूल मे पढै। चूंकि दूनु के बाप के दोस्ती रहय।एकर प्रभाव भेल कि दूनु में खूब अपनापन रहे।दूनु पढे मेयो तेज रहय। दूनु आठवां पास कैलक त इस्कूल अपग्रेड होके+२माने कि उच्चतर माध्यमिक भे गेल।क्लास बढैत गेल,उमर बढैत गेल त अपनापनो प्यार मे बदलैत गेल।

दूनु इंटर पास क गेल।दूनु सुरसर डिग्री कालेज मे एडमिशन लेलक।आब त दूनु के प्यार परवान चढे लागल।दूनु बीए पास क गेल।सलिमा आबि घरे पर रहे लागल।

फूलेश्वर प्रतियोगिता परीक्षा पास क के राजस्व अधिकारी बन गेल।
फूलेश्वर आ सलिमा के बराबर मोबाइल पर बातो होइत रहय।

एकटा दिन सलिमा कौल कैलक।हेलो।

फूलेश्वर मोबाइल उठैलक आ बोलल -हेलो।सलिमा।

सलिमा -फूलेश्वर।कि हाल चाल हय।

फूलेश्वर -आइ कालि बड बीजी छी।

सलिमा-केहन बीजी।

फूलेश्वर -आइ कालि जातीय जनगणना में बीजी छी।

हर रोज सांझ ६से७बजे के बीच डीएम साहब के संग विडियो कॉन्फ्रेंसिंग
होइ हय।आ ओइमे दिनभर के रिपोर्ट देबे के होइ हय।

सलिमा -त खाली बीजीए रहै छ कि हमहूं याद अबैय छियो कि न!

फूलेश्वर -हं।सलिमा।जौ काज से फूर्सत मिलय।त तू याद अबैय छ।

सलिमा -हम त राति दिन तोरे प्यार मे डुबल रहय छी।

फूलेश्वर -सलिमा।याद त करा लेकिन प्यार न करा।

सलिमा -काहे।

फूलेश्वर -आबि तोहर निकाह होतो।अपना शौहर (पति)के प्यार करिहा।

सलिमा -हम त अपन शौहर तोरा के मानै छियो।आ तोहरे शौहर बनिबौ।

फूलेश्वर -इ केना होतैय।

सलिमा -इ बड आसान हय आ बड़ा कठिनो।

फूलेश्वर -केना।

सलिमा -हम्मर धर्म इस्लाम अपना लेवा त बड आसान।जौ न मानबा त कठिन।

फूलेश्वर -हम्मर परिवार त न मानतौ।

सलिमा -परंतु हमर परिवार त आसानी से मान लेतौ जौ तू इस्लाम धर्म अपना लेवा।न मानबा त कठिन हो जतौ।

फूलेश्वर -सलिमा।हम तोरा प्रेम में इस्लाम धर्म अपना लेब।सुनले-पढले त छी जे बहुत लोग इस्लाम धर्म के लरकी से मुहब्बत आ बिआह के लेल इस्लाम धर्म अपना लेलक।मुगलकाल मे त जमींदार आ छोट छोट राजा महाराजा आ शासन मे उच्च पद पाबे के लेल इस्लाम धर्म अपना लेल कै।सुफी फकीर के शिक्षा सेयो इस्लाम धर्म अपना लेल के।

अपने जिला के परसौनी के राजा मुसलमान हय जे पहिले हिंदू रहय।एगो मुसलमाननी लरकी के प्यार मे इस्लाम धर्म अपना के मुसलमान बन गेलेय।

सलिमा -एते कथा हम न जनय छियै।एते जनय छियै की कोनो इस्लाम धर्म के अपनैतै त वोकर बिआह मुसलमान लरकी से हो सकैय हय।

फूलेश्वर -त हम तोरा से बिआह करे लेल इस्लाम धर्म अपनाबे के लेल तैयार छी।

सलिमा -त सात दिन के छुट्टी लेके घर आबा।

सलिमा -सब बात अप्पन अम्मा आ अब्बा के बतैलक।

अम्मा -अब्बा राजी भे गेल। अम्मा -अब्बा बोलल कि अपना धर्म मे त इ आम बात हय। लेकिन हम अप्पन दोस्त तलेवर के जरूर बताएब।इ न कि हम दगा देलियन हय।हम अपना धर्म के रीति रिवाज के बतैबै।

हम्मर दोस्त के धर्म मे दोसर धर्म के लरकी से बिआह कठिन हय।

आइ भोला मियां अप्पन दोस्त तलेवर राय के इंहा गेलन।

तलेवर राय -आउ दोस बैठू।कि बात हय।

भोला मियां - हम्मर बेटी सलिमा आ अंहा के बेटा फूलेश्वर एक दोसरा के प्रेम करैत हय आ दूनू बिआह करय चाहय हय। सलिमा हमरा सभ बात बतैलक हय। हम्मर परिवार त राजी हय। हमरा सभ मे त केवल दूध बारल जाइ हय।दोसर धर्म के लरकी आ लरका हम्मर धर्म इस्लाम अपना लेतेय त विआह मे कोनो अड़चन न हय। अंहा के त धर्म मे दिक्कत हय। अंहा हम्मर दोस छी। अंहा के सभ बात के जानकारी देनाइ हम्मर फर्ज हय।

तलेवर राय -हम कि कहू दोस।हम त आवाक छी।आबि फूलेश्वर पदाधिकारी हय। कानून के जानकार हय। हमहूँ बूझैय छी कि कोई व्यक्ति कोई धर्म अपना सकैय हय।हमहूँ कोनो विवाद न करैय चाही छी।जे बात से बतंगर हो जाय।

भोला मियां -त चलैय छी।बिआह के सर्वजान करै के हय।

फूलेश्वर सात दिन के छुट्टी लेके सलिमा के घर आ गेल।

आइ भोला मियां अपना घर पर मिलाद के आयोजन कैलक।मोलवी साहब फूलेश्वर के कलमा पढैलक। फूलेश्वर के नाम फूलचन मियां राखल गेल।एगो मियां -बीबी जे सलिमा के फूफा -फूफी रहय। फूलचन मियां के अब्बा -अम्मी बनके गवाह बन लन आ सलिमा के अब्बा -अम्मी गवाह बनलन। सलिमा आ फूलचन मियां एक दोसर के कबूल कैलन।

फूलचन मियां के मुसलमान हज्जाम सुन्नत कैलक।

गांव के सभ लोग फूलेश्वर के हाल मियां फूलचन कहय लागल।

२

जयंत (कौआ)के कथा

(बाल्मीकि रामायण आ संत तुलसीदास रचित रामचरितमानस मे मतभिन्नता!)

बाल्मीकि रामायण के सुंदरकांड मे अशोक वाटिका स्थित सीता हनुमान जी से कौआ वाला घटना बतैले रहथिन -पहचान स्वरुप जे भगवान राम के विश्वास हो जाय कि हनुमान आ सीता से भेट भेल रहय।

इदं श्रेष्ठमभिज्ञानं ब्रूयआस्त्वं तु मम प्रियं।

शैलस्य चित्रकूटस्य पाले पूर्वोत्तरे पदे ॥१२॥

स तत्र पुनरेवाथ वायसः समुपागमत्।

ततः सुप्तप्रबुद्धां मां रआघवआंगत् समुत्थिताम्

वायसः सहसआगम्य विददार स्तनान्तरे।।२२।।

पुनः पउनरथओत्पयं विददार स मां भृशम्।

ततः समुत्थितो रामो मुक्तैः शोणितबिन्दुभिः।।२३।।

स मां दृष्टवां महाबाहुर्वितुन्नां स्तशयोस्तदा।

आशीविष इव क्रुद्धः श्वसन वाक्यमभाषत।।२४।।

केन ते नागनासोरु विक्षतं वै स्वानान्तरम्।

कः क्रीडति सरोषेण पंचवक्त्रेण भोगिना।।२५।।

वीक्षमाणस्ततस्वं वै वायसं समवैक्षत।

नखैः सरुधिरैस्तीक्ष्णैर्मामेवाभिमुखं स्थितम्।।२६।।

रामचरितमानस के अरण्य काण्ड के प्रथम चौपाई में जयंत(कौआ)की कथा हय।

एक बार चुनि कुसुम सुहाए।निज कर भूषण राम बनाए।

सीतहि पहिराए प्रभु सादर। बैठे फटिक सिला पर सुंदर।

सुरपति सुत धरि बायस बेषा।सठ चाहत रघुपति बल देखा।

जिमि पिपीलिका सागर थाहा।महा मंदमति पावन चाहा।

सीता चरन चोंच हति भागा।मूढ मंदमति कारन कागा।

चला रुधिर रघुनायक जाना।सीक धनुष सायक संधाना।

अइ प्रकार बाल्मीकि रामायण आ संत तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में जयंत (कौआ) के कथा मे मतभिन्नता हय।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह भासा के न बांटियो। २०२२ प्रकाशित रचना - सझिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गान। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढी। स्थायी पत्ता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढी। वर्तमान पता-पिपरा सदन, मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल-ramanandmandal001@gmail.com*

ऐ

रचनापर

अपन

मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

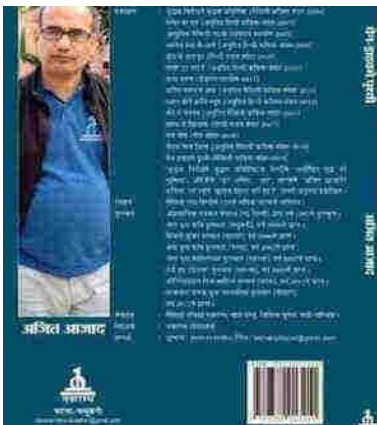
२.३.लालदेव कामत-साहित्य अकादमी परेखलनि - पेन ड्राइवमे पृथ्वी कैं/ मखानाक गुण बुझू/ मिथिला में माछ, रोजगारके सर्वसुलभ साधन भय सकैत अछि/ पानक बड़ेब/ औषधीय गुण मौधमे/ रंगपुरमे जगूक परियासः एक विश्लेषण



लालदेव कामत-साहित्य अकादमी परेखलनि - पेन ड्राइवमे पृथ्वी कैं/ मखानाक गुण बुझू/ मिथिला में माछ, रोजगारके सर्वसुलभ साधन भय सकैत अछि/ पानक बड़ेब/ औषधीय गुण मौधमे/ रंगपुरमे जगूक परियास : एक विश्लेषण

१

साहित्य अकादमी परेखलनि - पेन ड्राइवमे पृथ्वी कैं



२०२२ लेल साहित्य अकादमी दिल्ली केर मैथिली मूल पुरस्कार मैथिलीकर्मि अजित आजाद (मिथिला) जीके हुनक मैथिली कविता संग्रह पोथी " पेन - ड्राईवमे पृथ्वी" केँ देल जेबाक घोषणा भेल। एहि जनतव सँ युवा वर्ग बीच आ साहित्य सेवी जन बीच चौतरफा स्वागत भेल अछि। बिहार सँ आजाद उर्फ पप्पूजी केर सँगहि दोसर पुरस्कृत हिन्दी कविता संग्रह ' तुमरी के शब्द' केर कवि व प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिक बट्टी नारायण (भोजपुर) केँ साहित्य अकादमी सचिव श्री निवास राव द्वारा घोषित भेलासन्ता २३ भारतीय भाषाके लेखकगणक प्रशंसक बीच खुशी क' वातावरण बनलैक। १ जनवरी २०१६ सँ ३१ दिसम्बर २०२० धरिक पहिलखेप प्रकाशित पुस्तक पर विचार कयल गेलैक। एहि पुरस्कार में ताम्रफलक, शॉल आ एकलाख टाका विशेष राशि समारोह में देल जाईछ। आरो कविता संग्रहमे बोडो- रश्मि चौधरी, मणिपुरी- कोइजम शांतिबाला, ओड़िया गायत्रीबाला पांडा, संस्कृत- जनार्दन पांडेय 'मणि' , संताली- कजरी सोरेनकेँ माध्यम कयल गेलैक अछि। कहानी संग्रह में असमिया- मनोज कुमार गोस्वामी आ पंजाबीमे सुखजीत केँ सम्मान भेटलनि अछि। उपन्यास विधामे अदहा दर्जन लोक सम्मान पेयलथि यथा_ अंग्रेजी- अनुराधा राँय, कोकणी- माया अनिल खरंगटे, मराठी- प्रवीण दशरथ बांदेकर, तमिल- एम राजेंद्रन, तेलुगू- मधुरांतकम नरेंद्र, उर्दू- अनीस अशफाक। समालोचना क्षेत्रमे कश्मिरीके फारूक प्याज, मलयालम- एम थाँमस मैथ्यू, आत्मकथा लेल गुजराती में गुलाम मोहम्मद शेख आ लेख संग्रह लेल कन्नड़मे - मुडनाकुडु चिन्नास्वामी , साहित्य इतिहास में सिंधी सँ कन्हैयालाल लेखवाणी आओर नाटक विधामे क्रमशः डोगरी- वीणा गुप्ता , नेपालीमे - केबी नेपाली, आ राजस्थानी'क कमल रंगा केँ अवार्ड भेटब सुनिश्चित भेल रहय से समय सँ भेटल हन्। सन् २०१८ में नवारम्भ सँ प्रकाशित २५६ पृष्ठक किताबक दाम २०० टाका निर्धारित करैत अपन काव्य संग्रह में १८५ गोट कविता केँ अजीत जी पाठक समक्ष अनने रहथि। २००६ सँ पूर्व हिनक एकोगोट पोथी

नँय छपल रहनि। आब तँ आजाद जीके अपन पोथीक संख्याँ ३० टा सँ बेशिये छैक। कविता विधा में हम गप्प करय चाहैत छी, ओहिमे चर्चित पोथी सात गोट छपल छैन जे हुनक अपन नवारम्भ केर इतर आनो ठाँव सँ छपल छैक। हिनका कविताक पात्रमे एहि पाँतिक लेखक सेहो समान्य पाठकके अभरत। मैथिली परामर्शदात्री समिति क' संयोजक डाँ० अशोक झा अविचल आ तीन सदस्यीय निर्णायक मंडल डॉ देवकांत झा,शेफालिका वर्मा आ मंत्रेश्वर झा १३ टामे ऐ पोथीके सर्वसम्मति सँ चयन केलनि। हिनक समकालीन मैथिली कवितामे देशज शब्दक माध्यम सँ विनु छुबल विषय केँ शिल्पक विविधता संग व्यक्त विचार प्रतिरोध आ प्रेम मूलतः रहलनि अछि। आम जन केर सरोकार सँ प्रमुख भुमिका रूपे देखाइ छथि। पुरस्कार पाबै बालामे ई बेशीतर घुमक्कर आ मंचीय उपस्थिति लेल देशक कोना - कोना छान मारैत देखाइत अयलाह,जे सबसँ अलग पहिचान भेलनि। सगर रात्रि दीप जरय "कथा गोष्ठीक" आयोजन अपन गाम - हटनी सँ ल'केँ राज्यक राजधानी धरि अतितमे कयने छथि। कतेको साहित्यिक मंच आ नाट्य मंच पर अपन बेढप छाप छोरि दर्शक आ श्रोताक हृदयमे जगहधरि बनेने छैथ। आब तँ प्रकाशन आ मैथिली फिलिममे सेहो पकठोस जकाँ जमल छथि। मैथिली भाषा पत्रिका - नवारम्भ,बाल- बन्धु, मिथिला सृजन ,सखी- बहिनपा 'क सम्पादन करैत आबि रहलाह अछि। बहुतो राश पुरस्कार अपना नामे अजीत मिश्र जी अर्जीत कयने छथि,ताहीमे ई साहित्य अकादमी पुरस्कारोक ठप्पा लगने आरो परिष्कार भ' गेलाह हन्। हिनक कविताक अनुवाद हिन्दी, अंग्रेजी,उर्दू,बंगला आ नेपालीमे भेल छन्हि। आरम्भिक दौरमे हिनक कवीता "एशिया-मैत्री आ समता प्रेस सर्विस में हम सम्पादकक हैसियत सँ छापने रहियैक। आब आर्थिक सुदृढीकरण लेल एक खानगी कम्पनीमे निदेशक पद पर चाकरी करैत समय खेपैत छथि। हिनक पेन-ड्रावमे पृथ्वी पोथीक पहिल कवीताक 'शिर्षक' बेबी किछु नहि केर पाँति देखल जाय-: नहि,एतेक प्रशंसा नहि

नहिं, एतेक निन्दो नहि
नहिं, एतेक भुख नहिं
नहिं , एतेक तृप्तियो नहिं

दोसर पाँति द्रष्टव्य अछि, आखिरि पन्नाक कवीता "शिर्षक" छोड़िए जायब
सँ!

थोड़ेंक बरसात
थोड़बा सुगन्धि
फाँटमे पड़त हमरा

थोड़ेंक रोग
थोड़बा-थोड़ भोग
सेहो पड़त संख्या

एहि तरहँ कम पाँतिक आ दू पन्नियाँ कविता सँ भरल पैघ कवीताक पैघौत
तत्कालीन परिवेशमे अपन पराकाष्ठा देखबैत रहत। आजाद भाय उर्फ
पप्पुजीके विशेष मंगल कामना रहत। ओ शिघ्र दादा साहब फाल्के पुरस्कार
सँ अलंकृत होथि से मन लागल है।

२

मखानाक गुण बुझू

स्वर्गहुमे दुर्लभ कहल गेल अछि, जे मिथिला में ढाकीक ढाकी भेटैछ-मखान ।
मखानमे उसना-अरबा फुटायब महाग मुशकिल। पान, माछ आ मौधक वाद

मखानेक चर्चा मिथिलांचल में पबैत होयब। ई एतुका विशेष पहचान छी। एहिक सेवन सँ अनेको फ़ैदा होईछ। मछुआरा समुदाय एहिक उत्पादनमे लागल रहैत छैथि।पोखैर आ डबरामे तैयार बिया बाउग कयल जाइछ।मखाना पौधके सेहो स्थानांतरित कय रोपल जाइछ।मखाना संग सिंगहार फलक अनुवर्ती खेती क'सकैत छी।जलमे गाछ बढैत फुल कमल सन आ ओहिमे ५ दिनक वाद सं फल नमहर होइत जाइछ। एक फरमे १५-२० टाधरि बीया होईछ। एहि पाकल करिया बियाके खायल जाइछ आ आगिमे भुजि मटरदाना सन बीया पर काठक मरिया सँ चोट दैत लाबा बनाओल जाइछ। पोखरिमे जुआयल फल जे काँट सँ भरल रहैछ,सितम्बर-अक्टूबर मासमे पानिसँ समेटके बाहर कयल जाइछ। गहींर पैखरि सँ पानिमे डुबकुनियाँ दैत नीचा खरड़ल जाइछ। दम साधिके लगधक २ मीनट पर पुनः ओहिक्रम केँ दोहराबैत कठिनता सँ जमा कयल जाइछ। मखानक जैड़कंदमे सीर होइछ। पुरनी पातसन पैघ पता जाहिमे तरकाभाग आ डांटतकमे कांट रहैछ। मार्च माह में प्लाँटिंग कयला वाद जुलाई-अगस्त धरि एक एकड़ रकबामे लगधक १० क्विंटल बीया भेटैछ। जाहि सँ लगधक सात क्विंटल मखानलावा तैयार होइछ। पौने दूसय टाका किलो बिकैछ, मोल ल'केँ दक्ष महिला श्रमिक (मलाहीन - गोंडी) पौने पांच सय टाका किलो मखान बैचैत छैक। भाव दुर्गा पूजा आ कोजगरा पाबैनमे कम बेसी होइत रहैछ। मखान १०किलोक बोरा में राखि बजार पठाउल जाई छैक।जहिना धराधाममे ४००० लगधक जीव जन्तु अछि,तहिना जलचर रुपे तीनगुण अधिक जीव जन्तु रहैछ। किछु विषैला साँप आ दोसरो प्रजाति जल मजदूर लेल संकट उत्पन्न करैत छैक। ताहि सँ सूरक्षा रखैत सावधानी बरतबाक होयत छैक। शहनी-निषाद लेल सरकारी पोखैर सैरात देल जाइछ। नीजी पोखरिया हसामी सँ सेहो बर्गादार रुपें लीज पर लैत वा मनखप पर मखानक खेती करैत पाउल गेल अछि। मखाना सघन रुपे मैवीकछुआ,नवानी,ठाढी,दीप गोधनपुर ,सुखेत,

उसराइर, झंझारपुर मखहट्ट, मनीगाछी मदबनी आ दरिभंगामे उत्पादन होइछ। महिला सशक्तीकरण एहि दिशामे भ' रहल अछि। सखी बिहार संस्थाके सुमन सिंह जी एहिक प्रसंस्करण में आगू बढिकय मिशाल बनलैक अछि। मखानक खीर बढ प्रसिद्ध छैक। मखान मिनरल आ न्यचट्ट्रियंस सँ भरल छैक। एहिमे आयुर्वेदिक औषधिय गुण छैक। प्रोटीन १०प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट ७५ प्रतिशत केर अतिरिक्त आयरन, फास्पोरस आ केरोटीन सेहो छैक। एहिमे वशा नाममात्र रहने हाईव्लड प्रेशर आ मधुमेहक' मरीज लेल अमृत समान अछ। मखान चिकस सँ हलूवा आ बीया भुजिकय परशौतिके तागत लेल देल जाइछ। जोड़लगक दर्द आ एगजीमा वला हौहैटमे मखानक पता पीसके लगौला सँ लाभ होईछ। मखान आर्गेनिक हर्बल कहाबय लगल अछि। एन्टीअक्सीडेंट गुण सँ भरल मखान सँ जीर्ण, अतिसार, ल्यूकोरिया शुक्रानुक कमी, डारक दर्द नियंत्रण में असरदार रहैछ। एहिमे विटामिन बी सेहो रहैछ। संतनगर डिहबार स्थानक बड़की पोखैरमे घनगर मखानक पात पर सौरा-बुआरी माछक सुकठी स्वतः देखबामे आयल, जे छटपटाइत जल समाधि नहिँ ल' सकल रहय। मखान बनाबय में लागल लोक किछ आन उत्पादक जेकाँ मिलाबट नहिँ करैत अछि। माछ अलग आ मखान अलगे रखैत य । तँ पुरस्कारक भागी अछि। एहि विषय पर सहचिन्तन होयव आवश्यक छैक। दिल्ली में सुपर बजारमे फोंकगर मखान जे भेटत से बिहार सँ निर्यात कयल जाइछ। पूजा लेल खुदरामे हटनीहाट पर १०० टाकामे २०० ग्राम मखान किडीफेंटल भेटैछ। मखानक उत्पाद आब हवा जहात सँ विदेश निर्यात कयल जाईछ। सिपौल सहरसा जिला में एहि खेती में उत्साह सँ युवा पीढ़ी लागल अछि।

मिथिला में माछ, रोजगारके सर्वसुलभ साधन भय सकैत अछि

मिथिलामें पान-माछ, मौध-मखान केर महिमामंडित चर्चा परस्पर होइते रहैछ। माछ तँ दशावतारमें सँ एक छैक, तँ वैष्णवजन साकठकेर अपेक्षा माछसँ दुरे रहैत अछि। हिन्दू समाज छुतका (अशौच) पड़ला पर माछ बारने रहैछ। 2001 ई में हम माछ पालन केर नव विषय बूझय लेल महाराष्ट्रक रत्नागिरी जिलान्तर्गत आरेगाँव (डापोली) गेल छलहूँ। खाड़ाजल आ मीठगर जलमे माछक अलग-अलग प्रजातिक निकसँ पालन पोषण कयल जाइत छैक। प्राउन टाईगर पर हम आनदिन कहियो गप्प करब। एखन हम अपना माँटिपानि पर एक पोखरिमे छह तरहक माछक थर पोसि सकैत छी, ताहि सम्वन्ध में वृहद रूपे चर्च करैत छी। मिश्रीत माछ पालन तकनीकमे रौह, भाकुर (कतला), नैनी(मृगल) देशीक संग-संग विदेशी कार्प यथा-: सिल्वर, ग्रास आ कौमन एकेसंग पोसल जाइत अछि। भारतीय मेजरकार्प केर स्पॉन्ज बा छबरा बच्चा जकर पालन मात्रे तीन तरहक जेना रोह भाकुर आ नैनी टाक परमारागत रूपे होयत अबैत रहय, से आब ओहिक संग-संग तीनू तरहक विदेशी कार्प सेहो हुअय लगल अछि। छः तरहक पोसल गेल माछक रहन-सहन आ खानपीन अलग-अलग परतमे होईछ। एक दोसराक भक्षण तत्व सदा सर्वदा पृथके रहैछ। माछक जीरा खसाबै सँ पूर्व पोखरि वा जलाशय सँ जलीय पौधा जेनाकि कुमहि, केचली, मलकोका, कमल पुरनीपात (भैंट) आ करमी लती-मखान आ सिंगरहार, लीली छानिके निकालि साफ राखक होयत। हाईट्रीला, दुईब, नाजा, लैम्ना आ बर्सिम घास सँ विदेशी कार्प अपन चारा चरौर करैत य। पुरक अहारमे पहिलखेप एक एकड़ जल क्षेत्र लेल पशु गोबर 800 क्विंटल तकरबाद मासेमास 4 क्विंटल दैत रहबाक छैक। यूरीया 10 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 8 किलो आ पोटाश 2 किलो दैत रहबाक

होयत। पहिने जैविक खाद्य तकर 15 दिन वाद रसायनिक उर्वरक देलासंता जौ जल हरियर कचोर भऽ जाय तँ खाद देब' रोकि देना चाही। पोखरि सुखल होय तँ जोत करेलाक बाद भरकलचून आ सरिसो, मुमफली-मौहक खैर गोबरक कम्पोष्ट खाद देलाक बाद पानि बर्साक वा पम्पसिट मशीन सँ भरल जाय। नम्हर जलग्रहण क्षेत्र जे सुखय नहीं, ताहि भरल पोखरिमे 1000 किग्रा प्रति एकड़ खैर देल जाय। आ पहिले सँ विद्यमान अवांक्षित माछ यथा टेंगरा-पोठी, चन्ना-चेलबा गरई, सौरा बुआरी, सिंधी-मांगुर, कांटी जालसँ निकालि लीअ, अहरामे सेहो हिस्सा पाउत आ जीराकेँ सेहो भक्षण करत। जल जौ कनियौ क्षारीय होअय तँ 100 किग्रा प्रति एकड़ दर सँ मिजहायल चुन जलमे छिटल जायबाक चाही। एक अंगुरीक आकार (4 सँ 6 इंची) केर जीरा 2000 प्रति एकड़ एहि अनुपातमे संचय कयल जाय-: 300 नग 300 भाकुर, नैनी, सिल्वरकार्प आ ग्रासकार्प देल जाय संगहि 400 नग 400 रेहू आ काँमन कार्प पालन कयल जाय। माछक एहिसँ नीक बृद्धि आ रोग सँ बचाउ स्वतः भऽ जायत। झटदय बढ़य लेल पूरक अहरामे सरिसबक खैर, चाउरक गुड़ा भोर-साँझ देल जाय। डेढ़ किलो पहिले माससँ शुरु करबतँ साल लगैत-लगैत पौन दस किलोधरि बढ़िबैत आबि जाऊ। दुइब घास मकईके पतासी आ हाईड्रीला देबाक अछि। पूरक चारामे मेंथी भुइज कए दोखैर ली ओहि में 1 प्रतिशत एग्रीमीन फेंट कए माछके परोसू तँ बढ़ बरहत। सालभरिमे 1 किग्रा फरी भ' जायत तँ शिकरमाही क' निकालि सकैत छी। बजार भाव माछक देखकए बा लगनमे आढ़त अयला पर प्रति एकड़ 1000 सँ 1500 किग्रा उत्पादीत माछ बेच सकैत छी। किछु शिक्षित बेरोजगार युवक हमरा संगे सिंहेश्वर स्थान (मधेपुरा) पशुमेलामे माछ पालनक विशेष जानकारी लेलनि। हमतँ छोट तलाब सेहो बनेलहूँ, जाहिमे एहि प्रजातिक माछक बढ़बार कम भेल, तँ बादमे थाई मांगुर आ अमेरिकन कबई पालनक काज बेराबेरी सेहो 1990 केर दशकमे केने छलहूँ। नामगर बेशी ,चौड़गर कम बाला पैघ पोखरिमे

एहि तरहक माँछ पालन कय आर्थिक बढ़ोतरी कए सकैत छी। एहि संदर्भ 45- जिप घोघरडीहा दक्षिण क्षेत्रक सदस्य आ जिला उत्पादन समितिक सदस्य श्रीमती मंजू देवी सँ भेंट करैत कारोबारी लेल सरकारी ऋण मुहैया कोन तरहे भ' रहल छैक, से जनबाक चेष्टा केलहूँ। घोघरडीहा प्रखंड आत्मा कमिटिक अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार जी सँ सेहो माछ पालनक दिश बेरोजगारक प्रशिक्षण संबंधमें सम्पर्क स्थापित कयल। आब जौं माछ पौसब केर शोख अछि तँ बड़का टबमे सेहो पोसनाय केर विधि विकसित भेल हन। एहि बाबत जिला मत्स्य, मुख्य पदा आ कार्यपालक पदाधिकारी मदत करताह। मनरेगा सँ नीजी भूमीमें पोखरिक निर्माण करब एहि समयमे सार्थक डेग बढ़ायब होयत। मत्स्य पालन लेल बिहार सरकार'क अति पिछड़ा तबका केँ 90% ऋणमे अनुदानक घोषणा भेलनि अछि।

४

पानक बड़ेब

एकटा गीतकार खा कए मगहिया पान यौ पाहुन हम्मर, जान किए लड़ छी। जान किये लड़ छी, प्राण किए लड़ छी... संगीत सुनि मिथिलामे पानक चलनसारि आ महौत तेकर नियमित उपयोगक मोन सहजे पड़े अछि। से ललिचगर पान सर्वत्र चौक चौड़ाहाक पसलपर सभ तरहक भेटि जाइ छइ । परञ्च एहनो सौखगर पानखेनिहारक कमि नहि जे पानक भरल दोकानमे अपना हिस्सक केर मीठगर पत्ता पान नहि भेटने औनाइत-पड़ाइत अछि । पानक महिमा अति प्राचीनकालसँ शास्त्र- पुराणमे सेहो भेटैत अछि। अइ लेल एकर उद्भव आ उत्पादनपर विचार करब परम आवश्यक बुझाय पड़ल। तँए मुहँक लाली 'पान' आओर तेकर जैविक खेती केना भऽ रहल छै से सन्तनगर, तमुरिया आ मटरस आदि मधुबनी जिलाक गाममे ब्रेब देखए परिभ्रमण केलौं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ पान एकटा वनस्पति थीक। ई आठ वर्षीय सदाबहार लत्तीदार एकलिंग श्रेणिक बेल (लती) छी। पान भारतीय इतिहास आ परम्परासँ बड़ लगीच जुटल छइ । एकर उद्भव स्थल मलाया द्विप थीक । पानकेँ संस्कृतमे ताम्बूल, तेलगूमे पक्कू, तमील आ मलयालमने बेटिलाइ एवं गुजरातीने नानुस्खेल कहल जाइ छइ । हरियर पानक पत्ताके सेवाद्वारा उजर बनाएल जाइ छै, तेकरा बहुत पाकल वा सफेदपान कहल जाइ छ। बनारसमे पानक सेवा बड़ श्रमसँ कएल जाइ छइ । मगह केर एकटा पानक नश्लके केतेको मासधरि बड़ जतनसँ ओरियाके पकाउल जाइ छै, जकरा मगही पान कहल जाइ छइ । ओ अत्यन्त मूल्यवान आ सुस्वादू कहल गेल हेन । एकर पाँच प्रमुख प्रजातिक नाम थिक बंगला, मगही, साँची, देशावरी, कपुरी आ मिठापता । डांटकी लागल छुट्टापान पूजागे देव पितरक चड़ौल जाइ छ। गृह गोसाईंके विशेष अनुष्ठानमे डबल आ ट्रिपल मुड़ीबला पानक काज पड़े छे से 5 गुणा बेसीदाममे बड़ कठिनाइसँ भेटै छइ खाएर (कथा) चुन सुपारीक योगसँ बिरा लगाउल, पानखिल्ली मुँहक सुन्दरता-सुगन्धि आ शुद्धिक संगे श्रृंगार बढ़बै छइ । पान चिबाकऽ खाएल जाइ छै, जइमे सोहनगर जर्दा (तमाकूल) अनेक तरहक मशाला, लौंग-इलाइची, भुजल नारिकेल आ मीठाक लेल रसना-हीरामोती सौंप अवश्य देल जाइ छइ । चेन्नइ दिसन बिनु कत्थो पान खेबाक प्रचलन बढ़ल छइ । ओना मिथिलामे सेहो पान जोड़ा खिली कल्लामे दबेलाक बाद ऊपरसँ मिझाएल चून डांटने लगा कए चटैत देखेमे अबैछ । भोजनोपरान्त पानक बीड़ा वा खिल्ली तथा गछपानक छोट खिलि शोभाकारी मानल गेल ऐ। तम्बाकू (जर्दा) केर संग नियमित पान खाइत खाइत लोक प्रायः एकर व्यसन भऽ जाइ छै, जे अभ्यास बिनु दाँत खराब केने आ रोग एवं दुर्गन्धक कारणेँ छोड़त नहि ।

ओना पानमे औषधीयगुण सेहो प्रचुर मात्रामे रहै छइ । कड़गर मोलाइम छोट पैघ रुखगर आ सागपातसन पानक सुआद कटु कषाय तिक्त आओर मधुर होइछ । पानमे रसायनिक गुण पाउल जाइ छइ । अइमे वाष्पशील तेलक अतिरिक्त अमीनो अम्ल, कार्बोहाइड्रेट आ किछु विटामिन प्रचुर मात्रामे रहे छह पान औषधीय गुणक बखान तँ चरक संहितामे खूब भेल अछि। देहाती क्षेत्रमे पानक पत्तासँ घाघौस फाँकर केर उपचारमे पुल्टिसक रूपें साल जाइ छइ हितोपदेश के अनुसारे बलगम कफ हटेबाक लेल मुखसुद्धि, अपच, सांश रोगक निदान होइछ।

५

औषधीय गुण मौधमे

शुध्द शहद मधुमाछी सँ प्राप्त होइत अछि। मिठास सँ भरल मौध द्रव्य रहितो एहिके लिटर मापक सँ पृथक किलोग्राममे वजन कएल जाइ छइ । मधुमक्खी पालक 150 सँ 500 टाका दर पर मौध बेचैत अछि। मौध सेवन एक व्यस्क लोकके 30 सँ 50 ग्राम, बच्चा लेल 10 से 15 ग्राम आ वृद्धजन लेल 20 से 30 ग्राम अनुशंसा कएल गेल अछ । लोब्लड प्रेशरमे तुलसीपातक एक चम्मछ रशमे दू चम्मछ मौध फेंटकय सेवन करबाक होएत। हाईव्लड प्रेशर (उच्च रक्तचाप) के मरीज 4 से 6 जवां देशी लसुन छोइलका हटाके मौध दू चम्मछ के संग भोरकय नीतरोज जलखै खायसँ पहिले सेवन करैत रहबाक चाही, एहिसँ हृदय गति व्यवस्थित रहैछ। डायबिटीज़ (मधुमेह) मे त्रिफला चूर्ण मात्रा 300 ग्राम, सुखल धातृ, केशर 200 ग्राम, 100 ग्राम हरें कुइटके मिहीं करैत मिला लिअ, एक चम्मच चूर्णमे दू चम्मच मौध फेंटकय जलखै केलाक अदहा घन्टा वाद खाऊ। एहिसँ पेटक रोग कम होइत किडनी क्षति नँय होएत। मोटापा कम करैयमे योगाक अतिरिक्त कोनो वासनमे 4 गिलास इनहोर

जलके (शुशुम गर्म पानि) कऽ लिअ, ओइमे दू चम्मछ मौध आ कागजी नेबोक रस 20 बूंद नीक सँ मिलाबैत भोरमे रसे रसे पीयल जाए, बचल इनहोर के कने सरेलाक बाद ईक्षानुसारे सब सेवन करी । एहिसँ शरीरक कैलोश्टोलक मात्रा घटत, संगहि उच्च रक्तचाप सेहो घटैत अछि।

मोटर (देहगर-दशगर) होयबा लेल एक गीलास दुधमे एक पैघ छोहारा क' टुकरी-टुकरी कएल आँट लिअ, हलुक ठंडा भेलासन्ता दू चम्मछ मौध फेंटकय रातिमे सुतय सँ अदहा घन्टा पहिले पीयल जाइ। एहिसँ रक्त अल्पता दुर होइछ । मौधमाच्छी पोसब केर तात्पर्य:-

विधिवत ढंग सँ मौधमाछीके काठक बक्सामे पोसल जाइछ, एहिक आदैत केँ समझैत-बुझैत एकरा आवश्यकता केँ समयानुसार पुरा करैत हुअय , कम कष्ट पहुँचाबैत वेसी सँ बेशी लाभ प्राप्तिके आधुनिक व्यवसायिक मौधमाछी पालन कहल जाइछ। आधुनिक व्यवसायिक मौधमाछी पोसब एकटा लाभप्रद व्यवसाय छी। बहुत तरहक मौधमाछीमे मुख्यतः निम्न प्रकार सँ मौध भेटैछ।(१)एपिस फ्लोरिया-:ई जंगली मौधमाछी होइछ,जे पोसल नहिँ जाइछ। ई एकल छत्ता बनाकय स्वतःजंगली जेकाँ साफ तरहँ रहैत अछि,ऐ केँ अन्हार नापसिन छैक। ई निकहा मौध दैत छैक। मानव सभ्यता प्रगैतिहासिक कालमे जहिया आगिक अविष्कार नहिँ देखने होथि,तहिया सँ ओ अमृत मौधके चिन्हैत एहिक उपभोग करैत आयल छैक। एहिक उपयोग कय वलिस्ट व रोगमुक्त रहथि। ई मौधमाछी पोसब संभव नहिँ भ' सकलैक,कियाक तँ ई पालतु नय छी।छोटसन एकल छत्ता बनबैत ओहिमे १००-५००ग्राम निठुर शुध्द मौध दैत छैक। एहिक खोता नहिँ तोड़बाक चाही,किनको घर टुटैत छैक तँ बढ दुःख होइछ से एकरो होइछ। ई विभिन्न फुलपर बैसकय रस चुसैत फसिलक पैदावार बढ़बामे कृषक केर हित कीट छी। औषधि रूपमे ई उन्नत प्रभेद अछि। (२)एपिस डोरसटा-:आ भौड़ा मौधमाछी उँचगर जगहमे एक गाछ पर ५-१० सँ बेशी छत्ता लगबैत छैक। ईहो

उपर मौध आ निचला खोइमे अंडा बच्चा राखैत अछि। ई बड़का अकारक जंगली मौधमाछी पौसल नहिँ जा सकैछ। एक छतामे ५-१० किग्रा०मौध भेटैत छैक। ई खिहारिके पानिमे डुबिके बिन्हैत छैक। कदाचित खोता जगायल वा चरचाँचर राहमे अकस्मात मौधमाछी घेरय तँ दूनू हाथ सँ मुँह चेहरा झांपैत पटगरे परि रहु आ दम साधिके कनेक काल शांस रोकबाक चेष्टा कयलापर ओ सब आपस घुमि जाइछ। करोरी लोक दिनमे भजियबैत अन्हार भेलासन्ता नीचा प्लाष्टी बिछबैत बाँसमे लुका लगाकय धधरा देखबैत कमल ओढि नर्सरिया लगाकय मौध जुबताए केँ निकालैत छैक। निचा खसल मौधक दुरुपयोग सेहो रोकल जाइय। मोट भाग निचा सँ अंडा बच्चा आ सटले उपरका पातर भागमे मौध रखै य। (३) एपिस सेरेना इंडिका-: ई भारतीय मौधमाछी अन्हारमे रहैछ। ७० केर दशकमे खादी बोर्ड एहिक पालन लेल जद्दोजहद कयल। एक बक्सा सँ साल में ५ किग्रा०शहद प्राप्ति होइत रहैक। ८० के दशक धरि रुग्न ,अंडा-लार्वा सुखैत खत्म भऽ गैलैक।

(४) एपिस मेलीफेरा-:ई ईटालियन/. योरोपियन पोसुआ प्रजाति मौधमाछी सहज रुपें पालन कयल जाइछ। १९२० ई०में भेल योरोपीयन इटालियन जे ६० के दशकमे एतय भारतीय मौसम विज्ञान मोताबिक आरम्भ भैलैक। ३ किमी०परिधिमे ई श्रमिक मौधमाछी किसानक जजातके लाभ पहुँचाबैत छैक। अपना बक्सामे रहैत अधिक मौध उत्पादन करैत अछि। एक सँ अधिक छता ८ फ्रेम एक बक्सामे मौधमाछी पौसल जाईछ। एक बक्सा सँ२०किग्रा०मौध ठोसवजन प्राप्त होइछ। ५ बाक्स सँ शुरुह करैत सालभरिमे १५ बक्सा धरिबृद्धि हेबाक संभवतः १५ क्वि०मौध स्टाक कयल जा सकैछ। अपन ब्राण्डेड औरगेनीक मौध बिक्री १५०/-आ कोम्बशहद २५०/-तथा प्रसंस्करणहनी ५००/-टाका किलो दवाइ लेल किनैत छैक।मोम सँ सेहो आमदनी मधुमक्खी पालन केनहार किसान लैत छथि। चारि तरहक आय आरो प्राप्त होइछ,जकर प्रशिक्षण राजगीर में इडो-जर्मन तकनीक अपनबैत

देल गेल। अलग सँ फेर पाठ देब। जनतब रहला सँ पंचायत स्तरीय प्रशिक्षण लेबा में अभिरुचि सर्वाधिक रुपै बढ़त। किसान जागरूक होथि। मानव हितैषी कीटके मुख्य भोजन

मौधमाछी किसानक फसिल पैदावार 3किमी0परिधिमे बढ़ेबाक लेल मदैतगार सिध्द भेल छैक। पालतू मौधमाछी अपन बसेरा लग सँ दहोदिश उड़ि पराग आ मौध एकत्र करय लेल सब जजात आ फल-फूल गाछ पर पहुँचैत अछि। अपवाद में आमक मोजर पर ओ नँय जाइत छैक।तकर कारण ओतय पहिले सँ ओकर वैरीन बिडनी भोमरा आ मधुआ कीट अड्डा जमौने रहैत छैक। मौधमाछी केँ मनपसिन्न भोजन हरेक मासमे अलग-अलग उपलब्ध रहैछ। केरा आ केरवी फुल सालोभरि कोसा लटकल रहला सँ प्रर्याप्त रुप सँ भोजन भेटैत छैक।

जनवरी माह में:-

सरिसब फुल , खेसारी फूल, चिकना फुल,तरकारिक फूल आ आनो तरहक मौसमीफुल सँ रस लैत य।

फ़रवरी:-

आन फसिलके अतिरिक्त सहजन मुनगा मकई बरसीम सँ प्राप्त होईछ।

मार्च मास:- लिचीमोज्जर ,जम,धात्रिंग,सीमर,जवाईन,मंगरैल सूर्यमुखी आ नेबो।

अप्रैल-

: खेरही(मुंग), तील जंगली घास इत्यादि सँ।

मई -: कठजमुनी,तार,जनेर आदि।

जून -:

घुरमी ज्वार उपरोक्त।१५जूनक बाद अखार,साउन भादो मासमे कठिनाई रहैछ,तेँ चाराउर लेल चिनीक घोल(चासनी)दैत तीन मास विशेष देखभाल करैय पड़ैत छैक।ठंडी मौसममे सुर्यक रोशनी में बक्सा बाहर राखल

जाइछ।शेष समय में बाक्सा उपर चाही वा छप्पर द'कें सुरक्षित कयल जाइछ।आसिन मासमे मौधमाछीक विकास होइत,मौधक आमदनी शुरू होइछ।चारामे चीरचिरि,बैरक मोजर सँ भोजनक स्रोत खुब प्रचुर मात्रा में रहैछ।अलग-अलग तरहक फलक स्वादमे गैहिकी मौध किनय चाहैछ।एकटा नामी बनियाँ सँ मौध किनकय तकर जाँच लेवोटरीमे ट्रायल कयल गेल तँ ओहिमे शुद्ध शहद नहिँ पाउल गेल। मिलावट सँ सावधान रहबाक चाही। मौधमाछी पालन में प्रयुक्त उपकरण-:

एक सर्वेक्षण अनुसार पृथ्वी सँ जौं मौधमाछी उपैट जाए तँ मनुखक उम्र सिरिफ चारि साल बचल रहत।मानव शिशुकें सर्वप्रथम मौध आ बकरीक दुध चटायल जाइछ। ऐ औषधीय गुण बाला मधुमक्खी'क आधुनिक व्यवसायिक पालनमके निमित्त ई उपकरण ओरियेने रहबाक होयत-:

१-मधुमाछी बक्सा

२-मौधमाछी परीवार-८फ्रेम मौधमाछी।

३-नकाव-मुँह लग जालीदार टोपी सहित।

४-हाइभटूल-बक्सा ओजार

५-मौध निष्कासन यन्त्र ।

६-२२नंतार

७-आधार छत्ता

८-कोमल ब्रूश

९-छत्ता छिलन छुरी-चक्कू

१०- मच्छरदानी।११-मौधक छत्ता राखबाक ट्रे

१२- मौन संग्रह बालटीन(स्टील वा निशा)

ताम , एल्यूमीनियम आ लोहखंडी वर्तनमे प्रतिक्रिया होइछ। १३- अतिरिक्त उपकरण-:

क-पराग संग्रह यन्त्र-पोलेन ट्रेप

ख-परपोलीस संग्रह फूड ग्रेड जारी

ग-रायल जेली संग्रह यन्त्र

घ-मौधमाछी डंकविष निष्कासन यन्त्र

च-चीनीघोल ३माहधरि खुयेबाक बासन।

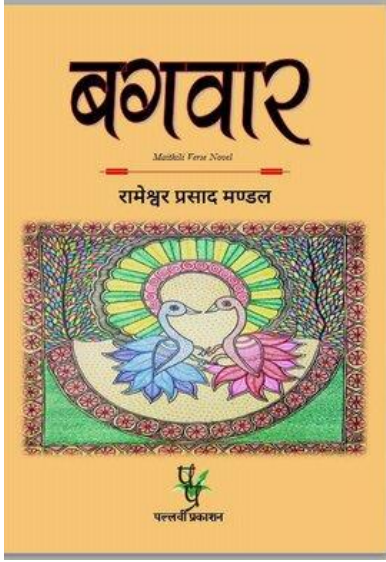
छ-मौध खुदरामे बेचबाक सब साइजक डिब्बा।आरो किछ ओजारक काज पैड सकैछ।

१००ग्राम मौधमे ५०हजार परगकन रहैछ।मौध सँ दुगुना भाव परागक छैक,एहि सँ आयु बढेबामे सहायक होइछ। मोम दैत उपर सँ मुइन दइ छ। 21 दिन धरि मुनलहा छत्तामे सँ बच्चा बहराइत अछि। 2280 सें.ग्रे. तापमान पर एकर जीवन चक्र चले छइ । छत्तामे तीन तरहक बच्चा जनमै छइ । नर मझोला साइजक होइछ जे तीन दिन अंडाकालमे रहि 14 दिन अगिला समय लावा कहबैत अछि। 6सप्ताह सँ तीन मास धरि ओ बैसके जीवन खेपैत अछि । श्रमिक अधिक संख्यामे रहेछ जे जनमकालसँ 3 दिनधरि अंडाकालमे रहेछ आ 7 सँ 14 दिन धरि प्युपाकाल मे रहेछ । रानीक पांखि छोट होइछ ओ सभसँ नमहर देखाइछ । इहो 3 दिन अंडाकालमे आ 3 सँ 5 दिन धरि लावा तथा 8 सँ 16 दिन धरि प्युपा बनल रहेछ। रानीक अधिकतम उमेर 2 सालसँ 4 साल होइछ । नर मात्रे भोजन करैत आ रानीकेँ गर्ववती बनबैत अपने खत्म भऽ जाइछ । रस प्राग जो रानी बचपनमे का लेत तँ बाँझ भऽ जाएत। रानी अजस्र अंडा दैत कहियो सुतैतनय छ । रानीमे विशेष तरहक गन्ध रहेछ, तँ नर सभ आक्रमण कय रानीके मारि दइ छ । रानी तैयार करैक लेल ओकर विशेष पिंजरा सँ सुरक्षा कएल जाइत अछि। रानी तैयार करनाई निहायत जरूरी रहेछ । एक रानी सँ दोसर रानीक गन्ध वंशानुक्रम आधार पर पृथक होइत अछि। जवान रानी पर 5-10 नर विहार करबाक उद्देश्य सँ टुटि पड़ैछ, परंच अकाश बियाह एके नर सँ होइछ आ रानीके अंडा देवा योग्य बना स्वयं ओ टुटिके गीरैत मरि जाइछ ।

श्रमिक मौधमाछी सभ काज स्वयं बालपन सँ करैत अबैत अछि । जेनाकि 1-3 दिनक उमेरमे छताक सफाय करैत य 14-7 दिनबच्चा लावकि भोजन कराबै छइ । 8-16 दिन धरि तीन दिन तक बच्चाके रायलजली आ रानीके आजीवन रायल जेली खियाबै छइ । 17-20 दिनतक मोम पैदा करै छन् । पाकल मोधके सील करैत, नयका छता सेहो बनबय लगैत अछि। टुटल छता के दुरुस्त करै छइ । 21 म् दिन घर चिन्हय खातीर पहिले उड़ान करैत अछि। खोता (लकड़ी बक्सा) रसे-रसे चिन्ह लेलाक बाद लगक पराग रस एकत्र करयमे लागि जाइत अछि । जेना जेना ओकर आयु बढैत जाइछ, ओ 3 कि.मी. क्षेत्र चारूभर सँ पराग रस आनैत अछि। उमेरदराज श्रमिक मौधमाछी खोजी दल बनि सांकेतिक भाषामे सबके बतबैत छैक जे कतेक दुर, कोन दिशामे भोजन स्रोत उपलब्ध अछि । 10-16 दिनक अवस्थामे मोधमाडीके विष के स्राव होईछ, तेकर बाद स्रोत सुखि जाइछ। पोसुआ मौधमाछी सँ जे अनेक फायदा होईछ, तहीमे सभसँ वेसी मुल्यवान डंक विष थीक। एक बक्सा सँ साल भरिमे 3.6 ग्रा. भेटैछ जे स्वर्णभाव के समान बिकै छइ । ओना साधारणतः पालक मौध 150 आ कोम्ब शहद 250 सँ 500 टाका किग्रा. दर सँ उत्पादन संगहि मोम आ मोम मिठाय पबैत छैथ। इंडो जर्मन विधि आ उपकरण सँ किसानक हीत उन्नत हुअ जा रहल अछि । बिहार राज्य केर 38 जिलामे 5-5 टा प्रशिक्षण दाता तैयार भेल जे एहि बारेमे विस्तार सँ हर पंचायतमे जागरूकता बढ़ाएत। मौधक मिठास सभ परिवार क पहुँचाएब, रोगमुक्त बनाएब हमर अभिष्ट भविष्यमे रहत।

६

रंगपुरमे जगूक परियास : एक विश्लेषण



मैथिली सँ हिन्दीमे सुप्रसिद्ध साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर जीक पोथी" जगदीश प्रसाद मंडल एक वायोग्राफी आ साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत मैथिली उपन्यास"पंगू" जाहिक रचनाकार जगदीश प्रसाद मंडल जीक पोथीके प्रकाशित करबामे आगू एलाह श्री रामेश्वर बाबू। हिनक पहिचान कवि - कथाकार रूपेँ भेल छन्हि। बसुआरी हाईस्कूल सँ सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, अनुवादक ओ साहित्य सेवी श्री रामेश्वर प्रसाद मंडल विरचित 'बगवार' उपन्यासिक प्रबंध काव्यमे एक दुर्गम गाम ' रंगपुर ' केर विशेष चर्चा कयल गेल छैक। मिथिलांचल'क ग्रामीण जीवन बदलैत परिवेशक चित्रण अतिशय सुन्दर रूपेँ भेल अछि। अपन गामक प्रति जगूजी एक साधारण लोक रहैत कर्मशील छथि। वर्णित काव्यके मुख्य पात्र जगूक आरम्भिक जीवन भीतघरमे

माय- बाबूक एकेदिन मृत्युसँ कष्टप्रद बुझाइछ तँ दू बेटाके एकेहि मरबा पर वियाह सँ प्रशन्नता भरल छै। ऐ मैथिली पोथीमे पहिल पाठ सँ अंतिम पाठधरि जगूक पारिवारिक हलातक' उतार - चढ़ाव केर जीवंत कथ्य परोसल गेल छै। जेठ बेटा आ फेर एक बेटी जन्मक बाद हुनकर पत्नीक पैर भआरईभएल रहय। रामेश्वर प्रसाद जी काव्यके पाँतिमे शब्द चयन देखल जाए-:

रोशनी देलैन जाँआ बच्चा

झूट नइ हम बजे छी सच्चा

लोक कहलक ई की भेल?

भगवान'क ई अजगूत खेल

बाल- बच्चा चेष्टगर - छँटगर भेलासन्ता तकर नीक परवरिशक संग उत्तम शिक्षा दियाबैत अपने स्वयं चुरी कारखाना - गुलाठीमे कार्यरत रहैछ। तत्कालीन पिछरल समाजमे बालक शिक्षा तँ रहय मुदा बालिका शिक्षा'क घोर अभाव रहैक । यथा-:

बेटाक लेल किताब कलम खरीदै छी

बेटीक हाथमे किएक छिटा-खुरपी धरबै छी

बेटा शिक्षा केँ दीप जरबै छी

बेटी शिक्षा केँ किए दीप मुझबै छी?

समय चक्र एहन घुमैत छै जे अपन सुपरवाइजरी नोकरी आ पुत्र वेदप्रकाश,देव आ निलेशक नौकरी धरि छुईट जाई छै। बेटी चंदाक वियाह शिक्षित वर सँ समय सँ कराओल जाई छै,मुदा धियापुता नहिँ समय पर होई छैन। जीविका लेल माछ पालन जे करैत य , तँ गामेक लोक रातिकेँ चोरी कऽ लैत छै। पंच लोकनि महा घुसखोर छै, उचित निराकरण नहिँ होई छैन। संगी रघु मंडल अपने लक्ष्मीपात्र रहैत हिनको धन अरजैक सलाह दैत रहनि। ओ संतान केँ अक्षरबोध नहिँ करेने ' बुढ़ारीमे बेटा पूतौह धरि वृद्धाश्रम में पहुँचेने रहैन। ताहि प्रसंग मित्र दूनू प्राणी केँ जगू गाम आनैत य। पता इहो चलैत छैक कका

फुसनी मरड़क बेटा निशेवाज भ' वेश्या सँ वियाह कऽ लेने छै। पत्थलतोर मेहनतके बले जगू तरकारी खेती फल - फलहरी सँ नीक अर्जन कयल। समाजमे अभावमंद लोकके सदैत मदैत पहुंचेवामे पाछु नहिँ रहैत , कनिकबेटामे लोटनके पढ़यमे सहयोग केने रहथि। से लोटन दारोगा बनि गेल छै आ चुरी कारखाना लग बोराक छली लगाबैत जगूक बेहोशी समय अकस्मात् आबि टेम्पूपर लाधैत होस्पिटल में अपन रक्त दैत जियाबैत देखल गेलैक हन्। आरो मानवताक परिचय दैत कर्जा सेहो उतारि मन हलुक कऽ देतैन। अपने गाम आबि जहन ओ बेटा पूतौह सब सँ उपेक्षित होइत अछि, तँ हुबा करैत साग - सब्जी 'क बागबानी आ बानकि करैत सुदृढ़ होईत गेल छै। सतनाकेँ महाजन रंगलाल पाँच हजार टाका देलकैक मुदा तगेदा एक लाख टाकाके कयलापर पँचैतीमे जगूक कथनके कियो पँच मोजर नहिँ कएलक। सतनाके टाका दैत महाजनक चपेट सँ हटेलक। गाममे अपना नामे मध्य विद्यालय खोलैत साक्षरता बढेबामे आगू रहला। जगूक पत्नी रोशनी बेराम पड़ैत छथिन से अबतब स्थिति बनैत छै। बीडीओ बेटा नीलेश मात्रे पाँच लाख टाका ओरियाउन केलक शेष आठ लाख ले अपन मकान बन्हकि धरि राखि समुचित इलाज कराबैत छै। निराश परिस्थितिमे चुरी कारखाना सँ एक चिट्ठी अबैत छै, जाहि लेल कागत पत्तर तैयार कय दूनू दम्पति गुलाठी नगर पहुँच ,ओतय बढल पेंशन मद केर सोलह लाख टाका पाबैत अछि। गाम अयलापर विमुख भेल बेटा पूतौह सब सँ सौहार्द निश्तुकी होई छैन। मायक अन्दरुनी ममताके जगू जगाबैत देखेलाह अछि। गाममे अपना आ पत्नीके नामे होस्पिटल बनेलाह। बेटी ताहि होस्पिटल सँ स्वास्थ्य लाभ पाबि गर्भवती होई छथिन। बिहार क' प्रसिद्ध छैठ पाबैनिक आराधना समय घाटपर एक १८ वर्षीय मयटुअर- बपटुअर खटरी नामक छौरी अचेत भऽ खसि पड़ैत छै,दाँती लगैत छै। तकरा होस्पिटल आनल जाईछ,नीलेश रक्तदान दैत जीवनदान दैत छै।ओकरे सँ विवाह सेहो आदर्श पूर्वक होईछ। दूनू प्राणी सपरिवार विचार

करैत एक धर्मशाला बनाय ओहिमे सदाव्रत बाँटैक काज शुरू कयल। दुरौसक प्रचार सुनि कतेको निर्धन, भिखारी,बाबाजीक आबाजाही हुअय लगलैक। एक एगारह बरखक छोड़के पाँतिमे ठाढ़ गरदने पर लालमस्सा देखि चिन्ह गेल से ओ रहय हिरबाक बेटा, जे नेना में हेरा गेल छलैक। पछुआयल वंचित समाजक काव्य धारा केँ रसीकजन दाहातर्ज, श्रवण कुमार तर्ज आ राधेश्याम तर्ज पर गाबि शिक्षा जागरूकता कऽ सकैछ।

रामेश्वर बाबू द्वारा मनो विश्लेषणात्मक द्वन्दके यथासंभव संयम विवेक ओ ओचित्यक प्रतिरक्षण कयल गेल हन्। ऐ तरहक सजगता हम गूलोमे सेहो सुभाष चन्द्र यादव जीक उपन्यासमे पेयलहुँ अछि। किसान जीवनक महागाथा रचबाक परम्परा उड़िया भाषाक कथाकार फकीर मोहन सेनापतिक " छमाड़ आठ गुंठे" (१८८७ ई०) सँ शुरू होईछ। प्रेम चंद के गोदान, ललितक पृथ्वीपुत्र आ यात्री जीक बलचनमा ओ पारो उपन्यासमे सेहो किसान - मजदूरक संघर्ष सामंती व्यवस्था केर विरुद्ध भेल अछि। एहि तरहेँ कहल जा सकैछ अपने परिवार समान सम्पूर्ण गाम- समाजकेँ एक परिवार मानैत जगू सफल बागवार (रखबार) बनि गेल छैथ। ऐ तरहक वास्तविक गाम सरौती,टिकापट्टी में कयल गेल अवदानक सहेजेँ मोन पड़ि जाईछ। पल्लवी प्रकाशन निर्मली सँ सद्यप्रकाशित एहि मैथिली साहित्य पोथीक दाम ३५० टाका आ कुल पृष्ठ सँ.१०७ छैक,जे पाठकके पढैक प्रति विशेष अभिरुचि जगाबैत य।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.४.लालदेव कामत-आर्थिक विपन्नता/ मुंस'क दान



लालदेव कामत- आर्थिक विपन्नता/ मुंस'क दान

१

आर्थिक विपन्नता

विश्व भरिक नजैर छई भारत पर। बेपारिक दृष्टिये प्रतिस्पर्धा में आगू बढि जेबाक धेह छै। भारतवासी पैघ लोकक नजैर छैन दलित - पिछरल समाज पर। भारत आ नेपाल बोडर केर जोगबनी बजारमे एकटा धार्मिक उजैहिसन नव पूजा पद्धति'क केने रहय। प्रचार सुनि अपन योगदान उपस्थिति सँ बनाबैत पछुआयल समाजक लोकके जूलूसमे सजि वट सावित्री व्रत पूजन महोत्सव देखै ले अपन काज सँ छुटिमारि ललमुंही सपरिवार अयलीह। आब वैश्य आ सवर्ण 'क देखौंश अति पिछड़लो समाजक लोक करैत य। नव परिधानमे पुरुष तँ कम्मे, वेसी स्त्रीवर्ग मेलामे चीज बौस्त बेसाहिके चढ़ाबैत आ खोंईछ सेहो भरैक अभिक्रममे लागल छलैक। जोगारमे साढ़े तीन सय टाका ललमुंही केँ एक रोजक मजुरी भेटैत छै। ओकर साँए हेड मिस्तरीमे नीत रोज साढ़े पाँचसय आ देओरके देहारी नवसिखुआ रहने पौने चारिसय टका कमबैत य। आई ऐ तरहँ पच्चीस लाख टाका बोईन मारल गेल सबकियो केँ। एहेन - एहेन

नव- पुरान बहुतो चलनसारि डेबैत पूर्वजक बतौल जुईत पर आधुनिको जुगमे कठिणता सँ जीवन जीयैत निठाहे पछुआयल रहै य। तैपर सँ पंडा पुजारी धाइम आबिके घर-घरमे डीह डायनक जादू -टोना सँ बँचबाक खगौट बुझाबैत जन्तर तबीजी नगदमे बेचि जाइछ। अनपढ़ आ कम साक्षर जनिजाइत अपना घरमे पढलो लिखल पुरुष सँ नुकाके टाका धरि बोहाबैत गरीबी खुदे आनैछ। तँ आर्थिक विपन्नता पछारबे ने करत!

२

मुंस'क दान

एक परम गरीब रहैक- महिया। ओ सब दिन माँगि - चाँगिके खाई। भीखमंगनी करैत ओ जीवन निर्वाह करयमे लागल रहय। एकदिन भुखल - दुखल बिलास सेठक दोकान लग ठाढ़ भऽ हाथ पसालक। सेठजी अपन जेठ बेटाकेँ बेचि, तै टाका सँ वस्त्रक कारोबार बजारमे कएने रहथि। से मुंस हुनका वस्त्रालयमे रातिके उपद्रव मचाबैक। ओ मुसकारीमे जीबैत नरमुस बझेने छलाह। से बेपारमे घटा-नफाक गुनधुन करैत जूटक गजियामे मुंसकांरी उझैल धरि मुंसबाक गरदैन धेलनि। ताहि असैरमे महिया पाई भीखमे माँगबाक याचना कयल। बिलासजी निष्ठुर भऽ मुंसकेँ ओकरा दिश जुमाकय फेकैत कहलनि - लेह! लपकिकेँ मुंस धरि लेलक आर्त महिया आ ओतय सँ पराएल चलि देलक। बाटमे एकटा बिलारि पोसय बाला शखगर श्रीमंत लोक देखायल। ओ मुंसक किछ ढौआ दैत किन लेलक आ बिलौटाके ओगारि देलक। ताहि कैचा सँ महिया अपन जठराग्नि शांत नँय कऽ खुदरा बेपार आरंभ केलक। ३० शालमे ओ सुदृढ़ होईत पैघ बेपारी बनि गेलैक। धन सम्पत्ति सँ एतेक ने सुव्यवस्थित भेलाह जे मिथिला देशक सबसँ धनिक लोकमे जानल पहचानल गेला। आब महिया जीके आत्मज्ञान रातुक निनियां उड़ा देने छलैक। से उदग्नितामे ओ पुजी कोन तरहँ घुमाएत! लगधक १५ लाखमे २४ करेटक सोनाक मुंस कीनकेँ उपहार रूपेँ बिलास जीके भेंट कयलनि। विलास जीक

शेष चारू बेटा एहन उदार हृदयके व्यक्ति केँ अचरज दृष्टिये एकटक निहारैत रहि गेल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.५.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-२५)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम. ए., नैहर- खराजपुर, दरभङ्गा, सासुर- गोढ़ियारी (बलहा), वर्तमान निवास- राँची, झारखण्ड। झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभागमे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पदसँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

अग्नि शिखा (भाग- २५)

(मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण)

कथा अखन धरि:

उर्वशी विवाह सँ पहिने दू टा शर्त राजा पुरुरवा के सोझाँ रखैत छथि, जकरा ओ राजा केँ आजीवन पालन करबाक प्रतिबद्धता दैत छथि, जाहि दिन राजा एकोटा शर्त केँ पूरा करबा मे असफल रहताह, उर्वशी ओही समय मे वापस स्वर्ग चलि जेतीह, राजा पुरुरवा स्वीकार करैत छथि दुनू शर्त !

आब आगू:

आइ गंधर्व रीति के अनुसार राजा पुरुरवा आ उर्वशी के विवाह संस्कार सम्पन्न भऽ गेल छल, एहि विवाह के अवसर पर एकटा विशाल समारोह के आयोजन

भऽ रहल छल।

भूमंडल के सब राजा के आमंत्रित कयल गेल छल। एहि में कुल गुरु वशिष्ठ के महत्वपूर्ण भूमिका छलनि। किएक तऽ राजा पुरुरवा आ उर्वशी के विवाह संस्कार हुनके द्वारा सम्पन्न कराओल गेल छल, ताहि कारण सबसँऽ पहिने ओ वर-वधू केँ आशीर्वाद देने छलाह। तकर बाद प्रख्यात ऋषि लोकनि दंपति केँ आशीर्वाद देमय लगलाह। एकर पश्चात आमंत्रित राजा गण एवं गणमान्य अतिथि गण राजा पुरुरवा आ उर्वशी के विभिन्न उपहार दैत अपन शुभकामना व्यक्त केलनि ।

प्रजा जन में प्रसन्नताक लहर व्याप्त भेल छल। भला ओ सभ प्रसन्न किएक नहि होइतथि! स्वर्ग के श्रेष्ठ अप्सरा उर्वशी स्वेच्छा सँऽ राजा सऽ विवाह के आग्रह करय लेल पृथ्वी पर आबि गेलीह। भला एहि सुअवसर के राजा किएक नहि स्वीकार करितथि ! ओ किएक ठोकरबितथि उर्वशी के प्रणय निवेदन! राजा एकरा किएक नकारितथि ? ओनहुना सौंदर्यमयी अप्सरा के प्रणय निवेदन के ठोकर मारला सऽ राजा पाप के भागी बनितथि! ताहि कारण राजा हुनक प्रणय निवेदन स्वीकार केलथि। हुनकर जोड़ी दुनिया मे अद्वितीय अछि। ई समाचार कर्ण-स्रोत सँऽ भूमंडल पर चारू दिशा मे पसरि गेल। जे सभ सुनथि ओ पहिने आश्चर्यचकित भऽ जाथि फेर प्रसन्नता व्याप्त भऽ जान्हि हुनका सबहक मुखमण्डल पर।

राजा पुरुरवा आ उर्वशी दुनूक जोड़ी दुनिया मे अद्वितीय अछि। आइ धरि कहियो एहन नहि भेल छल, जे अप्सरा स्वयं भूपति दिस आकर्षित भेल हेतीह। संभवतः भविष्य में कहियो फेर एहन संजोग पुनः नहि होयत - ई सबहक विचार छल! आइ पृथ्वीक सोझाँ झुकि स्वर्ग प्रणाम करैत अछि - ई प्रत्यक्षतः स्वर्ग पर पृथ्वीक विजयक प्रमाण छल।

जतेक लोक ततेक तरहक बात सुनबा में अबैत छल । सबहक अपन-अपन बुद्धि अनुसार अपन-अपन विचार छल। मुदा एहि विवाह सँऽ प्रसन्न सभ केओ

छालाह। की राज कर्मचारी,की प्रजा जन, ऋषि मुनि,विद्वत जन अथवा अन्य राजा गण सब क्यो अत्यंत प्रसन्न भय पुरुरवा आ उर्वशी दुनूक जोड़ी के दुनिया मे अद्वितीय कहि रहल छलथि ।

पुरुरवा केँ घमंड तऽ कनिको छूबियो नहि गेल छलनि।पहिने जकाँ छोट-पैघ सबहक प्रति सामान्य व्यवहार छलनि,स्वयं उठि कऽ अभ्यर्थना कऽ सबहक स्वागत केलथि ।एहि अवसर पर नव वस्त्र, सोना, चानी,रत्न आ हीरा आ अनेको बहुमूल्य रत्न अभ्यागत संग प्रजाजन के मध्य उपहार स्वरूप वितरित कएल गेल छल। ई सभ सामग्री बहुमूल्य रत्न, वस्त्र, अन्न उपहार मे बाँटल जाइत छल,कारण हुनका लोकनिक राज्य मे केओ निर्धन वर्ग के नहि छल जकरा दान देल जाइत। जे सब एकरा प्राप्त करैत छल,ओ एहि सभ वस्तु के राजाक प्रति प्रेमक कारणेँ उपहार मानैत,मात्र श्रद्धा सँऽ स्वीकार करैत छल। राजा के द्वारा ऋषि लोकनि केँ दान देल गेल,हुनक अपन गुरुकुल आ आश्रमक संचालन हेतु ।

सजल विवाह मण्डप एखनहुँ राजाक विवाह समारोहक भव्यता आ राज्यक समृद्धि गाथाक बखान कऽ रहल छल। ऐश्वर्य आ वैभवक यश पताका एखनहुँ बहुमूल्य रत्न हीरा आ सोनाक बनल अद्भुत विवाह मण्डप के रूप मे फड़फड़ाइत छल। वैभवशाली राज्य के राज कोष विशाल सागर समान छल,जाहि सँऽ एक लोटा जल निकालल जाए लखन भला ओहि सागर के जल में कोन कमी होयत? यैह कारण छल जे राज्यक कोष सँ कतेक धन-रत्न दान कयल गेल छल,तइयो समुद्रसँ निकालल गेल पानिक एक लोटा सन भरल रहल - ओ कोष ।राज्य उत्सवक भव्य आयोजनमे आम लोकक प्रवेश सेहो निश्चित छल । सब प्रजाजन सम्मिलित भेल छलथि एहि समारोह में ।

देश देशांतर के राजा-राजकुमार आ सामंतक अतिरिक्त राज्य के सामान्य जनता लोकनि अपन राजा के विवाह संस्कार के अवसर पर भरपूर मनोरंजन

प्राप्त कयलन्हि । ई विवाहोत्सव पंद्रह दिन तक चलैत रहल। एकर पश्चात आमंत्रित लोक सब एक-एक कऽ विदा होमय लगलाह। पंद्रह दिन के बाद सब पाहुन चलि गेलाह। विदा काल में सब पाहुन के धन्यवाद दैत राजा पुरुरवा के तरफ सऽ विदाई देल गेल। सब कियो प्रसन्न छल, सम्राट पुरुरवा के प्रति ककरो कोनो दुर्भावना नहि छल, सब कियो सम्राट पुरुरवा आ उर्वशी के हृदय सऽ आशीर्वाद दऽ कऽ विदा भऽ गेल छलाह। आम जनता सऽ लऽ कऽ राज्य अतिथि तक सब राजा के देल गेल सम्मान स गदगद भऽ गेल छलाह ।

=====*****=====

सौभाग्य-शय्या! आ सेहो सम्राट पुरुरवा के! एकर सजावट के वर्णन करब कठिन काज अछि! विवाह भवन के निर्माण के संग-संग सौभाग्य कक्ष के निर्माण आ सजाबय के कर्तव्य-भार स्वयं विश्वकर्मा के द्वारा लेल गेल। कक्ष के निर्माण के काज ओ स्वयं अपनहि समक्ष पूरा करौलनि । अतः एहि मे कोनो तरहक त्रुटि रहबाक कोनो संभावना नहि छल। कक्ष के फर्श पर रंग-बिरंगक फूल एहन सजाओल गेल छल जेकर तुलना असंभव अछि। ओहि मे रति आ मदन केर विभिन्न मुद्रा में चित्रित कएल गेल छल। विशाल विस्तृत पर्यंक के अपना में एक आओर बेसी अद्वितीय विशिष्ट छल सौन्दर्य। एकर आधार आ सतह पर अलग-अलग मुद्रा मे कामदेव आ रति के सजीव चित्रण कएल गेल छल। लागैत छल जेना ओ विशेष सौभाग्य-कक्ष रति-पति कामदेव के छल। रति-कामदेव के चित्र ओहि संपूर्ण कक्ष में विभिन्न मुद्रा में चित्रित कएल गेल छल। कक्ष के देवाल पर पर्यंत विभिन्न मुद्रा में रति-कामदेव चित्रित छलाह। कक्ष के फर्श पर छल अद्वितीय पुष्प, बहुमूल्य रंग-बिरंगक मोती, माणिक आ कतेको रंग सऽ रंगल स्वर्ण जड़ल कालीन! ओहि कक्ष मे पुरुरवा आ उर्वशी के सौभाग्य-शय्या एतेक नीक जकाँ सुसज्जित आ एहेन

बहुमूल्य छल जेकर सामान्य जन कल्पना तक नहि कऽ सकैत छल। एहेन सौभाग्य-कक्ष सम्भवतः इन्द्र केँ सेहो नहि भेटि सकल होयतन्हि ।

मुदा आब एखनि ओहि कक्ष मे कियो नहि छल। एतेक बहुमूल्य रूप सँ सजाओल कक्ष एखनो एकदम रिक्त छल। राजा पुरुरवा हृदय मे अनगिनत असंख्य स्वप्न लऽ कऽ ओहि कक्ष मे प्रवेश केलनि, मुदा शून्य सौभाग्य-शय्या केँ देखि ओ आश्चर्यचकित भऽ गेलाह, तीव्र गति सँ ओ दोसर कक्ष मे प्रवेश केलनि जे ओहि कक्ष सऽ संलग्न छल । मुदा आश्चर्य! ओतहु उर्वशी नहि छलीह ! केहन सौभाग्य-रात्रि अछि! जाहि मे वधु अनुपस्थित छथि! राजा पुरुरवा सोचलथि! क्रोध मिश्रित आश्चर्यक रेखा हुनकर मुखमंडल पर स्पष्ट रूप सऽ परिलक्षित भऽ रहल छलनि । दुःखी हृदय सऽ राजा लगहि मे राखल स्वर्ण आसन पर बैसि गेलाह। एकहि क्षण मे हुनक सभटा सुख-स्वप्न पर वज्रपात भऽ गेलनि। पर्यंक पर सँ एक-एकटा पुष्प उठा कऽ ओ हस्त कमल सँ रगड़य लगलाह। वह पुष्प सभ के मसलि मसलि कऽ नष्ट करय लगलाह। ओ अत्यंत खिन्न हृदय भऽ गेल छलाह।

कियो एक जन छल जे राजाक एहि अवस्था सँ हर्षित भऽ रहल छल। ओ छलीह उर्वशी! मुदा राजा के एकर लेश मात्र ज्ञान नहि भेल छलनि। ओ उर्वशी के नहि पाईब एकदम असहज अत्यंत दुःखी भेल छलाह ।

हठात् मधुर हँसी वातावरण मे गुंजायमान भऽ गेल। अधीर भऽ कऽ राजाक मुँख सँ आवाज निकलल, जे वास्तव मे हुनक हृदयक आह्वान छलैन्ह -

"हे उर्वशी प्रियतमे! अहाँ कत' छी! आहाँ हमरा समक्ष प्रगट होउ! आऊ! शीघ्रता करू ! आब हमर धैर्यक एतेक परीक्षण जूनि करू।"

क्षण भरि मे झरना सँ बहैत जल श्रोत जकाँ इजोतक फव्वारा ओहि कक्ष मे झमकि गेल। ओहि प्रकाश सँ पूरा कक्ष प्रकाशित भऽ गेल। पुनः ओ तीव्र प्रकाश फर्श पर एकटा निश्चित घेरा मे सीमित भऽ गेल छल ।

क्षण भर में ओ तीव्र प्रकाश एक अद्भुत सौंदर्य मयी युवती के रूप में परिवर्तित

भऽ गेल!ओह उर्वशी! उर्वशी के केहन अद्भुत रूप छलैक! ओना तऽ ओ स्वयं साक्षात् अद्भुत सौन्दर्यक देवी छलीह।ब्रह्मा सेहो हुनका बराबर सौन्दर्यक सृजन करबा मे असमर्थ छलाह । मुदा एखनि विवाह परिधान में सुसज्जित नव कनिया के रूप में उर्वशी के सौंदर्य के वर्णन अत्यंत कठिन छल ! रक्त वर्ण के जगमग करैत रेशमी कञ्चुकी धारण कएल,अनमोल सौंदर्य प्रसाधन सँऽ सुसज्जित आ अमूल्य आभूषण सँ अलंकृत उर्वशीक रूप लावन्य पुरुरवा के रोम-रोम केँ हर्ष सँ भरि देलक।

विवाह परिधान में सुसज्जित उर्वशी के दिव्य सौंदर्य सँऽ प्रभावित विमुग्ध राजा के हृदय काम-संतप्त भऽ गेल।हुनकर संपूर्ण शरीर में एकगोट मधुर सन मद भरि गेलनि। ओ काम संतप्त भऽ गेलाह,मद भरल सिहरन सँ हुनक देहसंग आत्मा तक भरि गेल छलैनि । कामोत्तेजना सँऽ हुनक अधर काँपि उठल,मुखमंडल पर पसीनाक मोती चमकि गेलनि । राजा मयपान कएल धुत्त आदमी जकाँ उन्मत्त भऽ गेलथि । काम क्रीड़ा के लेल ओ व्यग्र भऽ गेल छलाह।

ओ उर्वशीक आँखि मे ध्यान सँ देखलथि । हिरणी सन चंचल पैघ झील सन आँखि सँऽ उर्वशी अपलक हुनके देखि रहल छलथि।बूझि पड़लन्हि जेना पैघ झील में पुरुरवाक संपूर्ण शरीर आत्मा सहित डूबि गेल छल।

किछु क्षणक बाद उर्वशीक मधुर स्वर लहरी कक्ष में गूँजि उठल -

"धैर्य राखू प्रिय। एतेक अधीर जूनि होउ "।

"कियैक,अहाँ हमरा किएक यातना देबय चाहैत छी प्रिये ?" राजाक प्रेम-विह्वलता हुनक विचलित स्वर सँऽ स्पष्ट भऽ रहल छलनि ।

"प्रिय हम आ अहाँ दुनू गोटे अद्वितीय छी,एहि दुनियाँ मे अपन विवाह एकटा अद्भुत अद्वितीय विधि सँऽ सम्पन्न भेल,तखन एहना में अपन सौभाग्य-रात्रि मे अहाँक संग हमर मिलन सेहो अद्भुत,अनुपम हेबाक चाही" -

226 | | <http://www.videha.co.in/> ISSN 2229-547X VIDEHA

उर्वशी खिलखिलाइत बजलीह ।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.नन्द विलास राय-मास्क



नन्द विलास राय

मास्क

पूरा विश्व कोरोना बेमारीसँ अक्रान्त छल। लोक त्राहि कृष्ण, त्राहि कृष्ण कऽ रहल छला। कताक गोटा अपना गेटमे ताला लगा कऽ रखै छला। कियो किनको ओइठाम नहि जाए चाहै छला। जँ किनको ओइठाम कियो पाहुन-परक पहुँच जाइ छेलखिन तँ घरबैया ओइ पाहुनकेँ शंकाक नजैरसँ देखै छला। के कहलक ई पाहुन कोरोना वायरससँ ते ने संक्रमित अछि।

दू गज का दूरी आ मास्क है जरूरीक नारा लगैत छल। सरकारक तरफसँ मैकिंग करौल जाइत छल जे बिना आवश्यकता घर से बाहर मत निकलिये। अगर निकलना जरूरी है तो मास्क लगाकर निकलिए और दू गज का दूरी बनाये रखिये।

करोने कालमे हम एक दिन निर्मली जाइत रही। निर्मली बाजारसँ उत्तर-पश्चिम एकटा तीन मुहाँनी अछि जेकरा बेरियर चौक कहल जाइत अछि। आइसँ लगघक चालीस बरख पहिने ओइठाम बेरियर छल, कोनो भी गाड़ीकेँ ओतए रूकऽ पड़ै छेलइ, तँए बेरियर चौक नाओं पड़ि गेल।

हम जखन बेरियर चौकपर पहुँचलौं तँ एकटा उन्नीस-बीस बरखक लड़काकेँ सिपाही डंटासँ मारैत रहए। बगलमे एकटा कुर्सीपर दरोगा साहैब बैसल छला आ हुनका बगलमे माने दरोगा साहैबक बगलमे दूटा सिपाही सेहो बैसल छला।

दरोगा साहैब बजला- "मारिये साले को और मारिये। अपना भी मरेगा और दूसरे को भी मारेगा।"

हम हिम्मत करि कऽ दरोगा साहैब लग गेलीं आ हुनकासँ पुछलियेन-

"सर, ऐ लड़काकेँ सिपाही किएक मारै छै।"

तैपर दरोगा साहैब बजला-

"देखता नहीं है साला बिना मास्के का घूमता है। अपना भी मरेगा और दूसरे को भी मारेगा। इतना मैकिंग करबाते हैं कि बिना मास्क पहने घर से मत निकलिये, दू गज का दूरी बनाये रखिये, मगर इन गदहों को अक्ले नहीं आता है।"

जे दरोगा साहैब कहैत रहैथ मारिये, साले को और मारिये, ओ खुद मास्क नहि पहिरने रहैथ। आ बगलमे बैसल दुनू सिपाहीक मास्क मुँहमे नहि लगल छेलैन। दुनू सिपाहीकेँ मास्क हुनका सभकेँ दाढ़ीमे लागल छेलैन।

हम दरोगा साहैबसँ कहलियैन-

"सर, अपने तँ डबल लेयरबला मास्क पहिरने छिये, किने।"

तैपर दरोगा साहैब हमरा निच्चासँ ऊपर धरि देखला आ जेबीसँ मास्क निकालि पहिर लेला।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.७.जगदीश प्रसाद मण्डल-घरदेखी



जगदीश प्रसाद मण्डल

घरदेखी

पौने नअ बजे रातिमे रामपुरसँ गाम आबि कलपर हाथ-पएर धोइ कऽ लोटांमे पानि भरि, कोठरीमे आबि ओछाइन दिस देखलौं कि उत्तिमलाल भाय मनमे नाचि उठला। मनक नाचकेँ मनेमे दाबि ओछाइन झाड़िकऽ बिछेलौं। मनसँ उत्तिमलाल भाय उतरला तँ नहि मुदा मनमे नाचब कम भऽ गेल छल। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि, ओ अछि रामपुरक भैयारी, तीन कोस हटल गाम उत्तिमलाल भाइक छैन आ तहिना हुनकासँ हटल अपनो घर तँ अछिए, तैठाम भैयारीक सम्बन्ध केना भेल? ..ओना, मातृक वा कोनो आन सम्बन्धमे सेहो भैयारी होइते अछि, तइसँ भिन्न उत्तिमलाल भाइक संग अप्पन भैयारी अछि। नोकरीक जीवन रहने बहुत दिन धरि दुनू गोरे एकठाम रहबो कएल छी आ बेवहारिक जीवनमे एकरूपता सेहो अछिए जइसँ जीवनक अनेको मर्मस्थल दुनूक गोरेक एकरंगाहे अछि। हँ, ऐठाम समाज वा परिवारक बीच जे भैयारीक

सम्बन्ध अछि ओ एकटा वंशगत अछि आ दोसर सम्बन्धगत अछि।

ओहुना देखिते छी जे अपना सबहक बीच जेतेक सम्बन्ध अछि ओ सीढ़ीनुमा अछि, वंशगत भैयारीक सम्बन्धमे सेहो थोड़-बहुत माने उम्रक चलैत सीढ़ीनुमा अछि, मुदा से समाजगत भैयारीमे नहि अछि। परिवारमे भैया-बौआक चलैन अछि, मुदा समाजमे ओ भाए-भैयारीक रूपमे बदल जाइए, जे एकरूपताक रास्ता सेहो पकड़ैबिते अछि। खाएर जे अछि ओ जानैथ परिवार-समाजक लोक। अपना तँ अप्पन जिनगी अछि। अपना देहमे ओहन बिमारीए ने भऽ जाए जे सदिकाल मन व्याकुले बनल रहए। तइले अपने ने विचारबो करब आ तेकर निमरजनो करब।

ओछाइन बीछा सिरमापर जहँने मुड़ी देलौं कि उत्तिमलाल भाइक बेटी-बिआहक परेशानी धक-दे मनमे खसल। ओना, बिआहक सभ बेवस्था देखि मन मानि गेल अछि जे उत्तिमलाल भाय जीवनक अन्तिम बेड़ा नीक जकाँ पार कऽ रहला अछि। आजुक जे परिवेश बनि गेल अछि आ बनियोँ रहल अछि तइमे नहियँ जाएब नीक, मुदा बाघा तँ ईहो अछि जे जँ बिआहक काजकँ वहिष्कार करब तखन बेटा-बेटीक बिआह केना हएत। आ जँ बिआह नइ हएत तँ परिवार बनि समाज ठाढ़ केना हएत?

बेटी बिआहक सभ प्रक्रिया उत्तिमलाल भाय जीह खोलि कऽ केने छैथ। आन गामक आन जातिक बात नइ कहै छी जे जाबे बर दुआरि नइ लगता ताबे जँ कियो बरात दरबज्जापर एबो करता तँ हुनका बरियातीक मोजर नइ हेतैन, तँए चाह-पानक कोन गप जे कियो कुशलो-क्षेम पुछनिहार नइ होइ छैन। तइसँ विपरीत उत्तिमलाल भाय ऐठाम देखलथैन। बर-बरियाती रातिक दस बजेक बाद पहुँचता, मुदा खेनाइ-पीनाइ दस बजे दिनेसँ शुरू भऽ गेल छल।

अप्पन समयक अँटावेश करैत सात बजे साँझमे उत्तिमलाल भाय ऐठाम पहुँच आँगन-सँ-दरबज्जा धरि घुमि-फिर कऽ सभ किछु देखि मन आश्वस्त भइये गेल जे उत्तिमलाल भाय सफल बेवस्था केने छैथ। सभ किछु देखि-सुनि

उत्तिमलाल भायकेँ कहलयैन- "भाय, हम नइ रूकब। सभ किछु देखि-सुनि लेलीं, आब जेबाक आदेश दिअ।"

अपने ई सोचि बाजल रही जे उत्तिमलाल भाय अप्पन काजमे तेजी अनता, जइसँ काज आगू मुहँ ससरैत बढ़तैन। जहिना अपने बजलीं तहिना उत्तिमलाल भाय खाइ-पीबैक जगहपर हमरा पहुँचा कऽ कहि देलैन-

"भोजन केलाबाद अहाँ चलि जाएब।"

गाड़ी-सवारी बढ़ने, एते तँ भइये गेल अछि जे नमहरो राति छोट भऽ गेल अछि आ छोटो दिन नमहर भऽ गेल अछि, माने काज करैक समय बेसी भेने बढ़ि गेल अछि। बजलीं-

"उत्तिम भाय, घरदेखी बाँकी रहल।"

उत्तिमलाल भाय बजला-

"बड़बढ़ियाँ।"

सिनेमाक रील जकाँ अप्पन विचारक रील सेहो आगू मुहँ बढ़ल। आगू बढ़िते उत्तिमलाल भाइक पाँच बर्खक परेशानी मोन पड़ि गेल।

कहनिहारो आ बजनिहारो कहिते छैथ आ बजिते छैथ जे बेटा-बेटीक बिआह एक निश्चित सीमापर होइ। मुदा चाहलाक पछातियो कान्ही मिलबैमे, माने बर-कन्याक जोड़ मिलबैमे बर्खक-बरख गुजैर जाइए, तखन निश्चित सीमाक निश्चित सिमान केना रहत। खाएर जे रहए, ऐठाम उत्तिमलाल भाइक चर्च करै छी।

आन गुण उत्तिमलाल भायमे जे होनु मुदा बेटा-बेटीकेँ पढ़बैक गुण हुनकामे सभ दिनेसँ अनका अपेक्षा बेसी छैन्हे। जइसँ तीनू बेटियो आ दुनू बेटोकेँ एक सीमा धरि पहुँचाइये चुकल छैथ। ऐठाम सीमाक माने एक खण्डक सीमा, ओना जैठाम माने जइ देशमे बेरोजगारीक बोझ रहत तैठाम पढ़ाइक डिग्रीक कोनो मोल नहियँ रहैए, से अपनो ऐठाम अछिए। देखबे करै छी वैज्ञानिक बनैबला रेलबे स्टेशनमे टिकट काटै छैथ। जइसँ उत्तिमलाल भाय पाँचो

सन्तानकेँ एक सिमानपर पहुँचेला पछातियो, काजक अभावमे नोकरी नइ भेने, परेशान छथिए। ओना, अपना नीक नोकरी रहने उत्तिमलाल भायकेँ नीक पेंशनक आशा छैन्हे, मुदा उपभोक्ता समय भेने सभ वस्तुक पूर्ति नहियेँ कऽ पाबि रहला अछि।

अप्पन पहिल आ दोसर बेटीक बिआहमे तेना भऽ कऽ उत्तिमलाल भाय परेशान नइ भेला, तँए परेशानीक ओ गुण नहि भेटलैन जे तेसर बेटीक बिआहमे भेटलैन अछि। उत्तिमलाल भाइक अप्पन जेतेक सूत्र छेलैन, तइ सभ सूत्रक उपयोग अप्पन बेटीक बिआहमे केलाह, मुदा अनठिया साँपक काटल बीख जकाँ जे जनलाहा मंत्रसँ नइ उतरैए तहिना भइये गेल छेलैन। कहब जे अनठिया साँप आ जनलाहा मंत्र की भेल? अनठिया साँप भेल, नव-नव लेन-देनक चलैन आ सभ साँपक मंत्र अलग-अलग अछि, जइसँ एक मंत्र दोसर साँपक बीखकेँ नहि उताइर पबैए, तहिना समाजमे अनठिया साँपक प्रवेश भइये गेल अछि जइसँ मनुक्खक कोनो पहचाने ने रहल अछि। सभरंगा खेल चलिये रहल अछि। केतौ कोनो गाम घेरल अछि जइसँ ओइ गाममे लोक अप्पन बेटा-बेटीक बिआह नहि करै छैथ, तँ दोसर दिस कूल-मूल सेहो अप्पन आड़ि बना घेरनहि अछि। मुदा मनुक्खो तँ मनुक्ख छी, जे अप्पन पूर्ण स्वतंत्रता उपयोग करैत जाति-क्षेत्रसँ लऽ कऽ कूल-मूलक आड़िकेँ तोड़ि वैवाहिक सम्बन्ध सेहो बनैबते छैथ। खाएर ई तँ भेल गाम-समाजक लीला, मुदा उत्तिमलाल भाइक लीला दोसर रंगक छैन, समाजक मध्यम वर्गमे, ऐठाम वर्ग आ स्तर दुनू अछि, उत्तिमलाल भाइक जन्म भेल छैन। समाजमे स्तरक एक चलैन धनोक अछि आ दोसर चलैन जातियोक अछि। जहिना धनीक, बहुत धनिक, तहूसँ बेसी धनिक आ तहूसँ बेसी धनिकक सीमा अछि, तहिना गरीबक बीच सेहो अछि। गरीब, बहुत गरीब, तहूसँ बेसी गरीब आ तहूसँ बेसी गरीब सेहो अछिए। तहिना शिक्षाक मदमे सेहो अछिए आ जातिक मदमे सेहो अछिए।

समाजक मध्यम वर्गक परिवार ओहन अछि जे धनक जेते खगता हेबा चाही, सेहो अछि आ जीवनक क्रमानुसार जे शिक्षाक स्तर हेबा चाही सेहो अछि। जहिना धनक रूपमे उत्तिमलाल भाय छैथ तहिना शिक्षो आ जातियोक रूपमे छथि। पनरह-बीस लाख रूपैआ बेटी बिआहमे खर्च करैक विचार केनहि छैथ, मुदा एहेन वर्गक परिवारमे शिक्षाकेँ पाछू पड़ने लड़का-लड़कीक जोड़मे भारी खाधि सेहो बनियेँ गेल अछि। ओना, अखन तक जे अपना समाजमे एहेन चलैन रहल अछि जे बेसियो पढ़ल-लिखल लड़काक बिआह साधारणो पढ़ल-लिखल वा नहियोँ पढ़ल-लिखल लड़कीक संग भइये रहल अछि। ओना, तहूमे विस्फोटक स्थिति बनने मंत्रवाहकेँ बीख उतारब कठिन भइये गेल छैन।

जहियासँ उत्तिमलाल भाय नोकरीसँ सेवा निवृत्त भेला तहियासँ भेंट-घाँट हएब कमियेँ गेल अछि। समय छल जखन साँझ-भोर एकाध घन्टा एकठाम बैस अप्पन-अप्पन जीवनक संग देश-दुनियाँक गप-सप्य सेहो करै छेलौं, तैठाम मासक-मास भेंट नइ होइ छैथ। छअ मास पूर्व जे भेंट भेल छला आ ओइ दिन जे हुनक रूप देखलयैन तँ बिसवासे ने भेल जे उत्तिमलाले भाय छैथ। एक तँ ओहुना हुनकर शरीरक रंग पीरसियाम छैन्हे, मुदा तोहूमे बेटी बिआहक चिन्ताक रंग आरो कारी-झामर बना देने छेलैन। तैसंग सुखल मुँह रहने चेहरोक रूप आ मनो मलिन भइये गेल छेलैन।

अन्तिम भेंट दिन, माने छअ मास पूर्व जे उत्तिमलाल भाय भेंट भेला आ पुछने रहिएन- भाय, कन्यादानक की स्थिति अछि? तैपर, एक तँ सोगाएल-पीताएल मन उत्तिमलाल भाइक भइये गेल छेलैन, बाजल छला- अखन किछु ने!

मनक टुटान एहेन होइते अछि जे टुटिकऽ ओइ सीमापर लटैक जाइए जेतए ग्रीनबीच रेखा अवस्थित अछि। ओइठाम लोक ओहिना लटैक जाइए जहिना महाभारतक अनेको याद्दाकेँ अर्जुन जे गरदैन पकैड़ फेकलैन आ ओ जा कऽ जे लटकला। जेतएसँ ने केकरो निच्चाँ उतरल होइए आने ऊपर गेल होइए,

तेहने सीमापर उत्तिमलाल भाइक मन, बुझि पड़ल जेना लसैक गेल छैन। तँए बिच्चेमे खरिआरिकऽ पुछलयैन-

"भाय, एना जँ परिवारसँ मुँह मोड़ब तँ रहब केतए.?"

जेहने अध्येता तेहने ध्याता उत्तिमलाल भाय सभ दिन रहला। दार्शनिक भावमे बजला-

"जिज्ञासु भाय! की कहब, किछु कहने किछु ने बनैए..!"

बजलौं-

"से की भाय?"

अलंकारिक शैलीमे उत्तिमलाल भाय बजला-

"परिवारक राग छुटने लोककेँ विराग होइए आ विरागसँ जखन अनुराग होइए तखन ने अनुरागसँ दुनियाँक प्रति राग अबैए। तखन अहीं कहू जे जइ परिवारसँ वा आने वस्तुक रागसँ विराग होइए तँ ओकरा की करबै?"

अपने तँ साधारण बी.ए. पास केने छी। तहूमे चुड़ा-दही-चिन्नी पढ़िकऽ, माने भेल साइक्लॉजी, लॉजिक आ मैथिली पढ़ल छी, तँए उत्तिमलाल भाइक विचारकेँ नहि पकैइ मुँहछोहैन करैत बजलौं-

"भाय, आब ने ओ देवी रहल आ ने ओ कराह, तँए छोड़ू ओइ सभकेँ। कन्यादानक की स्थिति अछि?"

कारी घट-घटासँ बोझिल मेघमे एकाएक जहिना केतौ फाट एने सुरजक प्रकाश प्रकाशित होइए तहिना उत्तिमलाल भाइक चेहरापर इजोत छिटकलैन। जइसँ कलियाएल फूलक कोढ़ी जकाँ एकाएक उत्तिमलाल भाइक मुँहक सुरखीक रंग उतरए लगलैन। बजला- "भाय, विचित्र बनरफाँसमे पड़ि गेल छी। रावणक दरबारमे जहिना हनुमानकेँ फाँस लगा आनल गेल रहैन तहिना लगैए अपनो संग भऽ गेल अछि!"

पुछलयैन-

"से की भाय?"

उत्तिमलाल भाय बजला-

"अप्पन जे जातिक समाज अछि तइमे अपना गाममे तँ अपनेटा आ आन गाम बहुत एहेन अछि जइ गाममे हमरा बेटी एतेक पढ़ल-लिखल नहि अछि, तैठाम अहीं कहू जे हम्मर बेटी एक नम्बर भेल की नहि?"

उत्तिमलाल भाइक दमगर विचार सुनि केना कहितिऐन जे अखन तक अहाँक रूआब कम नहि भेल अछि, बजलौं-

"एकरा के काटत।"

हम्मर विचार सुनि उत्तिमलाल भायकें जेना सह भेटलैन तहिना बजला-

"एकठाम लड़काक भाँज लगिते, काजक विचारकें आगू बढेलौं। देखिते छी जे डॉक्टर लड़काक मांग डॉक्टर लड़कीक परिवारमे केहेन भऽ रहल अछि। शिक्षक-किरानीक तँ विचार छोड़ू, वेचारेकें दरमहो कम छैन आ भनसियो सब दिन रोगाएले रहै छैन।"

हमर विचारक प्रभावसँ आकि अप्पन मनक उत्साहसँ, से उत्तिमलाल भाय अपने जनता, मुदा मन्हुआएल मने बजला-

"भाय, एकठाम लड़काक सूहकार भेटल। एकटा संगीक संग ओइठाम गेलौं।"

कहि उत्तिमलाल भाय एकाएक ओहन चरिचकिया गाड़ी जकाँ जे पेट्रोल वा डीजल सठने रूकिकऽ ठमैक जाइए तहिना रूकि गेल। बजलौं- "भाय! अखन हमहूँ निचेने छी, तँए कोनो विचारकें राखू नहि।"

हम्मर बात सुनिते हूबा करैत उत्तिमलाल भाय बजला-

"भाय, समाज निरलज भऽ गेल अछि, एक दिस कन्याकें दान स्वरूप मानैए आ दोसर दिस कन्याकें मनुक्खक श्रेणीसँ निच्चाँ उतारि देने अछि!।"

उत्तिमलाल भाइक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं, तँए पुछलयैन-

"से केना भाय?"

खिसियाएल बिलाड़ जकाँ धुर-खुर नोचैत उत्तिमलाल भाय बजला-

"कहू जे जइ बेटीकेँ माता-पिता जन्मसँ जवान होइ तक पालि-पोसिकऽ दान करैए, तैठाम लोकक मन एतबो नइ मानैए जे कि भरि-भरि दिन नैतिकताक रट लगबैए। तेहेन लगौनिहारक नैतिकता केतए अछि।"

बजलौं-

"से की भाय?"

उत्तिमलाल भाय बजला-

"नैतिकताक सम्बन्धमे अखन एतबे कहब जे नैतिकता जीवनक अमूल्य रत्न छी। कहियो दोसर दिन आगूक चर्च करब जे नैतिकता की छी।"

उत्तिमलाल भाइक विचार सुनि अपनो मन मानि गेल जे अखन कन्यादान सन विषयपर विचार कऽ रहलौं हेन, तखन दोसर विचारक भूमियो तँ नहियँ अछि।

बजलौं-

"अखन छोड़ दुनियौंदारीक गप-सप्प, ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना मथ्यापर हाथ दइए। गपकेँ आगू बढ़ाउ।"

उत्तिमलाल भाय बजला-

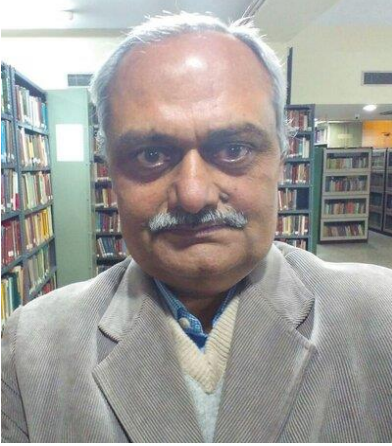
"जखन दुनू समांग बैस कऽ बेटी-बिआहक चर्च उठेलौं कि बरक बाप सुहरदे मुहँ कहि देलैन, अहाँ ऐठाम कुटुमैती नइ करब। अपने तँ चुपे रहलौं मुदा संगी पुछि देलकैन, किए ने करब? तैपर ओ बजला, बेटी कारी छैन। मन तँ तेते गरमा गेल जे मुँहमे पाँच थापर लगाबी, मुदा चुप-चाप उठिकऽ विदा भऽ गेलौं।"

नीनक आगमन भऽ गेल, तँए विचारक वातावरणमे नरमी आएल। ओना, समाधिक अवस्था तँ एकरा नइ कहबै जे चेतनताक पराकाष्ठा छी, मुदा एक मौसमसँ दोसर मौसमक बीच किछु-ने-किछु सुहावन वातावरण भइये जाइए, तइ अवस्थामे आबि गेल रही। एकाएक मनमे उठल, आइ उत्तिमलाल भाय गंगा लाभ भऽ रहला अछि। पाँचम दिन हुनका ऐठाम जाएब। तैबीच ओ अप्पन सभ काज, माने बिआहक काज सम्हारि लेने रहता। अपनो तँ किछु

दायित्व बनिते अछि किने जे आजुक जे बिआह-दानक परिवेश बनि गेल अछि तइ अनुकूल घर देखब सेहो अछि ने। अखन तकक जे परिवारक ढाँचा अछि आ नव परिवेशमे जे ढाँचा बनत, दुनूक बीच सामंजस हएब जरूरी अछिए। तैबीच तेसर बेर हाफी भऽ चुकल छल। चेतन क्रिया धीरे-धीरे शान्त होइत-होइत तेतेक निच्यौं उतैर गेल जे कखन नीन आबि गेल से बुझबे ने केलाह।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.८.रबीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)-
धारावाहिक



रबीन्द्र नारायण मिश्र

बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

खण्ड २१-२५

बदलि रहल अछि सभकिछु

संदीपक संगे बदमाससभ ओकर गाम सरिआ पहुँचल। शिखा ओही गामक छलि। नेनपनेमे ओकर माता-पिताक देहांत भए गेल रहैक । ओकर

पालन-पोषण पितामह केलखिन। मुदा ओहो किछु सालक बाद एहि दुनिआकें छोड़ि गेलाह । ओहि समयमे शिखाक बएस एगारह वर्ष रहल होएत। ओ गामेक मिडिल इसकूलमे पढ़ि रहल छलि ।

तकरबाद शिखाक पालन-पोषण एकटा समस्या भए गेल। आखिर ओकर मामा अपना लग आनि लेलखिन । ओएह ओकर आगूक पढ़ाइक व्यवस्था केलनि । नेताजीक ओकर मामाक ओहिठाम आवागमन होइत रहैत छलनि । हुनकर ध्यान शिखापर पड़लनि। ओहि समयमे ओ बी.ए.पास कए चुकल छलि । आब ओकर मामाक इच्छा रहनि जे बिआह करबा दिऐक जाहिसँ ओ एहि जिम्मेबारीसँ मुक्त होथि । ताही दिशामे ओ प्रयास कए रहल छलाह । एक दिन नेताजीक हुनकासँ भेंट भेलनि । गप्प-सप्पक क्रममे ओ ओकर बिआहक चर्च केलनि । नेताजी कहलखिन-

"अखन एकर बिआहक कोन धरफरी छैक । हम एकरा शक्तिपुरममे सरकारी नौकरी लगा देबैक । अहाँ एकरा लेने शक्तिपुरम आउ। नौकरी भए गेलाक बाद दहेजो नहि लागत आ नीक ठाम बिआहो भए जेतैक ।"

"बात तँ अहाँ बहुत नीक कहि रहल छी । मुदा शक्तिपुरममे हमसभ रहब कतए? संगमे शिखा सेहो रहति। ओतए तँ हमरा कोनो जोगार नहि अछि ।"

"अहाँ तकर चिंता छोड़ि दिअ । हम सभटा ओरिआन करबा देब । बस अहाँ अपन कार्यक्रम दू दिन पहिने सूचित कए देब ।

"हमर कार्यक्रमक कोन छैक? जहिए कहब तहिए बिदा भए जाएब । हमहु तँ बैसल-बैसल बरबाद होइत रहैत छी । एही बहन्ने कनीक घुमिओ लेब ।"

नेताजी बातपर विश्वास कए शिखा अपन मामाक संग हुनकर डेरापर शक्तिपुरम पहुँचलि । जे बात छैक नेताजी दोसरे दिन भेने शिखाकेँ एकटा इसकूलमे शिक्षिकाक काज दिआ देलखिन। डेराक व्यवस्था सेहो इसकूले परिसरमे भए गेलैक । ओहिठाम कैकटा महिला शिक्षकासभ पहिनेसँ रहैत छलि । तँ शिखाकेँ ओतए जल्दीए मोन लागि गेलैक । सभ किछु अनुकूल देखि ओकर मामा निश्चिंत मोनसँ अपन गाम लौटि गेलाह । किछुदिनक बाद जखन नेताजी गाममे ओकरा भेटलखिन तँ हुनकर बहुत स्वागत केलथि । दस आदमीक सामनेमे हुनकर गुणगान केलथि । गाम-घरमे देखाउस लागि गेल । कैकगोटे अपन बचिआसभकेँ नेताजीकेँ सहयोगसँ शक्तिपुरम पठा देलथि । सभ नेताजीक जयगान करैत वापस भेल रहथि । मुदा ओ सभ की जाने गेलथि जे नेताजीक असलिअत की अछि ?

संदीप नेताजीक बहुत पुरान विश्वासपात्र छल । क्रमशः नेताजी ओकर दुरुपयोग बढ़बैत गेलाह । ओ ई बात नहि बूझए से बात नहि छैक । सभ किछु बुझैत छल । मुदा हुनकर चक्रव्यूहमे तेना कए ओझरा गेल छल जे ओहिसँ निकलब आब असंभव लगैत छलैक । नेताजीक लगपासमे जतेक उल्टा-पुल्टा काज होइत छल तकर भार ओकरे कपारपर दए देल गेल छल । किछु आओर गोटेसभ सेहो नेताजीक संगे एहिना ओझराएल छल । मुदा सभक कार्यक्षेत्र फराक-फराक छलैक । इसकूलक छात्रावासमे रहि रहल महिला लोकनिक देख-रेख जिम्मा संदीपेक छलैक । ई बात सभ ककरो किछु पता नहि छलैक ।

सभ किछु शांतिपूर्ण रूपसँ चलि रहल छल आ साइत चलिते रहैत । मुदा संजोग एहन भेलैक जे एक राति शिखा विद्रोह कए देलकैक? कतबो नेताजी बुझेलखिन मुदा ओ टस सँ मस नहि भेलैक । नेताजी बहुत तमसाएल रहथि। मुदा सामनेमे किछु नहि बजलथि। संदीपकेँ बजा कए कहलखिन-

"एकरा छात्रावास पहुँचा दहक ।"

संदीप शिखा संगे बिदा भेल । शिखाकेँ इएह मौका भेटलैक । ओ सभटा बात संदीपकेँ कहि देलकैक । संदीप लाखे डराएल छल,नेताजीक चक्रव्युहमे फँसल छल,मुदा कतहु-ने-कतहु ओकरामे मनुष्यता बाँचल छलैक । ओ शिखाक कष्ट देखि बहुत दुखी भए गेल छल । तकर बाद बिना विलंबकेँ शिखाक संगे भागल आ भागले चलि गेल ।

नेताजीक पठाओल बदमास सभ ओकर पछोड़ करैत रहल। आखिर संदीप पकड़ाए गेल । संदीप ओकरासभक संगे अपन गाम पहुँचल । मुदा शिखा गाममे नहि छलैक । ओ गामसँ कखन आ कतए चलि गेलि से संदीपोकेँ नहि बूझल रहैक । आब तँ बदमाससभ ओकरापर सभटा तामस निकालए लागल । हल्ला सुनि कए गौवासभ जमा भए गेल । चारूकात लोकक करमान लागि गेल । बदमाससभ अपनाकेँ घेराइत देखि इएह-ले,ओएह-ले भागल ।

22

गाम पहुँचिओ कए शिखा बेचैन रहए । नेताजी आ ओकर संगीसभक अन्यायपूर्ण व्यवहारसँ ओकर सौँसे देहमे आगि लागि गेल रहैक ।

"हम आब ई सभ नहि सहब । अन्यायीसभकेँ दंड दिआ कए रहब । समाजक सामनेमे एकरसभक सही रूप आनि कए रहब।"

वारंवार इएह संकल्प ओकर मोनमे उठैत रहल । ओ थाना गेलि । अपना भरि बहुत प्रयास केलक जे प्राथमिकी दर्ज कराबी । मुदा थानेदार टस सँ मस नहि भेलैक । ओ उनटे तरह-तरहक बातसभ बाजए लागल । शिखाक सामनेमे थानेदार कैकबेर मोंछपर हाथ फेरैत रहल । मुस्की दैत रहल । थानेदारकेँ ऊपरसँ शिखाक बारेमे गुप्त संदेश नेताजी पठबा देने रहथि। कारण हुनकर मोन तँ अदकल छलनिहे । दरोगाक चालि देखि ओकरापर शिखा ततेक जोरसँ हुरकलकैक जे थानेदारकेँ जेना लकबा मारि देलकैक। तकर बाद शिखा कुर्सीपरसँ ऊठैत अछि,आ थानासँ बिदा भए जाइत अछि । जाइत-जाइत बजैत जाइत अछि-

"तूसभ रावणक रूप छै । सभक सही इलाज हेतौक। ओ समय आब लगीछ अछि ।" थानेदार जाबे होसमे अबितए, किछु करितए, ताबे तँ शिखा थानासँ निकलि गेल छलि ।

थानासँ बिदा भए शिखा सोझे टीसन पहुँचलि । ओतए विजयपुरमक ट्रेन लागल छल । जेना-तेना टिकटक जोगार केलक आ ट्रेनसँ विजयपुरम बिदा भए गेलि । राजधानी विजयपुरम जे इतिहासक कतेको परिवर्तनक गवाह रहल अछि,शिखाक जीवनक क्रान्तिक गबाह बनए जा रहल छल । केओ सोचिओ नहि सकल होएत जे शिखा एहन रूप धए लेति,सक्षात दुर्गा जकाँ राक्षसमंडलीक विनाशक हेतु कृतसंकल्प भए जाएत। दोसरदिन भेने ओ विजयपुरम टीसनक प्लेटफार्म नंबर आठपर पहुँचलि । ट्रेन ठाढ़ होइतहि यात्रीसभ अपन-अपन समानसभक संगे उतरि रहल छल। कुलीसभ यात्रीसभक समानकेँ उठा-उठा कए यात्रीसभक संगे आगू बढि रहल छल ।

मुदा शिखा जस-के-तस ठाढ़ि छलि। ओकरा बुझेबे नहि करैक जे केमहर जाए? की करए?

थोड़े काल ओहिना बैसल रहि गेलि। लगीचेमे चाहक दोकानसँ चाह कीनलक। चाह पीबि रहल छल की ओकरा महिला सहायता केन्द्रक फोन नंबरपर ध्यान गेलैक। ओ ओहि नंबरपर फोन करैत अछि। दोसर दिससँ तुरंत एकटा महिला बजैत अछि-

"हम महिला सहायता केन्द्रसँ बाजि रहल छी।"

"हमर नाम शिखा अछि। हम अखनहि ट्रेनसँ विजयपुरम पहुँचलहुँ अछि। हम बहुत परेसानीमे छी। हमरा अहाँसभक मदति चाही।"

"हमसभ अहाँक की मदति कए सकैत छी? की परेसानी अछि? अहाँ संगे के छथि?"

"हम असगरि आएल छी। हमर परेसानी बहुत गंभीर अछि आ फोनपर हम सभटा बात नहि कहि सकैत छी। हमरा एहिठामक किछु जानकारी नहि अछि। तँ ककरो हमरा मदतिक हेतु पठाउ।"

"अहाँ अखन कतए छी?"

"हम विजयपुरम टीसनक प्लेटफार्म नंबर आठपर बैसल छी।"

"ठीक छैक। अहाँ ओतहि रहू। हमसभ आबि रहल छी।"

थोड़े कालमे तीन-चारिटा महिलासभ पुलिसक संगे शिखा लग प्लेटफार्म नंबर आठपर पहुँचि जाइत छथि। ओ सभ शिखाकेँ अपन परिचयपत्र देखबैत छथि। ओकरा संगे चलबाक आग्रह करैत छथि। शिखा

हुनकालोकनिक संगे बिदा भए जाइत छथि । दस मिनटक बाद ओ सभ महिला सहायता केन्द्रक कार्यालय पहुँचि जाइत छथि । ओ सभ शिखाकेँ प्रसन्न करबाक भरिसक प्रयास करैत छथि। हुनका जलखै करबैत छथि, चाह-पान करबैत छथि । बहुत दिनक बाद शिखाकेँ लागि रहल छलनि जे ओ मनुक्खक बीचमे आबि गेल छथि , सुखी छथि । शिखाकेँ आश्वस्त देखि महिला सहायता केन्द्रक स्वयंसेवकसभ बहुत खुस होइत छथि । ओ सभ शिखाकेँ अपन सिकाइत लिखितमे देबाक आग्रह करैत छथि जाहिसँ ओहिपर पुलिस कारबाइ कए सकत । शिखा हुनकरसभक बात मानि अपन सिकाइत लिखैत छथि ।

ओ सभ शिखाक सिकाइत पढ़िए रहल छलीह की पुलिस आयुक्त गश्तीपर घुमैत-फिरैत ओतए पहुँचि जाइत छथि । शिखाकेँ देखि ओ पुछैत छथि-

"ई के छथि?"

"ई आइए ट्रेनसँ विजयपुरम अएलीह अछि । हमरासभकेँ फोनसँ हिनकासँ गप्प भेल छल । तकरबाद टीसन पहुँचि हिनका एतए लेने अएलिअनि अछि ।"

"ओ मुदा बातकी छैक? हिनकर परेसानी की छनि ?"

महिला स्वयंसेवीसभ एकदोसर दिस देखए लगैत छथि । फेर शिखाक लिखल आवेदन पत्र हुनकर हाथमे राखि दैत छथि । पुलिस आयुक्त महोदय शिखाक आवेदन पढ़ए लगैत छथि ।

ओहि आवेदनमे शिखा लिखने छथि-

"हमर माता-पिताक बहुतकमे बएसमे देहान्त भए गेल रहनि । तकर बाद हमर मामा हमर पालन-पोषण केलनि । हम मामागामेमे बहुत दिनधरि रहलहुँ । ओतहिसँ पढ़ाइ केलहुँ । ओतए देबन उर्फ नेताजीक आवागमन होइत छलनि । हुनकर हमर मामाक संग नीक संबंध रहनि । हम जखन छेटगर भेलहुँ तँ हमर मामा हमर बिआह करबाक प्रयासमे लागि गेलथि । हुनकर कहबाक रहनि-"बिना बापक बेटी थिक । एहि हेतु एकर बिआह नीकसँ नीक ठाम करब हमर कर्तव्य थिक ।" ताहि हेतु दिन-राति एक केने रहथि । नेताजी लग सेहो ओ एहि बातक चर्च केलनि जे जँ कोनो नीक वरक जानकारी होनि तँ सूचित करथि । नेताजी हुनका नीकसँ बुझा देलकनि जे ओ हमरा नौकरी दिआ देत जाहिसँ आगू बहुत नीक रहत । बिआहमे तँ मदति हेबे करत । हमर मामा बहुत सोझ आदमी छलाह । फेर हुनकर नेताजीसँ बहुत नीक संबंध रहनि । हुनका पर बहुत विश्वास रहनि । ओ नेताजीक बातमे आबि कए तीनदिनक बाद हमरा लेने हुनकर शक्तिपुरम स्थित डेरापर पहुँचि गेलाह । जे बात छैक,नेताजी हमरा दोसरे दिन एकटा इसकूलमे नौकरी धरा देलक । हमर रहबाक हेतु ओही इसकूलक आवासमे ओरिआन कए देलक । सभ किछु अनुकूल देखि हमर मामा बहुत प्रसन्न भेलाह । नेताजीकेँ हार्दिक धन्यवाद देलनि आ हुनकर आज्ञा लए गाम वापस बिदा भए गेलाह । तकर बाद हम अपन काजमे लागि गेलहुँ । शुरुमे तँ बहुत नीक लागल । इसकूलमे कैकटा शिक्षिकासभसँ दोस्ती भए गेल । समय बहुत नीकसँ कटए लागल । ओहीसभमे सँ किछुगोटेक नेताजीक संग बहुत अंतरंग संबंध रहैक । ओ सभ हमरो नेताजीक बैसारमे लए जाए लागल । ओना शुरुमे तँ सभकिछु ठीक-ठाक बुझाइत रहल । मुदा बादमे नेताजी क्रमशः अपन असली रूप देखबाए लागल ।

संजोगसँ एकदिन हमसभ बहुत राति धरि नेताजीक ओहिठाम अँटकि गेल रही । भेलैक ई जे फगुआक समय रहैक । नेताजीक ओहिठाम

तरह-तरहक आयोजन रहैक । इसकूलसँ लगभग सभटा स्टाफ आएल रहैक । बाहरोसँ बहुत रास लोकसभ आएल रहैक । नारी निकेतनक सभ आश्रमवासी सेहो नोतल गेल रहथि । माने नेताजीक ओतेक अइल-फइल डेरा सेहो छोट पड़ि गेल रहैक । बगलक बंगला खाली रहैक । बहुत रास लोकसभ ओमहरो छलाह । ओही बंगलामे एकटा एकांत स्थान सेहो बनाओल गेल छल । रातिमे भोजनक समयमे हम अपन संगीसभक संगे जखन ओतए भोजनक हेतु पहुँचलहुँ तँ किछुगोटे हमरासभकेँ ओहि एकांत कक्ष दिस लेने चलि गेल । बाहरसँ तँ ओतए किछु गड़बड़ नहि बुझाइक। मुदा जँ जँ भीतर पैसैत गेलहुँ, तँ तँ ओहिठामक असली रूप बुझबामे आबए लागल । तखन तँ ओतएसँ भागबाक प्रयत्नमे लागि गेलहुँ । मुदा आओर ककरो कोनो प्रकारक चिंता नहि देखिएक । हम अपन संगीसभकेँ कहबो केलिएक-

"हम एहिठामसँ जाए चाहैत छी ।"

"से किएक? एहन नीक आयोजन छोड़ि कए डेरामे की करब? फेर हमहुसभ तँ छीहे ।"

हमरा मोनमे खटका तँ भेल । मुदा ई नहि बुझाए जे हमर संगीसभ सेहो नेतेजीक दिससँ काज कए रहल अछि । मुदा असलियतमे बात सएह रहैक । दूपहर रातिमे जेना-तेना असगरि हम ओहिठामसँ भागल रही । तकरबाद कैक दिन धरि बकोर लागल रहि गेल । सौँसे देहमे दर्द होइत रहल । बुझेबे नहि करए जे आखिर भेल की? एना अचानक मोन किएक खराब भए गेल?"

क्रमशः थोड़े दिनक बाद हमर मोन ठीक भए गेल । सभ बात बिसरा गेल । मुदा एकदिन अखबारक मुख्यपृष्ठपर नारी निकेतनक समाचार छपल देखाएल। ओकर शीर्षक छल-

"नारी निकेतन गुंडागर्दीक अड्डा भए गेल अछि । ओहिठाम काल्हि पुलिस छापा मारलक । कैकटा महिलासभ गायब छलीह । पुलिस हुनकासभकेँ पछोड़ करैत-करैत शक्तिपुरमक महत्वपूर्ण स्थानसभसँ निकाललक । सौँसे सहरमे हरकंप मचि गेल अछि ।"

पक्ष-प्रतिपक्षक समस्त नेतालोकनिमे हरकंप मचि गेल । सभ एहि घटनाकेँ शांत करबामे लागि गेलाह । ओहीक्रममे नेताजी संदीपकेँ हमरा आ किछु आओर महिलासभक पाछू लगा देलक । संदीपकेँ ई सभ नीक नहि लगैत रहैक । ओ एहिसभसँ दुखी रहए, बाहर होबए चाहए । मुदा नेताजीक चांगुरसँ निकलब एतेक आसान नहि रहैक । मुदा ओकरा हमर हालत देखि बहुत दुख रहैक आ एकदिन ओ हमरा संग कए ओहिठामसँ भागल । तकर बातक बात तँ पुलिसक जानकारीमे अछिए । हम चाहैत छी जे दोषी व्यक्तिसभकेँ कानूनक मोताबिक दंड देल जाए आ निर्दोष महिला लोकनिकेँ ओकरासभक चांगुरसँ मुक्त कराओल जाए ।

निवेदक,

शिखा

23

शिखाक सिकाइतपर पुलिस आयुक्त तुरंत संज्ञान लैत जीरो प्राथमिकी दर्ज करबा देलनि । साँझमे प्रेस सम्मेलनमे एहि मामिलासँ जुड़ल सभटा प्रसंगकेँ प्रकाशमे अनलनि । ततबे नहि, नारी निकेतनक स्थिति आ परिस्थितपर सीबीआइक जाँच बैसबाक आदेश सेहो सरकार दिससँ कएल गेल । कहबाक माने जे थोड़बे कालमे मामिला घनघना गेल । एकर

साक्षात प्रभाव शक्तिपुरमक राजनीतिमे देखबामे आएल । कतहु-ने-कतहुसँ एकटा भीडिओ टेलीवीजनपर देखाओल जा रहल छल । ओहिमे राज्यप्रमुखक सामिल होइत स्पष्टतासँ साबित भए रहल छल । आब तँ हुनकर अपने लोकसभ हुनकर शत्रु भए गेल । पार्टीक आंतरिक बैसकमे हुनका जनहितमे आ पार्टीक भविष्यक हेतु तुरंत त्यागपत्र देबाक दबाब बनाओल गेल । संगहि इहो कहल गेल जे हुनका लोकनिक जानकारीमे एहूसँ बेसी बेपर्द भीडिओसभ आएल अछि जाहिमे राज्यप्रमुख स्वयं असमाजिक काजमे लागल देखाइत छथि । राज्यप्रमुखजी माथ पकड़ि लेलनि । ओ ठामहि उठलाह आ राजभवन जाए अपन त्यागपत्र दए देलनि । ओना एहिसभ घटनाक प्रभाव पड़बे करितैक, मुदा एतेक जल्दी, सेहो राज्यप्रमुखपर, से केओ साइते सोचने रहल होएत । मुदा भेल सएह । राज्यप्रमुखक इस्तिफाक समाचार सौंसे गनगना गेल । तकर बाद तँ जकरा जे मोन होइक से बाजए ।

"इस्तिफा देलासँ की हेतनि । जे पाप कएलाह अछि, ताहि आगू तँ ई किछु नहि अछि । हिनका तँ जहल जेबाक चाही ।" जतेक मुँह ततेक तरहक बात सुनबामे आबि रहल छलैक । मुदा नेताजीक खिलाफमे केओ एक शब्द नहि बजैक । मीडिआ तँ हुनकर आदर्श छवि प्रस्तुत करबामे जी-जानसँ लागि गेल छल । एना सन जेना ओ अगिला राज्यप्रमुख भइए गेलाह ।

भोरे भेने शक्तिपुरमक राजनीतिक परिदृश्य बदलि गेल छल । नेताजी राज्यप्रमुख बनताह, से घोषणा टेलीवीजनपर वारंवार कएल जा रहल छल । ओ राजनीतिमे सुचिता अनताह, राज्यकेँ विकासक उत्कर्ष धरि पहुँचा कए रहताह, ककरो संग अन्याय नहि होबए देखिन, से वारंवार उद्धोषणा भए रहल छल । ततबे नहि, नारी सशक्तिकरण हेतु एकटा नवीन मंत्रालय बनओताह जकर काज सोझे ओ स्वयं देखताह । नारी निकेतन कांडमे दोषी पाओल गेल ककरो नहि बकसताह, चाहे ओ कतबो पैघ आदमी

ने होअए । राज्यकेँ बदलि कए रहताह । चाहे हुनकर जान रहनि की जानि । दिनभरि टेलीवीजनपर इएहसभ अबैत रहल। सौंसे माहौलमे नेताजीक छवि नीक करबाक प्रयास परिलक्षित भए रहल छल।

हम,शक्तिनाथ आ संदीप अपन डेरासँ एहि समाचारसभकेँ देखि क्षुब्ध रही । देहमे जेना आगि लागि गेल होअए। मुदा करितहुँ की? नेताजीक काट ताकब आसान काज नहि छल । हुनका संगे बहुमत छलनि आ लोकतंत्रमे बहुमतक कोनो काट नहि छैक । ओसभ जे चाहत सएह होएत। कानून ओकरे संग रहतैक । जरूरी पड़लापर ओ सभ कानूनकेँ बदलिओ देत जाहिसँ सभकिछु मनमाफिक भए सकत ।

ओमहर नेताजीक शपथग्रहण समारोह आयोजित भए रहल छल आ नारी निकेतनक सामनेमे जबरदस्त हंगामा पसरि गेल छल। जनक्रान्ति दलक कार्यकर्तासभपर दनादन लाठीक प्रहार पुलिस कए रहल छल। अश्रुगैस छोड़ल जा रहल छल । नेताजीक विरोध कए रहल प्रदर्शनकारीसभ जान लए भागि रहल छल । संदीपकेँ तँ प्रदर्शनकारीसभ अगुआ बनओने छल। कतबो इसारा करिएक जे मंत्रणा हेतु कोठरीमे आबए,ओ आबिए नहि पाबए। हंगामा बढ़िते जा रहल छल आ पुलिस सेहो पाछू नहि हटि रहल छल । लगैत छल जे किछु अनिष्ट भइए कए रहत । मामिला बिगड़ैत देखि पुलिस गोली चला देलक । कहि नहि कैक राउंड गोली चलल । कतेकोगोटे जमीनपर घायल पड़ल छल। लोकसभ जहाँ-तहाँ भागल । कैकगोटेकेँ पुलिस पछोड़ कए टांग-हाथ तोड़ि देलक । सायरन बजबैत रोगी वाहन आएल,फाएर ब्रिगेड आएल । पुलिस जमीनपर पसरल खूनकेँ साफ करबएमे लागि गेल । थोड़बे कालक बाद लगलैक जेना ओतए किछु भेले नहि होइक । देखिते-देखिते ओहिठाम नितांत एकांत पसरि गेल ।

ओही माहौलमे केओ बाजल-

"शिखा हवाइ जहाजसँ शक्तिपुरम आबि रहल छथि ।"

असलमे शक्तिपुरममे राजनीतिक घटनाक्रमसँ ओ उद्वेलित भए गेल छल । जे असली दोषी छल से तँ राज्यप्रमुख बनि रहल छल । बेसक विजयपुरम जा कए ओ पुलिसमे प्राथमिकी दर्ज करबा सकलि मुदा परिणाम तँ उल्टे देखा रहल छलैक । जकरा जहलमे हेबाक चाहैक छलैक सएह राज्यप्रमुख बनए जा रहल छल । ई बात ओकरा बरदास नहि भए रहल छलैक । विजयपुरममे पुलिस ओकरा शक्तिपुरम जेबासँ मना करैत रहि गेल, मुदा ओ अड़ि गेलि आ शक्तिपुरम पहिल उपलब्ध हवाइ जहाजसँ पहुँचि गेलि । ई बात हमरा शक्तिनाथ सभसँ पहिने सूचित केलथि ।

24

कहबी छैक जे एक तँ करैल ओहो नीमपर चढ़ल । सएह हाल नेताजीक रहनि । ओ तँ जन्मजात बदमास छलाहे । सभदिन लोककेँ ठकैत रहल, अपन स्वार्थ केना पूर्ति होएत ताहि ब्योतमे लागल रहलाह । ककरो नीक होउक, बेजाए होउक हुनका कोनो मतलब नहि रहैत छलनि । मुदा लोकक सामनेमे तेना ने अभिनय करितथि जेना ओकर ओ सभसँ पैघ शुभचिंतक होइक । नेताजी शुरुएसँ एहि फिराकमे रहथि जे कहुना राज्यप्रमुखक कुर्सी हथिआ ली, तकर बाद देखल जेतैक । से मौका हुनका भेटिओ गेलनि । जनताक आक्रोशक समाचार सुनि ओ असगरमे ठहाका पाड़ि रहल छलाह । जेना जे किछु भए रहल अछि तकर हुनका कोनो परबाह नहि रहनि ।

"पैघ आदमीक ई सभ गहना छैक । थोड़े दिनक बात छैक, सभ पानिक बुलबुला जकाँ अपने खतम भए जाएत । ताबे चैनसँ दारू पिबल जेतैक । आओर किछु करबाक काज नहि ।"

"नारी निकेतन कोनो आजुक अछि? एहन-एहन घटना तँ होइते रहलैक अछि । कहाँ कहिओ केओ विरोध केलक? किछु नवका छौंड़ासभ जनक्रान्ति दलक नामसँ समाजमे आगि लगाबए चाहैत अछि से हम होअए देबैक? कदापि नहि । आखिर हम राज्यप्रमुख छी कथीक लेल?"

जखन ओकरा शिखाक शक्तिपुरम हवाइ अड्डापर पहुँचि जेबाक समाचार भेटलैक तँ ओ तुरंत पुलिसक आला अधिकारीसभकेँ ओकरा पाछू लगा देलाह।

"कोनो हालतमे ओकरा हवाइ अड्डासँ बाहर नहि जाए देबाक छैक । ओ चाहए तँ विजयपुरम वापस चलि जाए, नहि तँ सोझे जहल जाए । राज्यमे आगि लगाबक स्वतंत्रता ओकरा नहि देल जा सकैत अछि ।"

एहि आज्ञाक संगे पुलिस उच्च अधिकारीलोकनि हवाइ अड्डा पहुँचि गेल रहथि ।

हम,शक्तिनाथ आ संदीप सेहो हवाइ हड्डापर शिखाक स्वागत करबाक हेतु पहुँचि गेल रही । हमरासभक संगे जनक्रान्ति दलक किछु कार्यकर्तासभ सेहो हवाइ अड्डाक बाहर झंडा लेने नारा लगा रहल छलाह-

"शिखा जिंदाबाद । इनकिलाब, जिंदाबाद ।"

किछुगोटे पताका लेने छलाह-" अन्यायीसभक विनाश भए कए रहत ।"

पुलिस रहि-रहि कए ओकरासभकेँ खिहाड़ि रहल छल। शिखाक हवाइ जहाज बड़ीकाल धरि आकाशमे घुमि रहल छल । ओकरा उतरबाक अनुमति नहि देल जा रहल छलैक। हवाइ जहाजमे बहुत सीमित मात्रामे इंधन बाँचल छल । हवाइ जहाजक चालक दल बहुत चिंतामे छल । ओ सभ वारंबार नियंत्रण कक्षकेँ संवाद पठा रहल छल । मुदा ओहोसभ की करितए? ऊपरसँ आज्ञा आएल छलैक। हवाइ जहाजक भीतर यात्रीसभ बेचैन छलाह । चालक दल बेर-बेर कहैक-

"हमसभ जहाजकेँ उतारबाक आज्ञाक प्रतीक्षा कए रहल छी । चिंताक बात ई थिक जे हवाइ जहाजमे आब बहुत कम इंधन बाँचल अछि । देरी भेलापर किछु भए सकैत अछि।"

यात्रीसभ बहुत परेसान भए गेल रहथि । शिखा तँ तामसे आगि भेल रहए । कखनो काल ओकरा अफसोचो होइक जे ओकरे कारणे आनो यात्रीसभक प्राणपर संकट आबि गेल छल । अंतमे चालक देल कंट्रोलरूमकेँ आपातकालीन सूचना देलकैक आ हवाइ जहाजकेँ उतारि देलक । कारण आओर देरी भेलासँ जहाजमे ऊपरमे आगि लागि जाएत । ककरो जान नहि बाँचितैक ।

हवाइ जहाजकेँ उतरितहि ओकरा पुलसभ चारूकातसँ घेरि लेलक । ओकरसभक इच्छा इएह रहैक जे जँ शिखा हवाइ जहाजसँ उतरि कए बाहर निकलबाक प्रयास करैत अछि तँ ओतहिसँ जहलक रस्ता देखा देल जाएत ।

बाहर जनक्रान्तिदलक कार्यकर्तासभक हंगामा चलिए रहल छल । क्रमशः लोकक संख्यामे इजाफा भेल जा रहल छल । हम कतबो बुझेबाक प्रयास करिएक, लोकसभ किछु सुनबे नहि करैक । किछु फुरेबे नहि करए जे आब की कएल जाए ? कहीं फेर अनिष्ट ने भए जाइक । हम आ शक्तिनाथ

एही विषयसभपर मंत्रणा करैत रही । संदीप प्रदर्शनकारीसभकेँ सम्हारबामे लागल छल । एतबहिमे हवाइ जहाज घुसकल । घुसकैत-घुसकैत मुख्य भवन धरि आबि गेल । ओहिठामसँ तँ पैरे बाहर आएल जा सकैत छल । शक्तिपुरम हवाइ अड्डा अछिए कतेकटा । मौका देखि शिखा हवाइ जहाजसँ उतरल आ एक-एक कए सभटा वस्त्र अपन देहसँ उतारए लागल । आब तँ गर्द पड़ि गेल ।

"हाँ, हाँ ई की कए रहल छी?

"हौ लोकसभ! कहनुा हिनका रोकह? ई तँ महा अनर्थ भए रहल अछि ।"

लोकसभ शिखाकेँ बुझेबाक प्रयास कए । तरह-तरहक आश्वासन दिअए । मुदा शिखा सुनबाक हेतु तैयार नहि रहए ।

"की नाटक कए रहल छी? जखन शासनक सर्वोच्च शिखरपर असवार लोकसभ हमरा सन-सन कतेको महिलाकेँ नाडट करबाक हेतु दिन-राति लागल अछि तखन अहाँ सभक आश्वासनपर कतेक भरोसा कएल जा सकैत अछि? "

से कहि ओ हवाइपट्टीपर बैसि गेलि । हवाइ जहाजक आवागमन बाधित भए गेलैक । आकाशमे जहाजसभ चक्कर लगबैत रहल । मुदा उतरबाक अनुमति नहि भेटैक । चारूकात हाहाकार मचि गेल । हवाइ अड्डाक अधिकारीलोकनि परेसान छलाह । किछु फुरेबे नहि करनि जे की कएल जाए?सभ ओकरा बुझेबाक प्रयास कए रहल छल । मुदा ओ अड़ल छलि,अड़ल रहि गेलि । हमसभ एहि दृश्यकेँ देखैत रहि गेलहुँ । एहनो हेतैक से सपनहुमे नहि सोचने रही।

बहुत मोसकिलसँ किछु महिला पुलिससभ शिखाकेँ हवाइपट्टीपरसँ उठओलक आ कतहु कात बाटे एकांत भवनमे लए गेलनि । शिखाक विद्रोहसँ सरकार हिलि गेल छल । नेताजी सभकाज छोड़ि एहि आगिकेँ मिझएबामे लागि गेलथि । मुदा शिखा अड़ल छलि । जाहिठामक सरकारेक मुखिया एहन होइक, लोककेँ जबरदस्ती नाडट करबाक हेतु दिन-राति एक केने होइक ताहिठाम ई नाटकसभ करबाक कोन प्रयोजन अछि? हमरा तंग नहि करू । जहिना छी,जे छी से रहए दिअ । नाटक छोड़ैत जाउ।"

जखन शिखा अपन बातपर अड़ल रहि गेलि आ रहि-रहि कए खिड़की लग आबि जाए,ओहि कोठरीसँ भागि जेबाक प्रयास करए तखन महिला पुलिससभ चारूकातसँ घेरि लेलक आ ठामहि बैसल रहबाक हेतु मजबूर कए देलक । मुदा ओ तँ जेना सनकि गेल छलि । कैकटा महिला संगठनक अधिकारीलोकनिकेँ बजाओल गेल । शिखाकेँ तरह-तरहसँ बुझेबाक प्रयास भेल । केओ अपन प्रयासमे सफल नहि भेल । ताधरि बाहर हमसभ समर्थकक संगे अड़ल रही । बुझेबे नहि करए जे आखिर,भए की रहल अछि? शिखा बाहर किएक नहि आबि रहल अछि?

हम आ शक्तिनाथ बाहर ठाढ़ छलहुँ । आपसमे किछु मंत्रणा कए रहल छलहुँ । ताबते पुलिसक किछु आला अधिकारी हमरासभ लग अबैत छथि । ओ सभ शिखाक विद्रोही स्वरूपसँ भयाक्रान्त छथि । ऊपरसँ बहुत दबाव पड़ि रहल छनि जे जल्दी एहि विवादकेँ खतम करू । अपना भरि ओ सभ प्रयास केबो केलाह । मुदा किछु नहि कए सकलाह । शिखा अडिग अछि । सभकेँ नाडट कए देबाक हेतु कटिवद्ध अछि ।

"अहींसभ हुनका बुझबिऔन । एना तँ समाज नहि चलि सकैत अछि । विरोधक ई तरीका तँ कानून सम्मत नहि अछि। हमरासभकेँ हारि कए किछु करहि पड़त ।"

हम हुनका लोकनिकेँ की जबाब दितिअनि । तथापि, कहलिअनि-

"जखन अहाँलोकनि सभटा उपाय कइए रहल छी आ एतेक शक्तिसंपन्न छी तखन हमरासभ लग की करए अएलहुँ अछि? हमसभ तँ बदनाम छीहे? मुदा एतबा नीकसँ बूझि लिअ जे नेताजीक पाप आब दबाओल नहि जा सकत । संपूर्ण समाज जागि गेल अछि। ओकर विनाश आब तय छैक ।"

"अहाँसभ अपन राजनीति करैत रहब । मुदा एखन जे समस्या अछि तकर तँ किछु समाधान कए दिऔक।"

"एकर समाधान हम की करबैक? हमरासभकेँ तँ नीकसँ बुझलो नहि अछि जे बात की भेलैक जाहि कारण ओ एतेक उग्र रूप धए लेलनि अछि ?"

"कम सँ कम हुनका कहि सकैत छिअनि जे हवाइ अड्डासँ बाहर आबि जाथि। तकरबाद जे करबाक होनि से करिहथि?"

"आ अहाँसभ चैनसँ पान-सुपारी खाइत रहब?"

राति भरि मंत्रणाक चलैत रहल । शिखा अपन बातपर अड़ल छलि । दोसर दिन प्रतिनिधि सभाक सत्र प्रारंभ होइतैक । नेताजीक प्रयास रहैक जे ताहिसँ पहिने किछु समाधान भए जाइक। ताहि हेतु भरिसक प्रयास कएलो गेल । बड़का-बड़का हाकिमसभ लागल रहलाह । मुदा जखन शिखा टस सँ

मस नहि भेलि तँ अधिकारीलोकनि हारि कए हमरासभ लग पहुँचलथि । हमहु की कए सकैत छलहुँ? जाबे शिखासँ गप्प नहि होइत ताबे ओकर मोनक बात कोना बुझितिएक? आखिर अधिकारीलोकनि मोबाइलसँ हमरासभक गप्प शिखासँ करबओलनि । शिखा अपन बात किछु कहबाक बदला भोकासी पाड़ि कए कानए लागलि । हमरो ओकर स्थितिपर बहुत कष्ट भेल । शक्तिनाथ तँ उग्र भेल जा रहल छल । हम इसारासँ ओकरा रोकबाक प्रयास केलहुँ । ओमहर संदीपक हालत सेहो बहुत पस्त रहैक। प्रदर्शनकारीसभ लस्त पड़ि गेल छलाह । मामिला शांत हेबाक बदलामे गरमाइते जा रहल छल।

"तखन कएल की जाए?"

"शिखासँ आग्रह कएल जाए जे धैर्य राखए । ई कोनो व्यक्तिक समस्या नहि अछि। नेताजी सन-सन लोक समाजक कोढ़ अछि। ओ सभ बहुत जड़िआएल अछि । शासनमे प्रमुख स्थानपर बैसल अछि । तेहनमे तँ जँ हमसभ वुद्धिसँ काज नहि लेब तँ किछु नहि कए सकब । अस्तु, हमरासभकेँ शांतिपूर्वक विचारि कए काजकेँ आगू बढेबाक होएत ।"

ई बातसभ शिखा सुनलक ।

"मुदा हम एहि नेताजीक विनाश केने बिना अपन पूर्वरूपमे नहि आबि सकैत छी ।"

"नहि आउ । मुदा समाजमे रहबाक हेतु ओकर नियमकेँ तँ मानहि पड़त । आखिर, हमरा लोकनिक आंदोलनो तँ समाजक बीचेमे आ समाजक कल्याणके हेतु होएत ।"

बहुत आग्रह केलापर ओ अपन निर्णयमे संशोधन करैत घोषणा केलक-

"जाधरि एहि दुष्टसभक अंत नहि होएत हम आइसँ श्वेतवस्त्रा रहब।"

हमरा लोकनिक प्रयाससँ पुलिसक आला अधिकारी लोकनिक जान मे जान अएलनि । एकटा महिला आगू बढि कए ओकरा श्वेतवस्त्र देलकैक । ओ एकहिटा श्वेतवस्त्रकेँ ऊपरसँ नीचा धरि पहिरने हवाइ अड्डासँ बाहर भेलीह । देहमे आओर किछु नहि । मीडिआबलासभ सेहो एहि मौकाकेँ जाए देबए नहि चाहैत छल । तरातर हजारो फोटो खिंचा गेल । जकरा ककरो मोबाइल रहैक से चुकल नहि ।

पुलिसक सुरक्षामे ओ हमरासभक संगे जनक्रान्ति दलक मुख्यालय पहुँचि गेलीह । समर्थकलोकनि सेहो पाछू लागल ओतए आबि गेलथि ।

-रबीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, बएस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अडेर डीह, मातृक: सिन्धिया ड्योढी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा), २. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. फसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन

वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देबाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

३.पद्य खण्ड

३.१.बद्रीनाथ राय-तीन टा गीत

३.२.प्रमोद झा 'गोकुल'-छूटल ठाम हेरायल गाम

३.३.राज किशोर मिश्र-सांस्कृतिक क्षरण

३.१.बद्रीनाथ राय-तीन टा गीत



बद्रीनाथ राय

तीन टा गीत

१

गे बहिना वर हमर बड़ बुरिबक आऔर अनारी छै,

मूर्खशिरोमणि कारी छै ना।.....

दूष्ट दहेजक हम छी मारल ,

यौवन जिबिते गेलै जारल।

बुरिबक बात नजि बुझए,

बापक आज्ञाकारी छै।।

मूर्खशिरोमणि..... ..

एक त गोबर के छै चोत,

हम छी लाजे लाहालोट।

लाजक बात की कहियौ,
नजि पुरुषे नजि नारी छै ।
मूर्खशिरोमणि
यौवन छिन्न भेल निस्तेज,
फाटए कोमल कोढ करेज।
बुझए प्रणय निवेदन के नजि,
पैघ बीमारी छै ॥
मूर्खशिरोमणि.....
कहितो लाज लगइए भारी,
अकिल के खोलए नजि अलमारी।
बरही बिना ओजारक ,
वुद्धिक बन्द केबारी छै ॥
मूर्खशिरोमणि..... ..
करबै केकरा पर हम आश ,
बाहर पवन बहै उनचास।
केकरा कहबै मनक बतिया,
बड़ लाचारी छै ॥
मूर्खशिरोमणि
जहिना झरकल सन छै देह,
हमरो जरलै सख सिनेह।
विद्या पढने एक्कहि मात्र ,
मुदा भैंसबारी छै ॥
मूर्खशिरोमणि..... ..
शिक्षा पहला मे अछि फेल,
हमरा चिन्हलक नजि बकलेल।

नहिरा नीक लगइए,
रहै जेना कुमारी छै।।
मूर्खशिरोमणि.....
पौरूष रखने नजि जरलाहा ,
बथुआ साग सनक नरमाहा।
यौवन धधकि रहल अछि,
हमरा संड लाचारी छै।
मूर्खशिरोमणि |

२

गे बहिना वर हमर बड़ बुरिबक आऔर बकलेल छै,
सासुर सेन्टर जेल छै ना
देवर चारू काच कुमार,ससुरक साप सनक फुफकार।
ननदी नाक कटाक' नडटिनीया सन भेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल छै ना...
बर्तन मजिते देह खियाएल,साउसक बातो बेस पिजाएल।
धनि ओ जुन्ना सन के ऐठलि आऔर विष वेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल
घर मे डर लगइए भारी,लागल नजि छै फटक केबारी।
सबटा दूष्ट दहेजक कारण गड़बर भेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल छै ना.....
ससुरक जेठ भाइ मुहझौसा, फूलल बेड सनक अछि ढौसा।
अगुआ आगि लगाक' सारा मे सूति गेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल |
मरण वरक बाप जे लोभी,ओ छथि देवक वेद विरोधी।
स्रष्टा सृष्टी केलनि गड़बर आऔर बेमेल छै।।

सासुर सेन्टर जेल छै ना।..... ..

३

की कहियौ बहिना हम,ससुरा के हाल गो।
साउस हमर सूर्पनखा,ससुर हमर काल गो। ।
गोतनी छै गोर मुदा, गौरवे छै आन्हर।
ढेकरइए साढ सन, नह जेना नाहर ।।
ननदी नटिनिया बड़ बजबै छै गाल गो।
साउस हमर

देवर छै गोबर सन,कोयला सन काया।
भैंसुर छै भैंसा सन निर्लज बेहाया।।
कंठी पहिरी करै कौआ हलाल गो।
साउस हमर

बाबू दहेज देलनि किनला अनारी।
बुझए नजि बात बरद अवगुण छै भारी।।
कोठी छै ढन ढन होय भूख हड़ताल गो।
साउस हमर

घर मे नजि चिक्कस,नजि कोठी मे चाउर छै।
बारी मे ओल बहुत, उपजल खम्हाउर छै।।
नोरे मे तरुआ तरै छी लाल लाल गो।
साउस हमर

सरपंचो सासुर के,मौगा छै मुखिया।
पेटु प्रमुख आओर डीलर छै दुखिया। ।
मेम्बर के पेट जेना,टंकी विशाल गो।
साउस हमर

वर हमर बुरिबक सन, फर महकारी।

भेलै विवाह देख,कोठा अटारी।।

बिगरल व्यवहार हुनक,तेकरे मलाल गे।

साउस हमर

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२. प्रमोद झा 'गोकुल'-छूटल ठाम हेरायल गाम



प्रमोद झा 'गोकुल'

छूटल ठाम हेरायल गाम

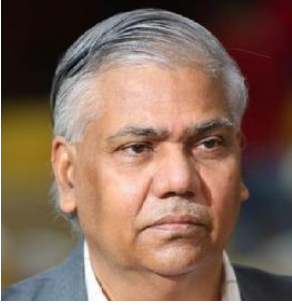
सर सरोकार सब भेल तार तार
गौवाँ घरुवा तक भेल अनचिन्हार
संबन्धोमे नइ रहलै ओ प्रखर धार
झक झक उघार घोंटि लाज विचार
आठो याम अविराम जपय मंत्र सब हेरा फेरी।
छूटलै गाम हेरयलै ठाम आम लताम झरबेरी ॥
बहि रहलै सगरो उनटा बयार
खेतोपथार भेलै अनचिनहार
भाइ भाइ सड करय तकरार
स्वार्थक डंका बजय आर पार
बेटा भातिज तैयार फोरैले कपार
इरखा द्वेखक बाजार सजल छै सेर पसेरी।
छूटलै ठाम हेरयलै गाम आम लताम झर बेरी ॥
दौड़ा दौड़ी झिझुर कोना

खेल कबड्डी बिलायल कोना
अथरा बिथरा अटकन मटकन
बनल किरकेटक मुहँ पोछना
अतीतक द्वारि पर वर्तमानक जबर्दस्त पहरेदारी ।
छूटलै गाम हेरयलै ठाम आम लताम झरबेरी।।
ग्रील बन्द घरक छै जोर लगन
अपनेमे रहय सब मस्त मगन
मतलबेमे चूड़ा दहीक ओठगन
अतिथि अकच्छ गनथि तरेगन
भैया भीतर बन्द अवाक बाहर भौजी करथि तक्काहेरी।
छूटलै ठाम हेरयलै गाम आम लताम भरबेरी।।
धियिपुता बपजेठ भेल
मोबाइलक सड सेट भेल
कौवा सँ गेल बुधियार भेल
असमये यौवन बहार भेल
जे बूझल बत्तीसक बाद से ओकरा लेल एखने रसभरी।
छूटलै ठाम हेरयलै गाम आम लताम झरबेरी।।

-प्रमोद झा 'गोकुल', दीप, मधुबनी, (बिहार), फोन-9871779851

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर
पठाउ।

३.३.राज किशोर मिश्र-सांस्कृतिक क्षरण



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जेनरल मैनेजर (ई),
बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अरेर डीह, पो. अरेर हाट,
मधुबनी

सांस्कृतिक क्षरण

'जँ, संस्कार केँ अपनहि तो ड़ब,
ओकरा के दो सर बचा ओत?
संस्कृति -जड़ि जँ सूखत तऽ,
दो सर के , जल सँ, जुड़ा ओत?

जतऽ जेबा क हो अए ,अवश्य जा उ,
न्यूयार्क, पेरिस, लंडन,
कतहु रही , मुदा बि सरी नहि ,
विद्यापति , उदयन, मंडन।

बढ़ू, चढ़ू उन्नति क अकास,
फहरा उ ओतहु भा रतक ध्वजा ,

रहए ति रंगा सभ सँ ऊपर,
सभदेशक धुजा कैँ ,ओ रा जा ।

जे नहि करथि अपन संस्कृति क',
अपनहि मा न -दा न,
एहेन लो क पा बथि ने कत्तहु ,
अपनो लेल, सम्मा न।

नि ज सुप्रथा , सुपरम्परा ,
पि आबैछ , अस्मि ता कैँ पी यूष ,
हम सभ सजग रखबा र रहब,
तऽ,दुसत ने तखन को नो मनहूस।

नी कक' देखा उसि तऽ नी क बा त,
मुदा , खगतो बि नु,नुनहि ली पैँच,री न,
अपना बऽल पर स्वा भि मा न,
पो सी कि ए को नो बा त ही न?

नहि ऊघी , हृदयस्थ हो संस्का र,
जकरहि आभा सँ, चमकए कपा र।
बैसू, कतबो महग गा ड़ी मे ,
दुरा गमनक शो भा , महफा -कहा र।

वि देशी गी तक हो -हल्ला सँ,
नहि भेटत ओ मो नक सुकून,

लो कगी त, भा रती य संगी त,
अछि जा हि मे ,मा धुर्य-रस- गुण।

चूड़ा -दही क को न अपरा ध?
सो अदगर नहि की , पुडुकिआ, खजूर?
पैकिं ग जँ बढि आँ कए देल जा ए,
तऽ,बर्गर बेका रे घमंड मे चूर।

अपन भेख, आ अपन भा खा ,
सुंदर कतेक,नि ज परम्परा !
भा रत के मा टि क जे सुगंधि ,
भेटत ने,ता कू सगर धरा ।

पेरि स मे हो न्हि बरक चुमा ओन ,
पहि रा कऽ दो पटा -पा ग,
तऽ,खसत प्रति ष्टा नहि ओहि सँ,
ला गत ने कलंकक' दा ग।

अपन संस्कृति क करब जय तऽ,
अपनो हो बा हर ,हो एत जय,
खा म्ह ठी क जँ नहि रहतै तऽ,
कथी पर घर, कहू टि कतै?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

